उपोद्घात ।

इस पुस्तकके लिखनेके प्रयासमें मुख्य कारण सेठ बैजनाथ सरावगी (मालिक फर्म सेठ जोखीराम मूंगराज नं० १७३ हैरिसन रोड कलकत्ता) मंत्री प्राचीन श्रावकोद्धारिणी सभा कलकत्ता हैं। उनकी प्रेरणा हुई कि जो मसाला सर्कारी पुरातत्त्व विभागका यत्र तत्र फैला हुआ है उसको संग्रह करके यदि पुस्तकाकार प्रकाश कर दिया जावे तो जैन इतिहासके संकलनमें बहुत सहायता प्राप्त हो। उनकी इस योग्य सम्मतिके अनुसार बंगाल विहार उड़ीसाके और युक्त प्रांतके गजेटियरोंको देखकर इन दोनोंके स्मारक सन् १९२३ में प्रकाशित किये गए। अब यह बम्बई प्रांतका जैन स्मारक नीचे लिखी पुस्तकोंको मुख्यतासे देखकर लिखा गया है।

(1) Imperial Gazetteer of Bombay Presidency Vol. I and II (1909).

(2) Revised list of antiquarian remains in Bombay Presidency by Cousins (1897). A. S. of India Vol XVI.

(3) Report of Elura Brahm and Jain caves in Western India (1880) by Burgess A. S. of India Vol. V.

(4) Belgaum Gazetteer (1884) Vol. XXI.

(5) Dharwar „ Vol. XXII.

(6) Architecture of Ahmedabad by Hope Fergusson (1865).

(7)	Thana	Gazetteer		Vol. XIII
(8)	Bijapur	,,		Vol. XXI
(9)	Kolhapur	,,	(1886)	Vol. XXI
(10)	Sholapur	,,	(1884)	Vol. XX.
(11)	Nasik	,,	(1883)	Vol. XVI.
(12)	Baroda	,,	(1883)	Vol. III.
(13)	Rewakantha etc. G		(1880)	Vol. VI.
(14)	Ahmedabad G.		(1879)	Vol. III.
(15)	Khandesh G.		(1880)	Vol. XII.

इनके सिवाय और भी कुछ पुस्तकें देखी गईं। कुछ वर्णन दिगम्बर जैन डाइरेक्टरीसे लिया गया।

हमको पुस्तकोंकी प्राप्तिमें Imperial Library of Calcutta और Bombay Royal Asiatic Society Library Bombay से बहुत सहायता प्राप्त हुई है जिसके लिये हम उनके अति आभारी हैं। जो कुछ वर्णन हमने पढ़ा वही संग्रहकर इस पुस्तकमे दिया गया है। जहां कहीं हम स्वयं गए थे वहां अपना देखा हुआ वर्णन बढ़ा दिया है। जहां दि० जैन मंदिर व प्रतिमाका निश्चय हुआ वहां स्पष्ट खोल दिया है। जहां दिग० या श्वे० का नाम नहीं प्रगट हुआ वहां जहां जैसा मूलमें था वैसा जैन मंदिर व प्रतिमा लिखा गया है। इस बम्बई प्रांतके तीन विभाग हैं—गुजरात, मध्य और दक्षिण, जिनमेंसे गुजरात विभागमें अधिकांश श्वेताम्बर जैन मंदिर हैं तथा मध्य और दक्षिणमें मुख्यतासे दिगम्बर जैन मंदिर हैं ऐसा अनुमान होता है।

इस बम्बई प्रांतमे जैन राजाओंने अपनी अपनी वीरताका जयस्तम्भ बहुत कालतक स्थापित रक्खा, यह बात इस पुस्तकके

पढ़नेसे विदित होगी। जबसे जैन राजाओंने धर्मकी शरण छोड़ी और संसारवासनाके वशीभूत हुए तबसे ही उनकी श्रद्धा शिथिल हो गई। इस शिथिलताके अवसरको पाकर अजैन धर्मगुरुओंने उन्हें अपना अनुयायी बना लिया और उनहींके द्वारा बहुत कुछ जैन धर्मको हानि पहुंचाई गई—राजाके साथ बहुत प्रजा भी अजैन हो गई। उदाहरण—कलचूरी वंशज जैन राजा वज्जालका है जिसको सन् ११६१—११८४ के मध्यमें वासव मंत्रीने शिव धर्मी बनाया और लिंगायत पंथ चलाया। इससे लाखों जैनी लिंगायत हो गए देखो पृष्ट ११३॥ इस कारण बहुतसे जैन मंदिर शिव मंदिरमें बदल दिये गए जिसके उदाहरण पुस्तकके पढ़नेसे विदित होंगे। जैन राजागणोंने बहुतसे सुन्दर २ जैन मंदिर निर्मापित कराए और उनके लिये भूमि दान दी ऐसे शिलालेखोंका सकेत भी पुस्तकसे मिलेगा।

कादम्ब, कलचूरी, राष्ट्र व गंग तथा होसाल वंशी अनेक राजा जैन धर्मके माननेवाले हुए हैं। राष्ट्रकूट वंशी जैन राजाओंने गुजरात और दक्षिणमें बहुत प्रशंसनीय राज्य किया है। गुजरातमें सोलंकी वंशधारी मूलराजसे लेकर कर्णदेव (सन् ९६१से १२०४) तक जो राजा हुए हैं वे प्रायः सब ही जैन धर्मधारी थे इनमें सिद्ध-राज और कुमारपाल प्रसिद्ध हुए हैं। हैदराबादमें एलूरा गुफाके जैन मंदिर व बीजापुरमें ऐहोली और बादामीकी जैन गुफाएं दर्शनीय हैं—शिल्पकलाका भी उनमें बहुत महत्व है।

मुसल्मानोंने बल पकड़कर कितने जैन मंदिरोंको मसजिदोंमें बदला यह बात भी पुस्तकसे मालूम पड़ेगी।

हरएक इतिहासप्रेमी व्यक्तिको उचित है कि इस पुस्तकको आदिसे अंततक पढ़कर इससे लाभ उठावे और हमारे परिश्रमको सफल करे। तथा जहां कहीं हमारे लेखमें अज्ञान और प्रमादके वश भूल हो गई हो वहां विद्वान पाठकगण सुधार लेवें तथा हमें भी सूचना करनेकी कृपा करें। जैन-जातिके भारतीय इतिहास संकलनमें यह पुस्तक बहुत कुछ सहायता प्रदान करेगी।

इसका प्रकाश जैन धर्मकी प्रभावनामें सदा उत्साही सेठ माणिकचन्द पानाचन्द जौहरी (नं० ३४० जौहरी बाजार, बंबई) की आर्थिक सहायतासे हुआ है तथा प्रचारके हेतु लागत मात्र ही मूल्य रक्खा गया है। जैन धर्मका प्रेमी–

बम्बई,
ता० ७-११-१९२७. ब्र० सीतलप्रसाद।

बम्बई प्रान्तके प्राचीन जैन स्मारक
की
भूमिका ।

बम्बई भारतवर्षका सबसे बड़ा प्रान्त है । यथार्थमें वह कई प्रदेशोंका समूह है । उसके मुख्य विभाग ये हैं:—सिन्ध, गुजरात, काठियावाड़, खानदेश, बम्बई, कोंकन और कर्नाटक। इसमें लगभग एकलाख तेईसहजार वर्गमील स्थान है । यह प्रान्त जितना लम्बा चौड़ा है उतना महत्वपूर्ण भी है। जैसा वह आज देशके प्रान्तोंका सिरताज है वैसा ही प्राचीन इतिहासमे भी वह प्रसिद्ध रहा है। ईस्वीसन्‌से हजारों वर्ष पूर्व इस प्रान्तका बहुत दूर२के पूर्वी और पश्चिमी देशोंसे समुद्रद्वारा व्यापार होता था। भृगुकच्छ (भरोच), सोपारा, सूरत आदि बड़े प्राचीन बन्दर स्थान हैं। इनका उल्लेख आजसे अढ़ाई हजार वर्ष पुराने पाली ग्रंथोमे पाया जाता है । अधिकांश विदेशी शासक, जिन्होंने इस देशपर स्थायी प्रभाव डाला, समुद्र द्वारा इसी प्रान्तमें पहले पहल आये । सिकन्दर बादशाह सिन्धसे समुद्र द्वारा ही वापिस लौटा था। अरब लोगोने आठवी शताब्दिके प्रारम्भमें पहले पहल गुजरात पर चढ़ाई की थी । ग्यारहवी शताब्दिके प्रारम्भमें महमूद गजनवीकी गुजरातमें सोमनाथके मंदिरकी लूटसे ही हिंदू राजाओंकी सबसे भारी पराजय हुई और हिन्दू राज्यकी नींव उखड़ गई। सत्रहवी शताब्दिके प्रारम्भमें ईस्टइंडिया

बम्बई प्रांत और उसकी ऐतिहासिक महत्ता ।

कपनीने पहले पहल इसी प्रांतमें सूरत, अहमदाबाद और केम्बेमें अपने कारखाने खोले थे। मुगलोंके समयमें हिन्दूराष्ट्रको पुनर्जीवित करनेवाला शेर शिवाजी इसी प्रांतमें पैदा हुआ था और वर्तमानमें राष्ट्रीय भावोंको जागृत करनेका अधिकांश श्रेय बम्बई प्रांतको ही है। इस प्रकार भारतीय इतिहासकी कई एक धारायें इसी प्रांतसे प्रारम्भ होती हैं।

बम्बई प्रान्तसे जैन, हिंदू और बौद्ध धर्मोंका पौराणिक सम्बंध।

भारतवर्षके प्राचीनतम जैन, हिन्दू और बौद्धधर्मोंका इस प्रांतसे घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। हिंदुओंका परम पवित्र तीर्थक्षेत्र, कृष्ण महाराजकी द्वारिकापुरी इस प्रान्तमें है और वनवासके समय रामचन्द्रके अनेक लीला स्थान जन स्थान आदि नासिकके आसपास इसी प्रांतके अन्तर्गत है। महात्मा बुद्धने अपने पूर्व भवोंमें कई बार इस प्रांतके सुपारा आदि स्थानोंमें जन्म लिया था। ईसासे कई शताब्दी पूर्व इस प्रांतमें बौद्ध धर्मका प्रचार हो चुका था। यह धर्म यहासे अब लुप्त हो गया है पर उसकी कीर्ति अक्षय बनाये रखनेके लिये इस प्रांतमें सैकड़ों प्राचीन गुफायें आज भी विद्यमान हैं जो अपनी कारीगरीसे संसारको आश्चर्यान्वित कर रही हैं। अजन्ता, कन्हेरी, एलोरा, पीतलखोरा, भाजा आदि स्थानोंकी गुफायें तो संसारमें अपनी उपमा नहीं रखतीं। प्रति वर्ष दूरसे हजारों देशी और विदेशी यात्री इन स्थानोंकी भेंटकर अपने नेत्र सफल करते हैं। जैन धर्मका तो इस प्रान्तसे अत्यन्त प्राचीन और बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है

विहार प्रांतको छोड़ अन्य और किसी प्रांतमें बम्बईके बराबर जैनियोंके सिद्धक्षेत्र नहीं हैं। पुराणोंसे विदित होता है कि पूर्व-कालमें यह प्रांत करोड़ों जैन मुनियोंकी विहार भूमि थी। बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथके पांचों ही कल्याणक इसी प्रांतमें हुए हैं। उनका मुक्ति स्थान गिरनार आज अनेक जैन मंदिरोंसे अलंकृत हो रहा है जिसकी वन्दना कर प्रतिवर्ष सहस्रों यात्री अपने पापोंका क्षय करते हैं। यह वही ऊर्जयन्त पर्वत है जिसका सुन्दर वर्णन माघ कविने अपने शिशुपाल वध काव्यमें किया है। पावा-गिरि, तारंगा, शत्रुंजय वा पालीताणा, गजपंथा, मांगीतुंगी, कुंथल-गिरि क्षेत्रोंको करोड़ों मुनियोंने अपनी तपस्या और केवलज्ञानसे पवित्र किया है। ये स्थान हजारों वर्षोंसे जैनियों द्वारा पुजे जा रहे हैं। इनमेंसे अनेक स्थानोंके मंदिरोंकी कारीगरीने अपनी विलक्षणतासे भारतके कला कौशल सम्बंधी इतिहासमें चिरस्थायी स्थान प्राप्त कर लिया है।

इतिहासकालमें बंबई प्रांतका जैन धर्मसे सम्बन्ध।

जब कि जैन ग्रन्थोंमें इस प्रांतके विषयमें उपर्युक्त समाचार मिलते हैं तब यह प्रश्न उठाना निरर्थक है कि बंबई प्रांतसे जैनधर्मका संबन्ध कब प्रारंभ हुआ। निस्संन्देह यह संबन्ध इतिहासातीत कालसे चला आरहा है। भारतके प्राचीन इतिहासमें मौर्यसम्राट् चन्द्रगुप्तका काल बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस देशका वैज्ञानिक इतिहास उन्हींके समयसे प्रारंभ होता है। वैज्ञानिक इतिहासके उस प्रातःकालमें हम जैनाचार्य भद्रबाहुको एक भारी मुनिसंघ सहित उत्तरसे दक्षिण

भारतकी यात्रा करते हुए देखते हैं। उन्होंने मालवा प्रांतसे मैसूर प्रांतकी यात्रा की और श्रवणबेल्गुलमें अपना स्थान बनाया। उनके शिष्य चारों ओर धर्मप्रचार करने लगे। आगामी थोड़ी ही शताब्दियोंमें उन्होने दक्षिण भारतमें जैन धर्मका अच्छा प्रचार कर डाला, अनेक राजाओंको जैनधर्मी बनाया, अनेक द्राविण भाषाओंको साहित्यका रूप दिया, अनेक विद्यालय और औषधिशालाएं आदि स्थापित कराईं। बम्बई प्रांतके प्रायः सभी भागोंमें भद्रबाहुस्वामीके शिष्योंने विहार किया और जैनधर्मकी ज्योति पुनरुद्योतित की। ईसाकी पांचवीं छट्ठवीं शताब्दीमें भी, यहां अनेक प्रसिद्ध जैन मंदिर बने थे। इनमेंका एक मंदिर अबतक विद्यमान है। वह है ऐहोलका मेगुती मंदिर। इस मंदिरमें जो लेख मिला है वह शक सं० ५५६ का है। उससे बहुतसी ऐतिहासिक वार्ताएं विदित होती हैं। उसका लेखक जैन कवि रविकीर्ति अपनेको कालिदास और भारविकी कोटिमें रखता है। यह लेख इस पुस्तकमें दिया हुआ है।

बंबई प्रांतमें जैन धर्मकी उन्नति।

ईसाकी दशवीं शताब्दितक जैन धर्म दक्षिण भारतमें बराबर उत्तरोत्तर उन्नति करता गया। यहांके कदम्ब, रट्ठ, पल्लव, सन्तार, चालुक्य, राष्ट्रकूट, कलचुरि आदि राजवंश जैन धर्मावलम्बी व जैनधर्मके बड़े हितैषी थे। यह बात उस समयके अनेक शिलालेखोंसे सिद्ध है। इन्होने जैन कवियोंको आश्रय दिया और उत्साह दिलाया। उन्होंने अनेक धार्मिक वाद कराये जिनमें जैन नैयायिकोंने विजय-

श्री प्राप्तकर यश लूटा और धर्मप्रभावना की दिगंबर जैनियोंके बड़े२ आचार्य इन्हीं राजवंशोंसे संबन्ध रखते थे। पूज्यपाद, समंतभद्र, अकलंक, वीरसेन, जिनसेन, गुणभद्र, नेमिचन्द्र, सोमदेव, महावीर, इन्द्रनंदि, पुष्पदन्त आदि आचार्योंने इन्हीं राजाओंकी छत्रछायामें अपने काव्योंकी रचना की थी और बौद्ध और हिंदू वादियोंका गर्व खर्व किया था। इसी समृद्धिकालमें जैनियोंके अनेक मंदिर गुफायें आदि निर्मापित हुई।

बम्बई प्रांतमें जैनधर्मका ह्रास। इस प्रकार दशवी शताब्दी तक दक्षिण भारत और विशेषकर बम्बई प्रांतमें जैनधर्म ही मुख्य धर्म था। पर दशवीं शताब्दिके पश्चात् जैनधर्मका ह्रास प्रारम्भ हो गया और शैव, वैष्णव धर्मोंका प्रचार बढ़ा। एक एक करके जैन धर्मावलंबी राजा शैव होते गये। राष्ट्रकूट राजा जैनी थे और उनकी राजधानी मान्यखेटमें जैन कवियोंका खूब जमाव रहता था। ग्यारहवी शताब्दिके प्रारम्भमें राष्ट्रकूट वंशका पतन होगया और उसके साथ जैन धर्मका जोर भी घट गया। इसका पुष्पदंत कविने अपने महापुराणमें बहुत ही मार्मिक वर्णन किया है। यथा—

दीनानाथधनं सदाबहुधनं प्रोत्फुल्लवल्लीवनं।
मान्याखेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम्॥
धारानाथनरेन्द्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं।
क्वेदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्री पुष्पदन्तः कविः॥

अर्थात्–जो मान्यखेटपुर दीन और अनाथोंका धन था,

जहाँकी फूल वाटिकायें नित्य हरी भरी रहती थीं, जो अपनी शोभासे इन्द्रपुरीको भी जीतता था वही विद्वानोंका प्यारा पुर आज धाराधीशकी कोपाग्निसे दग्ध होगया। अब पुष्पदंत कवि कहां निवास करेंगे ?

उधर कल्चुरि राजा वज्जाल जैनधर्मको छोड शैव धर्मी हो गया और जैनियोंपर भारी अत्याचार करने लगा। यही हाल होयसल नरेश विष्णुवर्द्धनका हुआ, जिसने अनेक जैन मन्दिर बनवाकर और उनको भारी २ दान देकर जैनधर्मकी प्रभावना की थी वही उस धर्मका कट्टर शत्रु होगया। कहा जाता है कि कई राजा ओंने तो शैवधर्मी होकर हजारों जैन मुनियों और गृहस्थोंको कोल्हूमें पिरवा डाला। गुजरातके राजदरबारमें जैनियोंका प्रभाव कुछ अधिक समयतक रहा पर अतमें वहा भी उनका पतन होगया। इस प्रकार राजाश्रयसे विहीन होकर और राजाओं द्वारा सताये जाकर यह धर्म क्षीण हो गया। जिन स्थानोंमें लाखों जैनी थे वहा धीरे२ एक भी जैनी नहीं रहा। कई स्थानोंमें जैन मदिरों आदिके ध्वंस अवतक विद्यमान हैं पर कोसोंतक किसी जैनीका पता नहीं है। बेलगाव, धारवाड, बीजापुर आदि जिले जैन ध्वंसावशेषोंसे भरे पडे हैं। अनेक जैन मदिर शिवमदिरोंमें परिवर्तित कर लिये गये। कुछ कालोपरान्त जब मुसल्मानोंका जोर बढा तब और भी अवस्था खराब होगई। उन्होंने जैन मदिरोंको तोडकर मसजिदें बनवाईं। कई मसजिदोंमें जैन मन्दिरोंका मसाला अब भी पहचाननेमें आता है। बौद्धोंके समान जैनियोंने भी अनेक कलाकौशलसे पूर्ण गुफायें बनवाई थीं। प्राय जहा२ बौद्ध गुफायें हैं वहा थोड़ी बहुत जैन

गुफायें भी हैं। इनपरसे अब या तो जैनधर्मकी छाप ही उठ गई या जैनियोंने उनको सर्वथा भुला दिया है।

उपसंहार।

ऊपर हमने जो बातें कहीं है उन सबके प्रमाण प्रस्तुत पुस्तकमें पाये जांयगे। धर्महितैषी और जैन इतिहासके प्रेमियोंको इस पुस्तकका अच्छी तरह अवलोकन करना चाहिये इससे उनको अपना प्राचीन गौरव विदित होगा और अपने अधःपतनके कारण सूझ पड़ेंगे। उनको यह बात नोट करना चाहिये कि कहां२ पुराने जैन मंदिर व मंदिरोंके ध्वंसावशेष हैं, कहां२ जैनमंदिर शैवमंदिरों और मसजिदोंमें परिवर्तित कर लिये गये हैं और कहां२ जैन गुफायें अरक्षित अवस्थामें हैं। जिनको भ्रमण करनेका अवसर मिले वे उक्त स्थानोंको अवश्य देखें और तत्सम्बंधी समाचार प्रकाशित करावें। बम्बई प्रांतमें अनेक स्थानों जैसे पाटन, ईडर आदिमें बड़े२ प्राचीन शास्त्र भंडार हैं। इनका सूक्ष्म रीतिसे शोध होना आवश्यक है। भारतवर्षके जैनियोंकी लगभग आधी जन सख्या बम्बई प्रांतमें निवास करती है। इन भाइयोंका सर्वोपरि कर्तव्य है कि वे इस पुस्तककी सहायतासे अपने प्रांतकी धार्मिक प्राचीनताको समझें और जैनधर्मके पुनरुत्थानमें भाग लें। पुस्तकके लेखकका यही अभिप्राय है।

गांगई।
कार्तिक वदी ३०
वि. स. २४५१

हीरालाल
[हीरालाल जैन एम० ए० स० प्रोफेसर
किंग एडवर्ड कालेज अमरावती-बरार]

सूचीपत्र।

मुंबईप्रान्त
के
प्राचीन जैन स्मारक

(१) बंबईप्रात व नगर।

बम्बई प्रातकी चौहद्दी इस प्रकार है—

उत्तर—उत्तर पश्चिममें बलूचिस्तान, पंजाब, राजपूताना। पूर्वमें मध्यभारत, मध्यप्रात, बरार और हैदराबाद, निजाम। दक्षिणमें मदरास, मैसूर। पश्चिममें अरबसमुद्र।

बृटिश बम्बई सिंधु लेकर १२,२९८४ वर्ग मील है। देशी राज्य ६९७६१ वर्ग मील है।

इतिहास—सन् ई० से १००० वर्ष पूर्वतक पूर्वी आफ्रिकाके मार्गसे लाल समुद्रतक तथा ७९० वर्ष पूर्वतक फारसकी खाडीसे बेबिलनके साथ व्यापार होता था। सन् ई० के बहुत पहलेसे जैनधर्म दक्षिणमे भी फैला हुआ था।

सन ६०० से ७५० तक—चालुक्य राजाओंने दक्षिणमें राज्य किया, उस समय दक्षिणमें जैनधर्म बहुत उन्नतिमें था।

गुजरात शाखामें ७६०से ९८०तक गुजर और राष्ट्रकूटोंने साहित्यकी बहुत उन्नति की तथा खासकर जैनियोंको बहुत महत्त्व दिया। इनमें राजा अमोघवर्ष प्रथम (८१४–८७७) जैन साहित्य का खास संरक्षक हुआ है। इसकी उदारताने अरबोंके दिलोंमें बड़ा असर किया था वे इसे बल्लभराज कहते थे। राष्ट्रकूटकी दूसरी शाखा दक्षिणमें (८०० से १००८ तक) राज्य करती थी। सन ७७५ में पारसी लोग फारसकी खाड़ीसे व्यापारको आए। इन राजाओंने जो 'जैनधर्म, शैव, विष्णु तीनों धर्मोंपर माध्यस्थभाव रखते थे' इनका बहुत आदर किया। सन ९७३ में दक्षिणमें बलवा हुआ तब प्राचीन चालुक्य वंशीय तैलपने राष्ट्रकूटोंको दबाकर नया चालुक्य राज्य स्थापित किया व राज्यधानी (दक्षिणमें) कल्याणीमें रक्खी। इसके पीछे वैरप्पाने अपना राज्य दक्षिण गुजरातमें जमाया, परन्तु दूर दक्षिणमें शिलाहार लोग समुद्रतट-तक राज्य करते रहे।

दक्षिणमें ९७३ से ११९६ तक कल्याणीके चालुक्योंने राज्य किया। इन्होंने कांचीके चोलोंसे युद्ध किया तथा मालवाके परमारोंको व त्रिपुरा (जबलपुर) के कलचूरियोंको विजय किया। इसेविलका होयसाल वंश मैसूरमें राज्य करता रहा (११२०) व सिंघणके नीचे यादव दक्षिणके राज्य रहे (१२१२)।

बम्बई शहर—वर्तमान बम्बईमें सात भिन्न २ टापू शामिल हैं। जो राजा अशोकके समयमें अपरांत या उत्तर कोंकणका एक विभाग था। पीछे दूसरी शताब्दीमें यहां आनगदन लोग राज्य

करते थे। उसके पीछे मौर्य फिर चालुक्य फिर राष्ट्रकूटोंने राज्य किया। मौर्य और चालुक्योंके समयमें (सन् ४५० से ७५०) पुरीनगर या एलीफैन्टा टापू बम्बईबंदरमें मुख्य स्थान था। कोंकणके शिलाहार राजाओंके नीचे (८१० से १२६०) बम्बई प्रसिद्ध हुआ तथा बालकेश्वरका मंदिर बनाया गया था, परन्तु राजा भीमके समयमें यह नगर हुआ था यह देवगिरिके यादववंशमें था। इसने महिकावती (महिम) को मुख्यस्थान बनाया था। जिसपर अलाउद्दीन खिलजीने सन् १२९४ में हमला किया। यहां हिन्दू-ओंका राज्य १३४८ तक रहा।

गुजरात विभाग।

(२) अहमदाबाद जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—पश्चिम और दक्षिण, काठियावाड़। उत्तर—बड़ौदा। उत्तर पूर्व—महीकाठा। पूर्व—बालसिनोर और खेड़ा। दक्षिण पूर्व—कम्बेकी खाडी। यह ३८१६ वर्गमील है।

मुख्य स्थान

(१) अहमदाबाद नगर—जब मुसल्मान लोगोंने इस नगर पर अधिकार किया तब उन्होंने जैनियोंके ढगके मकान बनाए। उनकी मसजिदें भी प्राय जैन रीतिकी हैं। जेम्स फार्गुसन साहब लिखते हैं —

Mohamedans had here forced themselves upon the most civilised and the most essentially building race at that time in India, and the Chalukyas Conquered their conquerors, and forced them to adopt forms and ornaments which were superior to any the invaders knew or could have introduced. The result is in style which combines all the elegance and finish of Jain or Chalukyan art with a certain largeness of conception, which the Hindu never quite attained, but which is characteristic of people who at this time were subjecting all India to their sway (R. A S J 1900 & Abm. Survey 1896 Vol VI)

भावार्थ—भारतमें उस समय एक बहुत ही सभ्य और बहुत ही उपयोगी मकान निर्माण करानेवाली जाति पर मुसल्मानोंने जब अधिकार किया तब चालुक्य लोगोंने अपने जीतनेवालोंको भी जीत लिया अर्थात् उनपर यह असर डाला कि वे उन रीतियोंको

व भूषणोंको स्वीकार करें जो सबसे बढिया थे व जिनका इन आक्रमणकर्ताओंको ज्ञान न था। इसका फल यह है कि मकानोंमें जैन या चालुक्यकलाकी सुन्दरता समागई। उसमे कुछ अधिकता की गई जिसको हिन्दू कभी नहीं पासके थे, परन्तु जो उन लोगोंके व्यवहारमे थी जो इस समय सर्व भारतको अपने अधिकारमें कर रहे थे।" नोट—इससे जैनियोंके महत्त्वका अच्छा ज्ञान होता है।

इस नगरके बाहर रखियाल ग्राममें मलिक शाबानकी बडी कब्र है उसमें जो खंभे व नकासी किये हुए पत्थर भीतर चबूतरोंके बनानेमें लगे हैं वे सब कुछ जैन व कुछ हिन्दू मदिरोंसे लिये हुए मालूम होते हैं (A S of India W. for. 1921) दिहली और दर्यापुर दरवाजोंके बीचमें फूटी मसजिद है। यह एक बडी पत्थरकी मसजिद है जिसमें ९ गुम्बज हैं। सामने खुली हैं इसमें २२ खभे हैं। इनमेंसे कुछ जैन कुछ हिन्दू मदिरोंके हैं। इस नगरमें दर्शनीय जैन मदिर हाथीसिंहका है (बना सन १८४८) व चिंतामणिका जैन मदिर है जो नगरसे पूर्व १॥ मील सरसपुरमें है। इसको शांतिदासने नौ लाख रुपयेसे सन् १६३८ में बनाया था। इसको बादशाह ओरङ्गजेबने नष्ट किया। अन भुला दिया गया है। (A S of India Vol XVI Cousins) इसी शांतिदासजीके मदिरके सम्बधमें जो 'रेलवे स्टेशनसे बाहर है' अहमदाबाद गजेटियर (जिल्द ४ छपा १८७९) में है कि यह ऐतिहासिक वस्तु है। यह नगरमे सबसे सुन्दर रचनाओंमें एक थी। यह मदिर एक बडे हातेके मध्यमें था। हातेके चारों तरफ एक पत्थरकी ऊंची दीवाल थी जिसमें सब तरफ छोटे २ मदिर थे।

इस हरएकमें नग्न मूर्तियां कृष्ण या श्वेत समममेरकी थीं। द्वारके सामने दो बडे आकारके काले सगमर्मरके हाथी थे इनमेंसे एकपर शांतिदासकी मूर्ति बनी थी। १६४४ से ४६ के मध्यमें औरङ्गजेबने मंदिरको नष्ट किया, मूर्तियोंको तोड डाला व इस मंदिरको मसजिदमें बदल दिया। इस बातसे दुःखित होकर जैनियोंने बादशाह शाहजहांसे प्रार्थना की जो औरङ्गजेबके इस कृत्यसे बहुत अप्रसन्न हुआ, तब बादशाहने आज्ञा दी कि इसको मंदिरकी दशामें ही पलट दिया जावे। अब भी वहां जैन मूर्तियें मिलती हैं यद्यपि उनकी नाक भंग है। भीतोंपर मनुष्य व पशुओंके चित्र हैं। शांतिदासने खास मूर्तिको वहांसे बचाकर नगरमें रक्खा और इसलिये जौहरीवाडामें एक दूसरा मंदिर बनवाया।

अहमदाबाद जैनियोंका मुख्य स्थान है। १२० जैन मंदिरोंमें अधिक हैं जिनमें हाथीसिंहके मंदिरके सिवाय १८ प्रसिद्ध हैं, १२ मंदिर दर्यापुर, ४ खादीजत व २ जमालपुरमें हैं।

"Arechetcture of Ahmedabad by Hope and Fergusson 1866" में नीचेका कथन है। पृष्ठ ६९ में है कि—

ईसाकी प्रथम शताब्दीसे अबतक गुजरातवासी भारतवर्षभरकी जातियोंमेंसे एक बहुत उपयोगी, व्यापारी और समृद्धिशाली समाज हैं। कृषि कर्ममें भी वे इतने ही परिश्रमी हैं, जितने ही वे युद्धमें वीर हैं तथा स्वतन्त्रता स्थमेंमें देशभक्त हैं। उनकी चित्रकला भी सदा पवित्र और सुन्दर रही है। तथा इन लोगोंका धर्म भी जैन धर्म है। यह सच है कि इस प्रांतमें विष्णु और शिवकी पूजाकी भी अज्ञानता नहीं रही है तथा [illegible]

पूर्वीय सीमामें स्थापित रहा है, परंतु बौद्ध गुफाएं इस प्रांतकी सीमामें ही हैं। यह धर्म प्रांतके भीतर नहीं घुसा। यह मालूम नहीं कि जैनधर्म गुजरातमें पैदा हुआ या कहींसे आया, किन्तु जहांतक हमारा ज्ञान जाता है यह प्रांत इस धर्मका बहुत उपयोगी घर व मुख्यस्थान रहा है। भारतमें जितनी धर्मोंकी शकलें हैं उन सबमें शायद यह जैनधर्म सबसे पवित्र और उत्तम है

"Of the Indian forms of religion it is, on the whole, perhaps the purest and the best"

यह धर्म उस स्थूल व अमाननीय अन्धश्रद्धासे दूर है जो बहुधा शिव व विष्णुकी पूजाके साथ रहती है और न यह बहुत अधिक पुजारी साधुओंसे दबा हुआ है जैसा कि बौद्धधर्म मालूम होता है। न इसका मुकाबला वेदांतके ब्राह्मणधर्मसे होसक्ता है जिसको आर्य लोग अपने साथ भारतमें लाए। यह धर्म जैसा सुंदर व पवित्र है वैसा दूसरा नहीं मालूम होता है।

There seems none other so elegant and pure.

जबसे मुसलमानोंने गुजरातपर अधिकार किया उन्होंने इसके उखाड़नेकी शक्तिभर चेष्टा की, किन्तु यह बराबर जीता रहा तथा इसके माननेवाले अब भी बहुत हैं। जैनियोंकी चित्र-कला व शिल्पने अपनी सुन्दरताके कारण मुसल्मानोंपर असरडाला जिससे उन्होंने इसको स्वीकार किया। अहमदाबादमें बहुतसी मुसल्मानोंकी इमारतोंमें जैन चित्रकला झलकती है।

अहमदाबादका प्राचीन नाम कर्णावती था। अहमदशाहने सन् १४१२ में इसका नाम अहमदाबाद रक्खा। उस समय यहां

जैन शिल्पकला खूब फैली हुई थी। इसी समय ड॰ हिलवाड़ा नगर भी बहुत समृद्धिशाली था जो मंदिरोंसे व दूसरी बड़ी २ इमारतोंसे पूर्ण था।

इतिहास—यह है कि यह करणवती नगरी ग्यारहवीं शताब्दीमें स्थापित हुई थी। वल्लभीका राजा शिलादित्य था जिसने पांचवीं शताब्दीमें जैनधर्म धारण किया। जैन लोग बौद्धोंसे पहले की एक बहुत प्राचीन जाति है। इन्होंने अपना सिक्का गुजरात और मैसूरमें अच्छी तरह जमाए रक्खा। अब भी इन लोगोंके हाथमें भारतका बहुत व्यापार व बहुत धन है। अपने मंदिरोंकी सुन्दरता व मूल्यताके लिये ये लोग प्रसिद्ध हैं। मैसूर और धाडवाड़में भी इनकी बहुत संख्या है। वल्लभीके पतन होनेपर पचासुरके राजा जयशेखरको दक्षिणके सोलंकी राजपूतोंने हरा दिया तब उसने अपनी गर्भस्था स्त्री रूपसुन्दरीको उसके भाई सूरपालके साथ जंगलमें भेज दिया। वहां उसके पुत्र हुआ जिसको उसकी माता एक जैन साधुके पास लेगई। साधुने बालकको भाग्यवान जाना तब उसका नाम वनराज रक्खा गया। सन् ७४६ में जब वह ५० वर्षका हुआ तब उसने सोलंकीको भगा दिया और अनहिल वाडा नगरकी नींव डाली। उसका मुख्य मंत्री चम्पा हुआ। ६०० वर्ष तक गुजरातका राज्यस्थान अनहिलवाड़ा रहा। वनराजने आफ्रिका व अरबसे व्यापार चलाया व उसने बहुतसे मंदिर बनवाए। इसके पीछे इसके पुत्र योगराज, फिर क्षेमराज, भोगराज, श्री वैर सिंहने राज्य किया, फिर रत्नादित्य राजा हुआ, फिर सामंतसिंह हुए। इसने मूलराज सोलंकीको गोद लिया जो सन् ई॰ ९४२

में राजा हुआ। उसका पुत्र चामुण्ड (सन् ९९७) व उसका पोता दोनों साधु होगए। दुर्लभका पुत्र भींडर प्रथम सन् १०२४ में राज्यपर बैठे, सन् १०७२ में वह और उसका बड़ा पुत्र क्षेमराज साधु होगए तब छोटे पुत्र करणने राज्य किया। उसने गिरनार पर्वतपर एक सुन्दर जैनमंदिर बनवाया व इसीने करणव्रतीनगरी स्थापित की। इसके पीछे इसके पुत्र सिद्धराज (सन् १०९४) फिर कुमारपालने सन् ११४३ में राज्य किया।

अहमदाबाद इतना बड़ा नगर था कि एक विदेशी यात्री Mandelslao मैन्डेस्लाफ लिखता है कि जिसने सन् १६३८ में अहमदाबादको देखा था। "एसियाकी ऐसी कोई जाति व ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो इस नगरमें न दिखलाई पड़े। यहां २० लाख आदमी हैं तथा ३० मीलके घेरेमें बसा हुआ है" पृ० ७६ में– मुसलमानी मसजिदोंमें जैन मंदिरोंका बहुतसा मसाला लगाया गया है। अहमदशाहकी मसजिदमें भीतर जैन गुम्बज है और बहुतसा मसाला किसी मंदिरका है। हैबतखांकी मसजिदमें भी भीतर जैन गुम्बज है। मह्मद आलमकी मसजिदमें जैनियोंके खंभे हैं। जिस समय उदयपुरके खुम्बोरानाने सादरामें जैन मंदिर बनवाया था उसी समय अहमदशाहने जुम्मामसजिद बनवाई थी। जैसे उस जैन मंदिरमें २४० खंभ हैं वैसे ही इस मसजिदमें हैं।

धन्दूका–भाधर नदीके दाहने तटपर, अहमदाबादसे उत्तर पश्चिम ६२ मील। यह श्वे० जैनियोंके आचार्य हेमचन्द्रका जन्म स्थान है। हेमचन्द जातिके मोड़वनिये थे। इनके घरमें राजा कुमारपालने एक मंदिर बनवा दिया था जिसको विहार कहते हैं।

धोलका—अहमदाबादसे पश्चिम दक्षिण २२ मील। यहां प्रसिद्ध राजा सिद्धराजजी (सन् १०९४—११४३) की माता व करण राजाकी विधवा मीनलदेवीने ११ वीं शताब्दीमें एक झील मालव झील नामकी ४०० गज व्यासकी बनवाई थी। यह स्थान १३वीं शताब्दीमें वाघेल वंशके स्थापक वीरधवलके अधिकारमें था।

गोधाद्वीप—काठियावाड़में दक्षिण पूर्व ४० मील। बम्बईसे १९३ मील। यह गुंडीगढ़का एक बन्दर है जो वल्लभीराज्य (सन् ४८०से ७२०) का एक उपयोगी स्थान रहा है। इस नगरके निवासी बहुत बढ़िया मल्लाह भारतमें माने जाते थे। यहा जहाजों द्वारा बहुतसा माल आता जाता था। यह धन्दूका तालुकामें है।

(३) खेड़ा जिला।

इसकी चौहदी इस प्रकार है। उत्तरमें अहमदावाद, महीकाठा। पश्चिममें अहमदावाद, खंभात। दक्षिण पूर्वमें नदी माही और वडौधा।

यहां १५७५ वर्गमील स्थान है।

खेडा—अहमदावादसे दक्षिण २० मील यह बहुत ही प्राचीन नगर है। यह प्रसिद्ध है कि इसका नाम चक्रवती नगरी था। इसके राजा मोरधजको पांडवोंने हरा दिया था। कैरासे २ मील सुलड और रतनपुर इस प्राचीन नगरके भाग हैं। यहां सन् १८३२में मोरियां खोदी गई थी तब बहुतसे सिक्के व बहुतसी संगमर्मरकी मूर्तियें पाई गई थी।

Brigg's cities of Gujarashtra 195-196.

इन सिक्कोंमें कैराका नाम खेद्दा ५वी शताब्दीमें प्रसिद्ध था। देखो सिक्का

Cunn ancient Geography India I 316 The ins. in J R. A. S. n. S I 270-277.

१८३२से १०० वर्ष पहले यह एक बडा नगर था। यही राजा शिलादित्य वल्लभीके विजयिताका जन्मस्थान था (रासमाला न १७–२०–२४) वल्लभीके कई राजाओके नाम शिलादित्य थे। जिनकी मिती सन् ४२१ से ६२७ तक है।

यह कैरा जिला अनहिलवाड राज्यमे शामिल था। १४ वी शताब्दीमें मुसलमान राजाओने अधिकार लिया।

यहांकी कोटमें थोडी दूर एक जैन मंदिर है जिसमे बहुत सुन्दर काली लकडीपर चित्रकारी खुदी हुई है।

कपडवंज—कैरासे उत्तर पूर्व ३६ मील यह बहुत प्राचीन स्थान है। वर्तमान नगरमे ९०० से ८०० वर्ष पुरानी इमारतें हैं। कोटकी भीतके पास एक बहुत ही प्राचीन नगरका स्थान है। इसका असली नाम कपरपुर था। यहां एक सुन्दर जैन मंदिर है इसमें १॥ लाखकी लागत लगी है।

मतार—ताल्लुका मतार। कैरासे दक्षिण पश्चिम ४ मील। यहां एक सुन्दर जैन मंदिर है जो ४ लाखसे सन् १७९७ में बनाया गया था।

महुधा—नडियादमें एक नगर। इसको २००० वर्ष हुए एक हिन्दू राजकुमार मानधाताने बसाया था।

मेहमदाबाद—स्टेशन अहमदाबादसे दक्षिण १८ मील। सन् १६३८ मे एक छोटा नगर था। इसके निवासी हिन्दू सूत कातनेवाले व बड़े व्यापारी थे। १६६६ में यह गुजरात व निकटके स्थानोंको बहुतसा सूत भेजता था।

नडियाद—यह १६३८में बहुत बडा नगर था। बहुतसा रुईका कपड़ा बनता था। सन् १७७२मे यहांके लोग महीन कपडा बनाने और पहनने थे। यहां भी जैनमंदिर है।

उमरेठ—ताल्लुका आनन्द। आनन्दसे उत्तर पूर्व १४ मील नगरके पास एक बावडी ९०० वर्षकी प्राचीन है जिसमें ९ खन व १०९ सीढ़िया हैं। इसको अनहिलवाड़ाके राजा सिद्धराजने बनवाई थी।

(४) खंभातराज्य।

खेड़ाजिलेके पास खंभातराज्य है--यहां एक जम्मा मसजिद है जिसको सन् १३२९में महम्मदशाह बिन तुघलकने बनवाई थी। इसमें ४४ बड़े व ६८ छोटे गुम्बज व बहुतसे खंभे हैं। ये सब खंभे जैन मंदिरोंसे लाए गए हैं। यहां प्रसिद्ध जैन मंदिर हैं। जैसे (१) श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथका दंडरवाड़ामें जो सन १५३८में बनाया गयाथा। इसमें दो भाग हैं १ जमीनके नीचे, एक ऊपर। (२) श्री आदीश्वर मंदिर जिसको तेजपालने सन् १६०९में बनाया था। (३) श्री नेमिनाथ मंदिर नगरसे ३ मील पर येरलावाड़ामें। यह एक प्राचीन नगर है। भीमदेव द्वि० के राज्यमें (सन् १२४१) वस्तुपाल जो प्रसिद्ध जैन मंत्री भीमदेवके अधिकारी लवणप्रसाद और उसके पुत्र रानावीर धवलका था कुछ दिन खंभातका गवर्नर था उसने यहां जैनियोंके मंदिर पुस्तक भंडारादि बहुत बनाए। यह बात उसके मित्र पुरोहित सोनेश्वरने कीर्तिकौमदीमें लिखी है तथा जैन भंडारोंमें जो १३ वीं शताब्दीके प्रथम अर्द्धकालका पुरानासे पुराना लिखित ग्रंथ मिलता है उससे सिद्ध है। इन मंदिरोंमेंसे कुछोंको सन् १३०८ मे तोड़कर जामा मसजिद बनाई गई थी।

(५) पंचमहाल ज़िला।

इसके दो भाग हैं। पश्चिमीय भागकी चौहद्दी है। उत्तरमें राज्य लूनवाड़ा, सँथ व संजीली, पूर्वमें बारिया राज्य, दक्षिणमें बड़ौधा, पश्चिममें बड़ौधा राज्य, पांट महवास और माही नदी। पूर्वीय भागकी चौहद्दी है। उत्तरमें चिलहारी, व कुशलगढ़ राज्य, पूर्वमें पश्चिम मालवा, दक्षिणमें पश्चिम मालवा, पश्चिममें सुन्थ, संजीली, बारिया राज्य।

इसमें १६०६ वर्ग मील स्थान है—

यहां पावागढ़ पहाड़ बहुत प्रसिद्ध जैनियोंका तीर्थ है—यहांसे ध्यान करके इस कल्पकालमें श्री रामचन्द्रजीके पुत्र लवकुश तथा पांच क्रोड मुनि मोक्ष पधारे हैं। पर्वतपर प्राचीन जैन मंदिर हैं। नीचे भी मंदिर व धर्मशालाएं हैं।

इसका आगम प्रमाण यह है—

गाथा—

रामसुआ वेण्णि जणा, लाडणरिंदाण पंचकोडीओ।
पावागिरिवरसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ ५ ॥

(निर्वाणकांड प्राकृत)

दोहा—रामचन्द्रके सुत द्वेवीर, लाडनरिंद आदि गुणधीर।
पांच कोड़ि मुनि मुक्ति मंझार, पावागिरि बंदों निरधार ॥६॥

(निर्वाणकांड भगवतीदासकृत रचा सं० १७४१।)

यह गोधरासे दक्षिण २५ मील व बड़ौधासे पूर्व २९ मील है। यह पहाड़ २६ मीलके घेरेमें है। समुद्र तटसे २५०० फुट ऊंचा

है। चाद नामका कवि अलहिन्वाडाके भीडर प्रथमके वर्णनमें (१०२२-१०७२) पावागढके राजा रामगौर, तुआरका नाम लेता है। सन् १३००में चौहान राजपूतोंके हाथमें था 'जो मेवाडके रणथामोरसे भागकर आए थे' (१२९९-१३००)। सन् १४८४ तक इनके हाथमें रहा फिर सुल्तान महमूद बेगडने इस तरह कबजा किया कि एक दफे पावापति श्री जयसिहदेव पाताई रावल नौराटीमे अपनी राज्यधानी की स्त्रियोका नृत्य देख रहे थे उस समय उन्होने एक सुन्दर स्त्रीका हाथ पकड लिया, वह नाराज हो गई और यह वचन कहा कि तुम्हारा राज्य शीघ्र ही चला जायगा। थोडे दिन पीछे चापानेरके ब्राह्मण जवालवने अहमदाबादके सुल्तान महमूदसे मुलाकात की और चढाई करवादी। जयसिंहने वीरता दिखाई, अतमें सधि हो गई, जावा जयसिंहका मत्री बन गया। सन् १५३५ में मुगल बादशाह हुमायूने कबजा किया (देखो अकबर नामा)। सन् १७२७ मे कृष्णाजीने ले लिया। सन् १७६१ व १७७० मे महाराज सिंधियाने कबजा किया। सन् १८५३ में बृटिशके हाथमें आया। इस पावागढके नीचे उत्तर पूर्वकी ओर राजधा चापानेरके भग्न स्थान देखने योग्य है और दक्षिणकी तरफ गुफाए हैं जहा थोडे दिन पहले तक हिंदू साधु रहते थे। पर्वतपर पत्थरकी दीवाल महाराज सिंधियाने बनवाई थी। फाटकके आगे चक्कर खास मार्गसे १०० गज दाहनेको जाकर १ स्तम्भ है जो १०० फुट गहरी है, कोनेमें पत्थरकी भीतमें घिरा हुआ एक छोटासा कमरा है जो बिल्कुल बद है। भीतरे छिद्रोंमे एक प्रतिमा दिखलाई पडती है इसके

लिये यहां एक दन्तकथा है कि एक राजपूत रानीको यहां जीता गाड दिया गया था। इस पहाड़ीके कोनेपर एक कब्र है उसके आगे सात महलके खंड हैं। इस सात खनके महलको चम्पावती या चम्पारानी या कनेर जहवरीना महल कहते हैं। ऊपरके चार खन गिर गए हैं फिर पुरानी दीवाल है फिर किलेके भग्न हैं फिर जुल्न बुदन द्वार है। ऊपर नागरहवेली है। सदनशाह द्वारसे १०० गज ऊपर मांची हवेली है। यह लकड़ीका मकान है जहां सिंधियाका सेनापति रहता था। पासमें पुरानी माची हवेलीके भग्नांश हैं, एक तालाब है, १ खंडित मसजिद है, ९ कूप हैं जिनमेंसे ४ नष्ट हैं १में बहुत अच्छा पानी है। माची हवेलीसे पाव मील जाकर मरई कोठारका दरवाजा है। इसमें ३ गुम्बज हैं। दक्षिण पूर्वकी तरफ १०००फुटकी उंचाई पर भग्न द्वार है, पुराने मकान हैं, एक भीत है। यहीं जयसिंहदेव अंतिम पाताई रावलका महल है (सन् १४८४)। कोठार दरवाजेसे पाव मील जाकर पाँट। पुल आता है फिर पाव मील चलकर ऊपरी भागके नीचे पहुंचना होता है। फिर १०० गज चलकर तारा द्वारपर जा फिर १०० गज चल एक इमारत आती है जिसके दो द्वार हैं। नगारखानाके सामने सूरज द्वार है। इसको इंग्रेजोंने सन् १८०३ में नष्ट किया था, पीछे सिंधियोंने बनवाया। बाहरी द्वारमें जैन मंदिरोंके पत्थर लगे हैं। नगारखाना द्वारके भीतर कालका माताके मंदिर तक २२६ सीढ़ियां हैं (इनमें दि० जैन प्रतिमाएं भी चस्पा हैं) जिनको महाराज सिंधियाने बनवायी थीं। कालका माताका मंदिर करीब १५० वर्षका है। पासमें ही मुसल्मान सदन पीरकी कब्र है।

पहाड़ीकी पश्चिम ओर सात नवलखा कोठार हैं जिनपर गुम्बज २१ फुट वर्ग है। उत्तरकी तरफ बहुतसे तालाब हैं और छोटे२ सुन्दर नक्काशीदार जैन मंदिर हैं।

यहां दिगम्बर जैनी प्रतिवर्ष अच्छी संख्यामें यात्रा करने आते हैं। प्रबन्धक सेठ लालचन्द काहानदास नवीपोल बड़ौदा हैं। पर्वतके नीचे भी दि० जैन मंदिर व धर्मशालाएं हैं।

चांपानेर—पावागढ़ पर्वतके नीचे बसा हुआ था। इसको *अनहिलवाडाके बनराज (सन् ७४६–८०६) के राज्यमें एक चंपा* बनियेने बसाया था। पीछे १५३६ में बहादुरशाहके मरण तक यह गुजरातकी राज्यधानी रहा। यहां हलाल सिकन्दर शाहका मक़बरा (सन् १५३६ का) पुरानी इमारत है।

देसार—हलोलमें सोनीपुरके पास। यहां पुराना पत्थरका महादेवजीका मंदिर है उसकी बगलोमें नीचेसे ऊपर तक जो सुन्दर खुदाई है वह पुराने गुजराती ब्राह्मण व जैन इमारतोंसे लगाई गई है।

दाहोद—गोधरासे ४३ मील प्राचीन नगर था। सन् १४१९ तक चाहरिया राजपूतोंके पास रहा। सुलतान अहमदने डूंगर रानाको हराकर ले लिया। सन् १५७३में बादशाह अकबर स्वामी हुए। सन् १७५०में सिंधियाके पास आया। यहां गवर्नर रहता था व १७८५ में एक बडा नगर था, सन् १८४३ में इंग्रेजोंने कब्जा किया। यहां औरंगजेब बादशाहके जन्मके सन्मानमें बादशाह शाहजहांने सन १६१९में कारवा सराय बनवाई थी।

गोद्रा—पंचमहालका मुख्य नगर रेल्वे जंक्शन है। नडीया और दाहोदके बीचमें है। यहां दोरा भागोलके रास्तेके ऊपर घेल्ली-माता नामसे प्रसिद्ध देवी है। मंदिरके पास पीपलका वृक्ष है। जिसको घेलीमाता मानते हैं यह श्री पार्श्वनाथ भगवानकी कायो-त्सर्ग नग्न मूर्ति है अखण्डित है। सर्पके फण भी हैं। प्रतिमा बहुत ही सुन्दर व तेजस्वी है। तीन प्रतिमा पीपल वृक्षके नीचे पड़ी हैं वे भी कायोत्सर्ग जिन प्रतिमा हैं। यहांसे कुछ पाषाण रेल्वेके उस तरफ सिंदुरीमाताके देवलके पास गए हैं वहां भी भूमिपर नग्न जैन प्रतिमा विराजित हैं। घेलीमाताके पीछे प्राचीन सरोवर है। उसकी सीढियोंमें जिन मंदिरके पत्थर लगे हैं। इस सरोवरके पास जूनी जुम्मा मसजिद है। यह मसजिद वास्तवमें जैन मंदिर तोड़कर बनाई गई है इसमें संदेह नहीं। यह बहुत पुरानी मसजिद है। (लेखक गोकुलदास नानजीभाई गांधी वीर-ग्राम। अहमदाबाद ता० १०-१०-१९२४।)

(६) भरुच जिला।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें माही नदी, पूर्वमें वड़ौधा और राजपीपला, दक्षिणमें कीन नदी, पश्चिममें खंभात खाड़ी। यहां १४६७ वर्ग मील स्थान है। इसका प्राचीन नाम भृगुकच्छ है। इसका इतिहास यह है कि यह एक दफे मौर्य्य राज्यका भाग था जिसका प्रसिद्ध राजा महाराज चन्द्रगुप्त (नोट—जो जैन धर्मी था) यहां शुक्लतीर्थपर आकर वास करता था। मौर्योंसे शाहोंके पास गया जिनको पश्चिमीय क्षत्रप कहते थे फिर गुर्जर और राजपूतोंने फिर कल्याणके चालुक्योंने बादमें राष्ट्रकूटोंने आधिपत्य किया। फिर यह अनहिलवाड़ाके राज्यमें शामिल होगया। पीछे सन् १२९८ में मुसल्मानोंने कब्जा किया।

(१) भरुच शहर—यहां जैन, हिंदू, व मुसल्मानोंकी कारीगरीकी बढ़िया इमारतें शहरमें मिलेंगी, उनमें सबसे प्रसिद्ध जम्मामसजिद है जो जैन रीतिसे चित्रित और शोभित की गई है इसमें जो खम्भे हैं वे सब प्राचीन जैन और हिन्दू मंदिरोंसे लिए गए हैं। तथा जहां यह मसजिद है वहांपर पहले जैन मंदिर था। इसमें ७२ खंभे नक्काशीदार हैं। गुम्बज और उमकी पत्थरकी छतें जैनियोंके ढंगकी हैं।

यहां नीचे लिखे प्रसिद्ध जैन मंदिर हैं—

(१) श्री आदिश्वर भगवानका मंदिर वीजलपुर पट्टीमें यह सन् १८६९ में बना था। फर्श संगमर्मरका है।

(२) श्री मुनि सुव्रत भगवानका मंदिर पाषाणका जिसमें नक्काशी व चित्रकारी सन् १८७२ में की गई थी।

(३) एक देराशर भूमिके भीतर उंडी बखारमें।

(४) श्री मालपोलमें मंदिर जिसमें मूर्ति संवत १६६४ की है।

(५) श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर जो १८४९ में बना।

(६) श्री आदिश्वर जैन मंदिर जो संवत १४४३ में बना।

भरुच भारतके सबसे प्राचीन बंदरोंमेंसे एक है। १८०० वर्ष हुए यह व्यापारका मुख्य स्थान था। तब भारतसे और पश्चिमीय एसियाके बंदरोंसे व्यापार चलता था। इतने कालके पीछे भी इसने अपना गौरव बनाए रक्खा। १७ सत्रहवीं शताब्दीमें यहांसे जहाज पूर्वमें जावा सुमात्राको और पश्चिममें अदन और लाल समुद्रको जाते थे।

कपड़ा—प्राचीनकालमें यहासे मुख्य बाहर जानेवाली वस्तुओंमें कपड़ा था। सत्रहवीं शताब्दीमें जब पहले पहले इंग्रेज और डच लोग गुजरातमें बसे तब यहांके कपड़ा बनानेवालोंकी प्रसिद्धिके कारण उन लोगोंने भरुचमें अपनी कोठियें स्थापित कीं। यहांकी तनजेबें प्रसिद्ध थीं। सत्रहवीं शदीके मध्यमें यहां इतना बढ़िया महीन सूतका कपड़ा बनता था जैसा दुनियांके किसी हिस्सेमें नहीं बनता था बंगालको भी मात कर दिया था।

(about middle of 17 th Century district is said to have produced more manufactures of those of the finest fabrics than the same extent of country in any part of the world not excepting Bengal.)

यहां पर श्री नेमिनाथजीके दि० जैन मंदिरमें गोलश्रृंगार वंशधारी दि० जैन ब्रह्मचारी अजितने संस्कृत हनूमान चरित्र रचा श्लोक २००० सर्ग ११ इसकी एक प्राचीन प्रति लिखित

इटावा (युक्तप्रांत) के पंसारी टोलाके मंदिरमें लाला विलासरायके संस्कृत ग्रन्थ भण्डारमें है जो संवत् १६६९की लिखित है उसकी प्रशस्तिमें ये वाक्य है " इदं श्री शैलराजस्य चरितं दुरितापहं रचितं भृगुकच्छे च श्री नेमिजिन मंदिरे। गोलश्रृंगारवंशेनभस्य दिनमणि वीर सिंहो विपश्चित्। भावी पृथ्वी प्रतीला तनुरुह विदितो ब्रह्म दीक्षां सुतोऽभूत्। तेनोच्चैरेष ग्रन्थः कृति इति सुतरां शैलराजस्य सूरेः। श्रीविद्यानंदि देशात् सुकृत विधिवशात् सर्वसिद्धि प्रसिद्धे॥ भाव यह है कि वीरसिंह गोलश्रृंगारेके पुत्र अजित ब्रह्मचारीने श्री विद्यानंदिजीके उपदेशसे भरोचके नेमिनाथ जिन चैत्यालयमें रचा।

इस भृगुकच्छ नगरमें श्री महावीरस्वामीके समयके अनुमान राजा वसुपाल राज्य करते थे तब वहां एक जैनी सेठ जिनदत्त रहते थे उनकी स्त्री जिनदत्ता थी। उसकी कन्या नीली सती शीलव्रतमें प्रसिद्ध हुई है।

(देखो कथा २८वीं आराधना कथाकोश ब्र० नेमिदत्त कृत)

प्रमाण।

क्षेत्रेऽस्मिन् भारते पूते लाटदेशे मनोहरे।
श्रीमत्सर्वज्ञ नाथोक्त धर्म कार्यैरनुत्तरे॥ २॥
पत्तने भृगुकच्छाख्ये सर्ववस्तु शतैर्भृते।
राजाऽभूद्वसुपालाख्यो सावधानः प्रजाहिते॥ ३॥
श्रेष्टी श्रीजिनदत्तो भूद्वणिक् सन्दोहसुन्दरः।
श्रीमज्जिनेन्द्र चंद्राणां चरणार्चन तत्परः॥ ४॥
तत्प्रिया जिनदत्ताख्या साध्वी सद्दानमंडिता।
नीली नाम्नी तयोः पुत्री मुनीनामिव शीलता॥ ५॥

(२) शुक्लतीर्थ—नरबदा नदीके उत्तर तटपर एक ग्राम है जो भरुच नगरसे १० मील है। यहीं मौर्यचन्द्रगुप्त और उसके मंत्री चाणक्य आकर वास किया करते थे। ग्यारहवीं शताब्दीमें अनहिलवाड़ाका राजा चामुंड जो अपने पुत्रके वियोगसे उदास होगया था यहीं आकर वास करता था।

(३) अकलेश्वर—यहां पहले कागज बननेका शिल्प होता था जो अब बंद होगया है।

(old paper manufacturing industry)

नोट—यहां दि० जैनियोंके ४ मंदिर हैं जिनमें बहुत प्राचीन व मनोज्ञ मूर्तियां हैं। संवत रहित एक मूर्ति श्री पार्श्वनाथ भगवानकी पुरुषाकार भोंरेमें विराजित है। यह भूमिसे मिली थीं।

अकलेश्वर बहुत प्राचीन नगर है। मुडबिद्री (दक्षिण कनडा) में जो श्रीजय धवल, धवल, व महाधवल ग्रन्थ श्री पार्श्वनाथ मंदिरमें विराजमान हैं उनके मूल ग्रन्थ इसी नगरमें श्री पुष्पदंत-भूतबलि आचार्योंने रचे थे जिनको अनुमान २००० वर्षका समय हुआ। इसका प्रमाण पंडित श्रीधरकृत श्रुतावतार कथामें है। जैसे—

" तन्मुनिद्वय अकलेश्वरपुरे गत्वा मत्वा षडंग रचना।
कृत्वा शास्त्रेषु लिखाप्य लेखकान् सन्तोष्य प्रचुर दानेन॥
ज्येष्ठस्य शुक्ल पञ्चम्यां तानि शास्त्राणि संघसहितानि नरवाहन
पूजयिष्यति ।"

भावार्थ—वे मुनि दो पुष्पदन्त और भूतबलि अंकलेश्वर नगरमें आए यहां षडंग शास्त्रकी रचनाकी शास्त्रोंमें लिखाया व ज्येष्ठ सुदी ५ को संघसहित भूतवलिमीने पूजन की।
(सिद्धांतसारादि संग्रह माणकचन्द ग्रन्थमाला नं० २१ पत्रे ३१७)

(नोट)–(४) सजोत–अंकलेश्वर स्टेशनसे ६ मील। यह पहले बड़ा नगर होगा। यहां मंदिरमें श्री शीतलनाथ भगवानकी दि० जैन मूर्ति पद्मासन २ हाथ ऊंची बहुत ही शांत, मनोज्ञ व ऊंची शिल्प कलाको प्रगट करनेवाली है। इसमें संवत नहीं है इससे बहुत प्राचीन कालकी निर्मापित है। इसकी अतिशय ऐसी है कि सर्व हिंदू जाति दर्शन करनेको आती है। यह बात प्रसिद्ध है कि भरुचमें एक दफे एक नाविकका जहाज अटक गया उसको स्वप्न हुआ कि तू सजोतमें शीतलनाथके दर्शन कर जहाज चल पडेगा। उसने आके दर्शन किये जहाज ठीक रीतिसे चल पडा। इस मूर्तिका दर्शन करते२ कभी मन तृप्त नही होता है। जैसे मैसूर श्रवणबेलगोलामें कायोत्सर्ग श्री बाहुबलिकी मूर्ति शिल्पकलामें अद्वितीय है वैसे इसको जानना चाहिये। इसकी पत्थरकी वेदीपर यह लेख है।

"संवत १८३९ श्रावण वदी १ श्री मूल संघ हूवड ज्ञातीयसा सोमचन्द भुला तत्पुत्र काहनदास सोमचंद बाई देवकुंवरे तया श्री शीतलनाथस्य प्रतिष्ठापनं करापितं श्रीरस्तु" यह मूर्ति अंकलेश्वरके पश्चिम रामकुण्डको खोदते हुए निकली थी जिस रामकुण्का वर्णन हिंदुओके संस्कृत नर्वदा पुराणमें है। इसी मूर्तिके साथ वह मूर्ति भी निकली थी जो अंकलेश्वरके मंदिरमें श्रीपार्श्वनाथ स्वामी की है।

(५) गांधार-ता० वागरा जम्बूसर स्टेशनसे १२ मील-यहां प्राचीन जैन मंदिर हैं। १ जैन मंदिर सन् १६१९ में भौंरां सहित बनाया गया था। यह बहुत प्राचीन नगर था। यहां ३ मीलके घेरेमें पुराने टीले मिलते हैं।

(६) आहाबाद-भरुचसे उत्तर पूर्व १३ मील यहां श्री पार्श्वनाथजीका जैन उपासरा है।

(७) कावी-ता० जंबूसर-यह माही नदीपर पुराना जैन पूज्यनीय स्थान है। दो जैन मंदिर सास वहूकी देहरीके नामसे प्रसिद्ध हैं। हरएकमें शिलालेख हैं।

(See Indian Antiquary V 109, 144).

(७) सूरत जिला।

इसकी चौहद्दी इस तरह है—पूर्वमें बडौधा, राजपीपला, वांसदा धरमपुर, दक्षिणमें थाना जिला और दमान (पुर्तगालका) पश्चिममें अरब समुद्र उत्तरमें भरुच और बडौधा राज्य। यहां १६५३ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास—यूनानी भूगोलविशारद प्टोलेमी Ptolemy (सन् १५०) लिखता है कि यह पुलिपुला व्यापारका मुख्य केन्द्र था। शायद पुलिपुलासे मतलब फूलपाडासे है जो सूरत नगरका पवित्र स्थान माना जाता है। सूरत शहरसे पूर्व १२ मीलपर कावरेजके किलेमें हिंदू राजा रहता था जो १३ वी शदीमें कुत्तबुद्दीनसे हारकर भाग गया। यहांकी प्राचीनताकी बात यह है कि कुछ मसजिदें प्राचीन जैन मंदिरोंको तोड़कर बनी हैं जैसे रांदेरमे जम्मा मसजिद, मसजिद मियां व खारवा ब मुन्शीकी मसजिद।

(१) सूरत शहर--यह मोटे व रंगीन रुईके कपडोंके लिये व रेशमपर सुनहरी व रुपहरी फूल कामके लिये प्रसिद्ध था। किसी समय जहाज बननेका शिल्प बहुत चढा हुआ था और यह सब पारसियोंके हाथमें था। बडे २ जहाज जो ५०० से १००० टन बोझा ले जाते थे चीनके साथ व्यापारमें लगे रहते थे। सूरतके शाहपुरवाडामें घेरेके भीतर जो लकड़ीकी मसजिद है वह भी जैनमंदिरके सामानसे बनी है। शाहपुरा, हरिपुरा, सय्यदपुरा व गोपीपुरामें बहुत जैन मंदिर हैं। नोट—यहा दि० व श्वे० के प्राचीन जैन मदिर व शास्त्र है। सूरतके कतारगावके पास वरतिया देवडी है जहा अनु

(८) राजपीपला राज्य।

सूरत जिलेके पास पूर्व राजपीपला राज्यमें लिमोदरा ग्राम है। यहां श्री ऋषभदेवका जैन मंदिर है जिसकी मूर्तिपर जो लेख है उसमें मिती मार्गसिर सुदी १४ सं० ११२० है। यह मूर्ति खो गई थी फिर १८६४में एक खेतमें मिली यहां कार्तिक सुदी १५ और माघ सुदी ५ को मेला भरता है। बहुतसे जैनी एकत्र होते हैं।

(९) थाना जिला।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें दमान, सूरत, पूर्वमें पश्चिमीय घाट, दक्षिणमें कोलावा, पश्चिममें अरब समुद्र। यहां ३९७३ वर्ग मील स्थान है।

यहांका इतिहास यह है कि सन् ई० से तीसरी शताब्दी पहले अशोकके शिलालेख सुपारामें अंकित किये गए थे। राजा अशोकके पीछे थाना और कोकनमे अंध्रभृत्यने राज्य किया था फिर शाहवंश या पश्चिमी क्षत्रपोने फिर मौर्यवंशने पुन राज्य स्थापित किया जिसको कल्याणके चालुक्योने नष्ट किया। सन् ८१० से १२६० तक यहा शिलाहरोका राज्य था जिन्होने पुरी (वर्तमान एलीफेन्टा) को अपनी राज्यधानी बनाया था यही कोकणमे मौर्योंका पूर्वीय स्थान था। शिलाहार लोग द्राविड वंशके थे। फिर मुसल्मानोका अधिकार होगया।

यहा बौद्धोंकी गुफाए कन्हेरी, कोदीवती, सैलसिट्रीके मागाथन और लोनाद नामकी भुइवडीमें हैं।

(१) अमरनाथ-(अम्बरनाथ) ग्राम ताल्लु० कल्याण। बम्बईसे ३८ मील अम्बरनाथ स्टेशनसे पश्चिम १ मील ग्रामसे पश्चिम १ मीलसे कम दूरीपर घाटीमें एक प्राचीन मंदिर है इसमें प्राचीन हिन्दू कारीगरीका बढ़िया नमूना है। इसमे एक शिलालेख शाका ९८२ (सन् १०६०) का पाया गया है जिससे मालूम हुआ कि इसे दक्षिण कल्याणके चालुक्योंके नीचे कोकनके राजा महामंडलेश्वर चितराजदेवके पुत्र मानवानि राजाने बनवाया था। यहाके खमे और छत अजन्ताकी गुफाओंके समान हैं। बहुत सुन्दर

मान १०० के छोटी २ जैन साधुओंकी समाधियें हैं जिनपर लेख भी हैं। यह दि० जैनियोंकी हैं।

(३) रांदेर—सूरत शहरसे २ मील तापती नदीके दाहने तटपर। यह चौरासी ताल्लुकेमें एक नगर है। दक्षिण गुजरातमें सबसे प्राचीनस्थानोंमें यह एक है। ईसाकी पहली शताब्दीमें यह एक उपयोगी स्थान था जब भरोंच पश्चिमीय भारतमें व्यापारका मुख्य स्थान था। अलबिरुनीने (सन् १०३१ में) लिखा है कि दक्षिण गुजरातकी दो राज्यधानी हैं एक रांदेर (या राहन जौहर) दूसरा भरोंच। तेरहवीं शताब्दीके आरम्भमें अरब सौदागरों और मल्लाहोंके संघने उस समय रांदेरमें राज्य करनेवाले जैनियोंपर हमला किया और उनको भगा दिया। तथा उनके मंदिरोंको मसजिदोंमें बदल लिया। जम्मा मसजिद जैन मंदिरसे बनी है। तथा कोर्टकी भीतें जैन मंदिरकी हैं। करवा या खारवाकी मसजिदमें जो लकड़ीके खम्भे हैं वे जैनियोंके हैं। मियां मसजिद भी असलमें जैन उपासरा था। बालीजीकी मसजिद भी जैन मंदिर कहा जाता है. मुन्शीकी मसजिद भी जैन मंदिर था। अब वहां पांच जैन मंदिर पुराने हैं। रांदेरके अरब नायतोंके नामसे दूर दूर देशोंमें यात्रा करते थे। सन् १५१४ में यात्री बारबोसा Barbosa वर्णन करता है कि यह रांदेर मूर लोगोंका बहुत धनवान व सुहावना स्थान था जिसमें बहुत बडे २ और सुंदर जहाज थे और सर्व प्रकारका मसाला, दवाई, रेशम, मुश्क आदिमें मलक्का, बङ्गाल, तनसेरी (Tenna serim) पीगू, मर्तवान और सुमात्रासे व्यापार होता था। हमने स्वयं रांदेर जाकर पता लगाया तो ऊपर लिखित मसजिदें जैन मंदि-

रोंको तोड़कर बनी हैं यह बात सच पाई। रांदेरमें अब दि० जैन मंदिर एक है।

(३) पाल–सूरतसे ३ मील यहां श्री पार्श्वनाथका बहुत बड़ा जैन मंदिर है।

(४) मांडवी–ता० मांडवी यहां श्रीआदिनाथजीका दि० जैन मंदिर दर्शनीय है। इस पर यह शिलालेख है "संवत १८९७ वर्षे वैशाख मासे कृष्ण पक्षे दश्यां तिथौ शनौ श्रीयुत संवत्सर सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे कुन्दकुन्दान्वये भट्टारक सकलकीर्ति तदनुक्रमेण भ० श्री विजयकीर्ति तत्पट्टे श्री भ० श्री नेमिचन्द्रदेव तत्पट्टे श्री चन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री रामकीर्ति देव, तत्पट्टे भट्टारक श्री यशकीर्ति उपदेशात्....श्री मांडवी ग्रामे समस्त श्री संघ श्री मूलनायक श्री आदिनाथं नित्यं प्रणमति। शुभम्।

यहां एक जैन श्वेतांबर मंदिर भी है जो संवत् ०१८४९में बना था।

(८) राजपीपला राज्य ।

सूरत जिलेके पास पूर्व राजपीपला राज्यमें छिमोदरा ग्राम है। यहां श्री ऋषभदेवका जैन मंदिर है जिसकी मूर्तिपर जो लेख है उसमें मिती मार्गसिर सुदी १४ सं० ११२० है। यह मूर्ति खो गई थी फिर १८६४में एक खेतमें मिली यहां कार्तिक सुदी १९ और माघ सुदी ९ को मेला भरता है। बहुतसे जैनी एकत्र होते हैं।

(९) थाना जिला।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें दमान, सूरत, पूर्वमें पश्चिमीय घाट, दक्षिणमें कोलाबा, पश्चिममें अरब समुद्र। यहां ३९७३ वर्ग मील स्थान है।

यहांका इतिहास यह है कि सन् ई० से तीसरी शताब्दी पहले अशोकके शिलालेख सुपारामें अंकित किये गए थे। राजा अशोकके पीछे थाना और कोंकनमें अंध्रभृत्यने राज्य किया था फिर शाहवंश या पश्चिमी क्षत्रपोंने फिर मौर्यवंशने पुनः राज्य स्थापित किया जिसको कल्याणके चालुक्योंने नष्ट किया। सन् ८१० से १२६० तक यहां शिलाहरोंका राज्य था जिन्होंने पुरी (वर्तमान एलीफेन्टा) को अपनी राज्यधानी बनाया था यही कोंकणमें मौर्योंका पूर्वीय स्थान था। शिलाहार लोग द्राविड वंशके थे। फिर मुसल्मानोंका अधिकार होगया।

यहां बौद्धोंकी गुफाएं कन्हेरी, कोंदीवती, सैलसिटीके मागाथन और लोनाद नामकी क्षुद्रवंडीमें हैं।

(१) अमरनाथ-(अम्बरनाथ) ग्राम ताल्लु० कल्याण। बम्बईसे ३८ मील अम्बरनाथ स्टेशनसे पश्चिम १ मील ग्रामसे पश्चिम १ मीलसे कम दूरीपर घाटीमें एक प्राचीन मंदिर है इसमें प्राचीन हिन्दू कारीगरीका बढ़िया नमूना है। इसमें एक शिलालेख शाका ९८२ (सन् १०६०) का पाया गया है जिससे मालूम हुआ कि इसे दक्षिण कल्याणके चालुक्योंके नीचे कोंकनके राजा महामंडलेश्वर चितराजदेवके पुत्र मानवानि राजाने बनवाया था। यहांके खंभे और छत अजन्ताकी गुफाओंके समान हैं। बहुत सुन्दर

नक्काशी है। भीतर लिंग है। जो कारीगरी भीतरके खंभोपर व बाहर दिख रही है वैसी इस बंबई प्रांतमें कहीं नहीं है। यहां शिवरात्रि (माघमें) को मेला भरता है।

नोट–इसकी जांच होनी चाहिये। शायद जैन चिन्ह हो।

(२) बोरीवली–सेलसिटी तालुका बंबईसे उत्तर २१ मील स्टेशन बी० बी० सी० आईसे करीब आध मील स्टेशनसे पूर्व पोनीसर और मागा घाटीके निकट बौद्धोंकी खुदी हुई गुफाएं हैं। इसके दक्षिण पूर्व करीब २ मीलके अकुर्लीमें एक काले रङ्गका बडा टीला है। इसके ऊपर खुदाई है व २००० वर्ष पुरानेवाली अक्षर हैं। इसके दक्षिण २ मील जाकर जोगेश्वर नामकी ब्राह्मण गुफा ७ वीं शताब्दीकी है। गोरेगांव स्टे० से ३ मील गुफाएं हैं उनमें सबसे बड़ी नं० तीन २४०×२०० फुट है।

(३) दाहनू–बन्दर ता० दाहानू-दाहानूरोड स्टे० (बी०बी०) से २ मील बम्बईसे ७८ मील, पहले यह नगर था। इस स्थानका नाम नासिककी गुफाओंके शिलालेखोंमें आया है (सन् १०० ई०में)

(४) कल्याण–बम्बईसे दक्षिण पूर्व ३३ मील। इसका नाम पहलीसे छठी शताब्दी तकके शिलालेखोंमें आया है। दूसरी शताब्दीके अन्तमें यह नगर बहुत उन्नतिपर था। कैस्मस इंडिका Casmas Indica-कहता है कि छठी शताब्दीमें यह पश्चिम भारतके पांच मुख्य बाजारोंमेंसे एक था। यह बलवान राजाका स्थान था। यहां पीतल, कपड़ेका सामान तथा लकड़ीके लट्ठोंका व्यापार होता था।

(५) कन्हेरी गुफाएं–थानासे ६ मील, जी० आई० पी०के भानदुप स्टेशनसे या बी० बी० के बोरिवली स्टे० से निकट है।

इसका प्राकृत नाम कन्हगिरि संस्कृतमें कृष्णगिरि है उसकी पवित्रता बौद्धोंकी उन्नतिके समयसे है। १०० वर्ष पहलेसे ९० सन् ई० तककी गुफाएं हैं। कुछ गुफाएं चौथीसे छठी शताब्दी तककी हैं यहां ५४ शिलालेख हैं (देखो बम्बई गजेटियर जिल्द १९ वीं सफा १२१ से १९९)।

(६) सोपारा—तालुका वसीन—वसीनरोड़ स्टे०से उत्तर पश्चिम ३॥ व वीरार स्टे० से दक्षिण पश्चिम ३॥ मील है। यह प्राचीन नगर था। यह सन् ई० से ५०० वर्ष पहलेसे लेकर १३०० ई० तक कोंकनकी राज्यधानी था। महाभारतमें व गुफाओंके लेखोंमें इसका नाम शुर्पारक है। यूनानी प्टोलिमीने सौपार, व प्राचीन अरब यात्रियोंने सुबार नाम लिखा है। महाभारतमें लिखा है कि यहां पांच पांडव ठहरे थे। गौतमबुद्ध अपने पूर्व जन्मोंमें यहां पैदा हुआ था। जैन लेखकोंने सुपाराका बहुत स्थानोंमें नाम लिया है। सन ई० से पहली व दूसरी शताब्दी पहलेके लेखोंमे इसका नाम सोपारक, सोपाराय व सोपारग पाया जाता है। पेरिप्लसके संपादकने लिखा है कि तीसरी शताब्दीमें औपारा भरुच और कल्याणके मध्यमें समुद्र तटपर १ बाजार था। (B R. A S. 1882) सोलोमनने इसको ओफलायर नाम देकर लिखा है।

यह ईसासे १००० वर्ष पहले व्यापारका मुख्य केन्द्र था, इतिहासके समयके पहलेसे इस थानाके किनारेसे फारस, अरब और अफ्रिकासे व्यापार होता था। जेनेसिस अध्याय २८में कहा है कि भारतीय मसालेमें अरबके साथ व्यापार चलता था तथा मिश्र वासियोंमें भारतकी वस्तुएं प्राचीनकालमें व्यवहार की जाती थीं।

Wilkinson's ancient Egyptians II P. 237.

फारशकी खाड़ीके नाकेसे भारतके साथ व्यापार बहुत ही पूर्वकालसे होता था।

नेबूचडनजर (सन ई०से ६०६ से ५६१ वर्ष पहले) ने फारसकी खाड़ीपर बैंक स्थापित किये थे और सीलोन व पश्चिमीय भारतसे व्यापार करता था। भारतको ऊन, जवाहरात, चूना, मट्टी, ग्लास, तेल भेजता था व भारतसे लकड़ी, मसाला, हाथीदांत, जवाहरात, सोना, मोती लाता था।

Heeren's historical Researches II P. 209, 247.

(७) तारापुर—या चिचनी, महिम और दाहानू तालुका, महिमसे उत्तरसे १५ मील। यह बहुत प्राचीन नगर है। नासिककी गुफाके पहली शताब्दीके लेखमें इसका नाम चेंचिन्न आया है।

(८) वज्राबाई—तालुका भिवंडीमें पवित्र स्थल—भिवन्डीसे उत्तर १२ मील। यहां गर्म पानीके झरने हैं। इसके लिये प्रसिद्ध है। एक पहाड़ीपर सुन्दर देवीका मंदिर है। चैत्रमें मेला लगता है।

(९) वज्राली—मुखाड़में तालुका शाहापुर—एक छोटी पहाड़ीकी उत्तर ओर ढालमें एक चट्टानमें खुदा मंदिर है जो १२×१२ फुट है। इसके द्वारके सामने एक आलेके दोनों तरफ दो मूर्तियें हैं हरएक २ फुट ऊंची हैं। ये ध्यानरूप हैं द्वारके ऊपर १ छोटी खंडित मूर्ति है। ये मूर्तियें व मंदिर जैनियों । मालूम होता है। देखना चाहिये।

नोट—इस जिलेमें और भी जैन चिन्ह अवस्य होंगे जांच होनेकी जरूरत है। जैन शास्त्रोंमें सुपाराका कहां २ वर्णन है यह बात भी संग्रह करने लायक है।

(१०) बड़ौधा राज्य।

बड़ौधाका प्राचीन् नाम एक दफे हिन्दुओंने चन्दनावर्ती प्रसिद्ध किया था क्योंकि राजपूत ढोरवंशके राजा चंदनने इसको जैनियोंसे छीना था। यह चदन प्रसिद्ध मलियाधीका पति व मशहूर कन्या शिवरी और नीलाका पिता था पीछेसे इसे परावली फिर वतपत्तु कहने लगे।

(१) नवसारी–यहा श्री पार्श्वनाथजीका जैन मंदिर है।

(२) महुआ–पूर्ण नदीपर–एक दि० जैन मंदिर है जिसमें सुन्दर कारीगरी है। प्रतिमाए बहुत प्राचीन हैं। शास्त्रभंडार बहुत बढिया है, यहा श्री पार्श्वनाथजीकी मूर्ति भोंरेमें है जिसे विघ्नहर पार्श्वनाथ भी कहते हैं–सर्व अजैन भी पूजते हैं। यह मूर्ति कृष्ण पाषाण २॥ हाथ ऊंची पद्मासन बडी मनोज्ञ व प्राचीन है। यह स० १३९३में खानदेश जिलेके सुलतानपुरके पास तोड़ावा ग्राममें खेत खोदते हुए मिली थी। सेठ डाह्याभाई शिवदासने लाकर यहा विराजित की। ऊपर १ वेदीमे श्वेत पाषाणका पट है २४ प्रतिमा हैं मध्यमें ३ हाथ ऊंची कायोत्सर्ग श्री ऋषभदेवकी मूर्ति है जो नौसारीके दि० जैन मदिरसे यहा सं० १९११में लाई गई थी। दर्शनीय है। प्रबन्धकर्ता इच्छाराम झवेरचद नरसिंगपुरा हैं।

(३) अनहिल्वाडा पाटन–सिद्धपुर स्टेशनसे जाना होता है। यह चावडी और चालुक्य राजाओंकी पुरानी राज्यधानी है। इसको वनराजने सन् ७४६ में आबाद किया था। परन्तु मुसल-

मानोंने इसे १३वीं शताब्दीमें ध्वंश किया। बहुतसे वर्तमानमें बने हुए मंदिरोंमें पुराने मंदिरोंके खण्ड व मसाले पाए जाते हैं।

पंचासर पार्श्वनाथके जैन मंदिरमें एक संगमर्मरकी मूर्ति है जो पाटनके स्थापनकर्ता वनराजकी कही जाती है। इस मूर्तिके नीचे लेख है जिसमें वनराजका नाम व संवत् ८०२ अंकित है इसी मूर्तिकी बाईं तरफ वनराजके मंत्री जाम्बकी मूर्ति है। श्री पार्श्वनाथके दूसरे जैन मंदिरमें लकड़ीकी खुदी हुई छत बहुत सुन्दर है तथा एक उपयोगी लेख खरतर गच्छ जैनियोंका है। दूसरे एक जैन मंदिरमें वेदी संगमर्मरकी बहुत ही बढ़िया नक्काशीदार है जिसपर मूर्ति विराजित है।

नोट—इस पाटनमें जैनियोंका शास्त्रभंडार भी बहुत बड़ा दर्शनीय है यहां दोआने जैनी बसते हैं। उनके सब १०८ मंदिर हैं प्रसिद्ध पंचासर पार्श्वनाथका है जिसमें २४ वेदियां है। ढांढरवाड़ामें सामलिया पार्श्वनाथका बड़ा मंदिर है जिसमें एक बड़ी काले संगमर्मरकी मूर्ति सम्पतीराजाकी है। वहीं श्री महावीरस्वामीका मंदिर हैं जिसमें बहुत अदभुत और मूल्यवान पुस्तकोंके भंडार हैं। इनमें बहुतसे ताड़पत्रपर लिखे हैं। और बड़े २ संदूकोंमें रक्षित हैं।

(४) चूनासामा—वड़वाली तालुका—यहां बड़ौदा राज्यभरमें सबसे बड़ा जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथजीका है इसमें बढ़िया खुदाईका काम है— इसी शताब्दीमें ७ लाखकी लागतसे बना है।

(५) सन्धा—सिद्धपुरसे उत्तर ८ मील। कोड़ावाकुनयीका

एक बड़ा मंदिर है जो जैन मंदिरके ढंगपर सन् १८९८में बनाया गया था।

(६) वडनगर–विसाल नगरसे उत्तर पश्चिम ९ मील। यहां दो सुन्दर जैन मंदिर हैं।

(७) सरोत्री या सरोत्रा–सरोत्री टे० से ९ मील यहां कई पुराने जैन मंदिर हैं उनमें बहुतसे छोटे२ लेख हैं। एक बहुत प्राचीन व प्रसिद्ध सफेद संगमर्मर पत्थरका जैन मंदिर है। मध्यमें एक है। चारोंतरफ ५२ मंदिर हैं जो गिरगए हैं। इसकी सर्व मूर्तियें अनुमान ६०के अन्यत्र भेज दी गई हैं।

(८) राहो–सरोत्रासे उत्तर पूर्व ४ मील यहां प्राचीन सफेद संगमर्मरके जैन मंदिरके ध्वंस भाग हैं। एक बंगलेके बाहर द्वारपर पुराने मंदिरके खंभे भी लगे हैं।

(९) मूंजपूर–पाटनसे दक्षिण पश्चिम २४ मील। यहां प्राचीन इमारत एक पुरानी जमा मसजिद है। जो और गुजराती पुरानी मसजिदोंके समान पुराने हिन्दू और जैन मंदिरोंके मसालेसे बनाई गई है। यहां एक संस्कृतमें शिलालेख है परन्तु पढ़ा नहीं जाता।

(१०) संकेश्वर–मुंजपुरसे दक्षिण पश्चिम ६ मील–यह जैनियोंका प्राचीन स्थान है। यहां श्री पार्श्वनाथजीका पुराना जैन मंदिर है। इसके चारों तरफ छोटे २ मंदिर हैं। एक मंदिरके द्वारपर कई लेख सं० १६५२ से १६८६ के हैं। यह कहा जाता है कि प्राचीन मंदिरमें जो श्री पार्श्वनाथकी मूर्ति थी उसको उठाकर

मानोंने इसे १२वीं शताब्दीमें ध्वंश किया। बहुतसे वर्तमानमें बने हुए मंदिरोंमें पुराने मंदिरोंके खण्ड व मसाले पाए जाते हैं।

पंचासर पार्श्वनाथके जैन मंदिरमें एक संगमर्मरकी मूर्ति है जो पाटनके स्थापनकर्ता वनराजकी कही जाती है। इस मूर्तिके नीचे लेख है जिसमें वनराजका नाम व संवत् ८०२ अंकित है इसी मूर्तिकी बाईं तरफ वनराजके मंत्री जाम्बकी मूर्ति है। श्री पार्श्वनाथके दूसरे जैन मंदिरमें लकड़ीकी खुदी हुई छत बहुत सुन्दर है तथा एक उपयोगी लेख खरतर गच्छ जैनियोंका है। दूसरे एक जैन मंदिरमें वेदी संगमर्मरकी बहुत ही बढ़िया नक्काशीदार है जिसपर मूर्ति विराजित है।

नोट—इस पाटनमें जैनियोंका शास्त्रभंडार भी बहुत बड़ा दर्शनीय है यहां दोआने जैनी बसते हैं। उनके सब १०८ मंदिर हैं प्रसिद्ध पंचासर पार्श्वनाथका है जिसमें २५ वेदियां हैं। ढांढरवाड़ामें सामलिया पार्श्वनाथका बड़ा मंदिर है जिसमें एक बड़ी काले संगमर्मरकी मूर्ति सम्पत्तीराजाकी है। वहीं श्री महावीरस्वामीका मंदिर हैं जिसमें बहुत अद्भुत और मूल्यवान पुस्तकोंके भंडार हैं। इनमें बहुतसे ताड़पत्रपर लिखे हैं। और बड़े १ संदूकोंमें रक्षित हैं।

(४) चूनासामा—बड़ावाली तालुका—यहां बड़ौधा राज्यभरमें सबसे बड़ा जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथजीका है इसमें बढ़िया खुदाईका काम है— इसी शताब्दीमें ७ लाखकी लागतसे बना है।

(५) उन्झा—सिद्धपुरसे उत्तर ८ मील। कोड़ावाकुनवीका

एक बड़ा मंदिर है जो जैन मंदिरके ढंगपर सन् १८९८में बनाया गया था।

(६) बडनगर–विसाल नगरसे उत्तर पश्चिम ९ मील। यहां दो सुन्दर जैन मंदिर हैं।

(७) सरोत्री या सरोत्रा–सरोत्री टे० से ९ मील यहां कई पुराने जैन मंदिर हैं उनमें बहुतसे छोटे२ लेख हैं। एक बहुत प्राचीन व प्रसिद्ध सफेद संगमर्मर पत्थरका जैन मंदिर है। मध्यमें एक है। चारोंतरफ ९२ मंदिर हैं जो गिरगए हैं। इसकी सर्व मूर्तियें अनुमान ६०के अन्यत्र भेज दी गई हैं।

(८) राहो–सरोत्रासे उत्तर पूर्व ४ मील यहां प्राचीन सफेद संगमर्मरके जैन मंदिरके ध्वंस भाग हैं। एक बंगलेके बाहर द्वारपर पुराने मंदिरके खंभे भी लगे हैं।

(९) मूंजपूर–पाटनसे दक्षिण पश्चिम २४ मील। यहां प्राचीन इमारत एक पुरानी जमा मसजिद है। जो और गुजराती पुरानी मसजिदोंके समान पुराने हिन्दू और जैन मंदिरोंके मसालेसे बनाई गई है। यहां एक संस्कृतमें शिलालेख है परन्तु पढ़ा नहीं जाता।

(१०) संकेश्वर–मुंजपुरसे दक्षिण पश्चिम ६ मील–यह जैनियोंका प्राचीन स्थान है। यहां श्री पार्श्वनाथजीका पुराना जैन मंदिर है। इसके चारों तरफ छोटे २ मंदिर हैं। एक मंदिरके द्वारपर कई लेख सं० १६९२ से १६८६ के हैं। यह कहा जाता है कि प्राचीन मंदिरमें जो श्री पार्श्वनाथकी मूर्ति थी उसको उठाकर

नए मंदिरजीमें ले गए हैं। इस मंदिरकी एक प्रतिमा पर संवत् १६६६ है व नए मंदिरकी प्रतिमा पर सं० १८६८ है।

(११) पंचासुर-संकेश्वरसे दक्षिण ६ मील। यह गुजरातके समसे प्राचीन नगरोंमेंसे एक है। ११०० वर्ष हुए यहांके प्रसिद्ध जयशेपर राजाको भुवर राजाके आधीन दक्षिणकी सेनाने घेर लिया था। यहां जमीनके नीचेसे बड़ी २ पुरानी ईंटे निकली हैं।

(१२) चन्द्रावती-राहोसे उत्तर पूर्व १९ मील। पर्वत आबूके नीचेसे थोड़ी दूर-यह संगमर्मरका पुराना सुन्दर नगर था। यहां एक स्थानपर १३६ मूर्तियें बिराजमान हैं। नोट-देखना चाहिये। शायद जैन हों।

(१३) मोधेरा नगर-छोटी पहाड़ीपर। जैन कथाओंमें इसको मोधेरपुर या मुधवंकपाटन लिखा है।

(१४) सोजित्रा-यहां दि० जैन भट्टारकोंकी दो पुरानी गद्दियां हैं। मूलसंघ और काष्टासंघकी। तीन दि०जैन मंदिर हैं। यहां कुछ प्राचीन दि०जैन मूर्तियां खंभातके मंदिरसे लाकर विराजमान की गई हैं। यहां काष्टासंघके मंदिरजीमें प्राचीन जैन शास्त्र भण्डार है।

(११) महीकाठा एजंसी।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तर पूर्व उदयपुर और डूंगरपुर दक्षिण पूर्व रेवाकांठा, दक्षिण—खेड़ा, पश्चिम—बड़ौधा और अहमदाबाद। यहां ३१२९ वर्गमील स्थान है।

ईडर राज्य—यह सन् ८०० से ९७० तक गहलोटों व १००० से १२०० तक परमार राजपूतोंके आधीन रहा।

(१) ईडर नगर—यहां गढ़में कुछ गुफाओंके जैन मंदिर ४०० वर्षके प्राचीन हैं एक भूमिके नीचे संगमर्मरका व एक ऊपर श्री शांतिनाथका है।

नोट—यहां पहाड़पर दिगम्बर और श्वेताम्बर जैनियोंके मंदिर दर्शनीय हैं। नगरमें दोनोंके कई मंदिर हैं। दि० मंदिरोंमें बहुत प्राचीन प्रतिमाएं भी हैं तथा जैन शास्त्रभंडार बहुत प्राचीन हैं। यहां दि० जैन भट्टारकोंकी गद्दी है।

(२) खंभातराज्य—इसका वर्णन खेड़ा जिलेमें लिखा गया है यह अहमदाबादसे ५२ मील है। यहां प्राचीन ध्वंश इमारतें बहुत हैं जो खंभातकी सम्पत्तिको दिखलाते हैं। जुमा मसजिदमेंके स्तंभ जैन मंदिरोंसे लेकर लगाए गए हैं जो बहुत ही शोभा दिखाते हैं।

(३) भिलोड़ा—यहां सफेद संगमर्मरका जैन मंदिर श्रीचन्द्रप्रभुका है जो ३८ फुट ऊंचा व ७०×४९ फुट है। इसमें ४ खनका मानस्तंभ है जो ७९ फुट ऊंचा है।

(४) घोसीमा सवली—यहां श्री पार्श्वनाथ और नेमिनाथजीके जैन मंदिर हैं जो सफेद पाषाणके २६ फुट ऊंचे व १९०×१४० फुट हैं।

(५) तिम्बा—जिला गोदवाड़ा। श्री तारंगा पहाड़। नोट—यह जैनियोंका माननीय सिद्धक्षेत्र है। दिगम्बर जैन शास्त्रोंमें इसका प्रमाण इस तरह दिया है।

गाथा—

वरदत्तो य वरंगो सायरदत्तो य तारवरणयरे।
आहुट्ठय कोड़ीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १ ॥

(प्राकृत निर्वाणकांड)

दोहा वरदत्तराय रु इंद मुनिंद, सायरदत्त आदि गुणवृन्द।
नगर तारवर मुनि उठ कोडि, वंदों भाव सहित करजोड़ि ॥४॥

(भाषा निर्वाणकांड भगवतीदास कृत सं० १७४१ में)

भावार्थ—इस ताड़वर क्षेत्रपर वरदत्त राजा, इन्द्र मुनि व सागरदत्त आदि साढ़े तीन कोड़ मुनि मुक्ति पधारे हैं।

यहां बहुतसे जैन मंदिर हैं। उनमें श्री अजितनाथ और संभवनाथके मंदिर ७०० वर्ष हुए राजा कुमारपालके समयमें रचे हुए कहे जाते हैं। (फोर्वसकृत रासमाला) यहां अखंडित खंडित बहुतसी दि० जैन मूर्तियां यत्र तत्र हैं। बहुत जैन यात्री पूजाको आते हैं।

(६) कुम्भरिया—दांतासे उत्तर पूर्व १४ मील। अम्बाजीसे दक्षिण पूर्व १ मील। यहां सफेद संगमर्मरका श्री नेमिनाथजीका

जैन मंदिर सबसे बड़ा है। पहले यहां ३६० मंदिर थे अब केवल ९ हैं। बहुतसे ज्वालामुखी पर्वतकी अग्निसे नष्ट होगए। एकमें शिलालेख सन् १२४९ का है कि कुमारपालके मंत्री चाहड़के पुत्र ब्रह्मदेवने कुछ इमारत इसमें जोड़ी, दूसरा सन् १२०० का है कि सर्व मंडलिकोंकि तख्त अर्बुदके राजा श्रीधर वर्षदेवने जिनपर सदा सूर्य चमकता है इस अरसनपुरमें एक कूप बनवाया। दूसरे भी लेख हैं। कुछ मंदिर विमलशाहके बनवाए हुए हैं। एक पाषाण पर लेख है। " श्री मुनिसुव्रत स्वामी बिम्बम् अश्वावबोध स मलिकाविहार तीर्थोद्धार सहितम्। "

कुम्भरियामें ५ मंदिर जैनोंके शेष हैं। इस नगरको चितौड़के राजा कुंभने बसाया था। शिल्पकारीके खंभे बहुत बड़े नेमिनाथके मंदिरजीमें हैं। एक खंभेपर लेख है कि इसे सन् १२९१में आमपालने बनवाया। इस बडे मंदिरमें आठ वेदियां हैं जिनमें श्री आदिनाथ और पार्श्वनाथकी मूर्तियें हैं बीचमें श्री नेमिनाथकी मूर्ति है जिसमें सन १६१८का लेख है। मंडपमें जैन मूर्तियां सन् ११३४ से १४६८ तककी है।

(७) वड़ाली या अमीजरा पार्श्वनाथ—ईडरसे १० मील। दि० जैन मंदिर प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ चतुर्थकालकी पद्मा० है।

(१३) काठियावाड़ राज्य (सौराष्ट्र देश)

इसमें २३४४९ वर्ग मील स्थान है।

इसके ४ भाग हैं-झालावाड़, हालार, सोरठ और गोहेलवार। कच्छ और खंभातकी खाड़ीके मध्य देशको काठियावाड़ कहते हैं।

इतिहास-यहां मौर्य्य, यूनानी, तथा क्षत्रपोंने क्रमसे राज्य किया है। पीछे कन्नौजके गुप्तोंने राज्य किया जिन्होंने अपने सेनापति नियत किये। अन्तके सेनापति स्वयं सौराष्ट्रके राजा हो गए जिन्होंने अपने गवर्नर वल्लभीनगरमें रक्खे। यह वल्लभी वर्तमानमें दवा हुआ नगर वाला है जो भावनगरसे उत्तर पश्चिम १८ मील है। जब गुप्तोंका प्रभाव गिरा तब वल्लभीके राजाओंने जिनके वंशको गुप्तोंके सेनापति भट्टारकने स्थापित किया था अपना अधिकार कच्छ तक बढ़ा लिया और मेर लोगोंको हरा दिया जिन्होंने काठियावाड़पर सन् ४७० से ५२० तक अधिकार जमा लिया था।

राजा ध्रुवसेन द्वि० के राज्य (सन् ६३२ से ६४०)में चीनी यात्री हुइनसांगने वलपी (वल्लभी) और सुलचा (सौराष्ट्र)की मुलाकात की थी-७४६ से १२९८ तक राज्यस्थान अणहिलवाडा हो गया। इस मध्यमें कई राज्य उठे और जेठवा लोग सौराष्ट्रके पश्चिममें एक बलवान जाति हो गए। अनहिलवाड़ा १२९८में ले लिया गया। तब झाला लोग उत्तर काठियावाड़में बस गए।

प्राचीन स्मारक-प्रसिद्ध अशोकके शिलालेखके सिवाय जूनागढ़में बौद्धोंकी पहाड़में खुदी गुफाएं व मंदिर हैं जिनका

(१२) पालनपुर एजंसी।

इसकी चौहद्दी इस तरह है। उत्तरमें उदयपुर, सिरोही, पूर्वमें महीकांठा, दक्षिणमें बड़ौधा राज्य और काठियावाड़, पश्चिममें कच्छकी खाड़ी।

यह अनहिलवाड़ाके राजपूतोंके आधीन सन् ७४६ से १२९८ तक रहा।

(१) दीसा—बम्बईसे ३०० मील पालनपुर दीसा रेलवेपर, यहां दो जैन मंदिर हैं।

(२) पालनपुरनगर-यहां नगरके बाहर दो भाग हैं एक जैनपुरा दूसरा ताजपुरा बीचमें एक खाई २२ फुट चौड़ी व १२ फुट गहरी है। यह बहुत पुरानी बस्ती है। ८ वीं सदीमें यह वह स्थान है जहां अनहिल वाड़ाके चावड़ वंश स्थापक वनराज (७४६–८०) पाला गया था। १२ वीं सदीके प्रारम्भमें यह चन्द्रावतीके पोनवार घरानेके प्रल्हाद देवकी राज्यधानी थी। इसका नाम था प्रह्लादपाटन, १४ वी सदीमें पालन्सी चौहानोंने ले लिया जिससे इसका वर्तमान नाम है। यहां भी जैन मंदिर है।

यहां पर्वतपर वर्तमानमें दिगम्बर जैनोंका खास एक बड़ा मंदिर है जहां ये लोग पूजने जाते हैं उसमें मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान १६ वें तीर्थंकरकी पुरुषाकार पद्मासन मूर्ति बहुत मनोज्ञ सं० वि० सं० १६८३ की है प्रतिष्ठाकारक बादशाह जहांगीरके समयमें अहमदाबाद निवासी रतनसी हैं-देखो—

Epigraphica Indica Vol II P×P. 72

श्वेतांबर जैनोके बहुतसे विशाल मंदिर हैं। यह पर्वत समुद्र तहसे १९७७ फुट ऊंचा है मुख्य दो चोटियां हैं फिर उनकी घाटी धनवान जैन व्यापारियोंने बना दी है। कुल ऊपरका भाग मंदिरोंसे ढका हुआ है जिनमें मुख्य मंदिर श्री आदिनाथ, कुमारपाल विमलशाह, सम्प्रति राजा और चौमुखाके नामसे प्रसिद्ध हैं। यह चौमुखा मंदिर सबसे ऊंचा है जिसको २१ मीलकी दूरीसे देखा जासक्ता है। इस चौमुखा मंदिरके सम्बन्धमें जो खरतरवासी टोंकमें है ऐसा कहा जाता है कि यह विक्रम राजाका बनाया हुआ है परंतु यह नहीं बताया गया कि यह संवत ५७ वर्ष पहले सन् ई०का है या ९०० सन् ई० में हुए हर्ष विक्रमका है या अन्य किसीका है। परंतु वर्तमान रूपसे ऐसा माल्रम होता है कि यह करीब सन् १६१९ के फिरसे बना है। अहमदाबादके सेवा सोमजीने सुलतान नुरुद्दीन जहांगीर, सवाई विजय राजा, शाहजादे सुलतान खुशरो और खुरमाके समयमें सं० १६७९में वैशाख सुदी १३ को पूर्ण कराया। देवराज और उनके कुटुम्बने जिसमें मुख्य सोमजी और उनकी स्त्री राजलदेवी थी उन्होंने यह चौमुखा आदिनाथजीका मंदिर बनवाया है। देखो—

वर्णन हुइनसांगने ७वीं शदीमें किया है । तथा कुछ सुन्दर जैन मंदिर गिरनार और सेत्रुंजय पर्वतपर है। घूमलीमें जो पहले जेठवा लोगोंकी राज्यधानी थी बहुतसी खंडित प्राचीन इमारते हैं ।

(१) पालीतानाराज्य–सेत्रुंजय पर्वत–मालूम हुआ है कि सौराष्ट्रमें गोहेल सरदारोंके बसनेके पहलेसे ही जैन लोग सेत्रुंजय पर पूजा करते थे। शाहज़ादे मुरादबकूशने सन् १६५० में एक लिखित पत्रसे पालीतानेका ज़िला शांतिदास जौहरी और उसके संतानोंको दिया था। शांतिदासकी कोठीसे मुरादबख्शको युद्धके लिये रुपया दिया गया था जब वह दाराशिकोहसे आगरामें लड़ने गया था। मुगलराज्यके नष्ट होनेपर पालीताना गोहेलके सरदारोंके हाथमें आ गया जो गायकवाड़के नीचे रहते थे। यह सर्व पहाड़ धार्मिक है यहां जैन श्रावक हरवर्ष यात्रा करते हैं। यहां श्री युधिष्ठिर, भीमसेन और अर्जुन ये तीन पांडव मोक्ष प्राप्त हुए हैं व आठ कोड़ मुनि भी। इसी लिये जैन लोग पूजते हैं।

दि० जैन आगममें प्रमाण यह है–

पांडुसुआ तिण्णि जणा दविडणरिंदाण अट्ठकोडीओ ।
सेत्तुंजय गिरि सिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ ६ ॥

(प्राकृत निर्वाणकांड)

भाषा–

पांडव तीन द्रविड़ राजान । आठ कोड़ मुनि मुक्ति पमाण ।
श्री सेतुंजयगिरिके शीस । भावसहित वन्दौं जगदीश ॥ ■ ॥

(भगवतीदास कृत)

नोट--यहां जैनियोंके बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथजीने तप करके मोक्ष प्राप्त की है। श्री कृष्णके पुत्र प्रद्युम्नकुमार संबु-कुमार आदिने भी। इसके सिवाय बहुतसे और मुनियोंने। इसीलिये भारतके सब जैन लोग बड़ी भक्तिसे दर्शन पूजा करने आते हैं।

दि० जैन शास्त्रोंमें इसका प्रमाण यह है:—

णेमिसामि पजण्णो सम्बुकुमारो तहेव अणिरुद्धो।
बाहत्तरि कोडीओ उज्जंते सत्तसया सिद्धा ॥ ॥

(प्राकृत निर्वाणकांड)

भाषा—

श्री गिरनार शिखर विख्यात। कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
शंबुप्रद्युम्नकुमर दो भाय। अनुरुद्धादि नमो तसु पाय ॥

(भगवतीदास कृत)

यहां गढ़ गिरनारपर ३६ लेख हैं जो सब प्रायः सं० १२८८ के वस्तुपाल तेजपाल मंत्रियोंके हैं। नेमिनाथजी मंदिरके द्वारके दक्षिण ...क पश्चिम एक छोटे मंदिरकी भीतपर दि० जैन लेख है। न० १२ लेखके पश्चिम शब्द है।

"स० १६२२ श्री मूलसंघे श्रीहर्षकीर्ति, श्रीपद्मकीर्ति भुवनकीर्ति...."

(२) जूनागढनगर--गिरनार और दातार पहाड़ीके नीचे प्राचीनता और ऐतिहासिक सम्बन्धमें भारतवर्षमें यह अपने समान दूसरेको नहीं रखता। अपरकोटमें बढ़िया बौद्धोंकी गुफाएं हैं। तमाम खाई और उसके निकट गुफाओं व उनके ध्वंश मार्गोंसे व्याप्त है। इसमें सबसे बढ़िया खापराकोड़िया है जो पहले २ खनका मठ था। देखो—

Burgess notes of visit W. S. Hill Bombay 1869

इस सेत्रुंजय पर्वतकी चौहद्दी इस प्रकार है:—

पूर्वमें—घोघाके पास कच्छखाडी, भावनगर। उत्तरमें सिहोर और चमारड़ीकी चोटियां, उत्तर पश्चिम व पश्चिम मैदान जहांसे श्री गिरनारजी दिखता है। यहां सेत्रुञ्जय नामकी नदी भी है।

(२) गिरनार या उज्जयंत—यह मुख्यतासे जैनियोंका पवित्र पहाड़ है, परन्तु बौद्ध और हिन्दू भी मानते हैं। यह जूनागढ़के पूर्व १० मील है। ३९०० फुट ऊंचा है। चूडासामास राजाका पुराना महल और किला अभीतक बना हुआ है। यहां तीन प्रसिद्ध कुंड हैं—गौमुखी, हनुमानधोरा, कमण्डलकुण्ड। पर्वतके नीचेसे थोड़ी दूर जाकर वामनस्थली है। यह प्राचीन कालमें राज्यधानी थी तथा बिलकुल नीचे बलिस्थान है जिसको अब बिलखा कहते हैं। पर्वतका प्राचीन नाम उज्जयंत है। पर्वतके नीचे एक चट्टान है जिसमें अशोकका शिलालेख (संवतसे २५० वर्ष पहलेका) है। दूसरा लेख सन् १५० का है जिससे प्रगट है कि स्थानीय राजा रुद्रदमनने दक्षिणके राजाको हराया था। तीसरा सन ४५५ का है जिसमें लिखा है कि सुदर्शन झीलका बांध टूट गया था तथा तूफानसे नष्ट हुए पुलको फिरसे बनाया गया। देखो—

Fergusson History of India's architecture 1876 P. 230—2

पर्वतपर सबसे बडा और सबसे पुराना मंदिर श्रीनेमिनाथका है जो लेखसे सन् १२७८का बना मालूम होता है। इस मंदिरके पीछे तेजपाल वस्तुपाल दो भाइयोंका निर्मापित मंदिर है।

इमारतके नीचे १ भौंरा है जो ३९ फुटसे ४७॥ फुट है इसके ६ कमरे हैं। यह पाषाणका बना है।

नोट–इसको अच्छी तरह जांचना चाहिये।

(४) वधवान–यहां नगरके पूर्व नदी तटपर श्री महावीर-स्वामीका जैन मंदिर ११ वीं शदीका है। इसका प्राचीन नाम श्री वर्द्धमानपुर है।

(५) गोरखमढ़ी–उत्तरकी तरफसे जानेपर एक गुफाका मंदिर आता है जिसमें गोरखनाथ और मच्छेन्द्रनाथकी मूर्तियें हैं। यह गुफा ३॥ फुट लम्बी चौडी है शायद यह गिरनार पहाड़पर है।

(६) वावडियावाड़–या सुजालवेट–यहां बहुतसी ध्वंश वावडिया हैं खण्डित मकानोंकी वस्तुओं व लेखोंसे प्रगट होता है कि यह एक ऐश्वर्यशाली नगर था। इस द्वीपके खेतोंमें ४ संग-मर्मरकी मूर्तियां पड़ी हैं जिनपर नीचेके लेख हैं।

(१) सं० १३०० वर्षे वैशाख वदी ११ बुधे सहजिगपुर वास्तव्य पल्लीज्ञातीय ठ० देदाभार्या कड़ देविकुक्षि संभूत परी० महीपाल महीचन्द्र तत्सुत रतनपाल विजयपाले निज पूर्वज ठ० शंकर भार्या लक्ष्मी कुक्षि संभूतस्य संघपति मुंधिगदेवस्य निज परि-वार सहितस्य योग्य देव कुलिका सहित श्री मल्लिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चन्द्र गच्छीय श्री हरिभद्र सूरिशिष्यैः श्री यशोभद्रसूरिभिः॥ छा" मङ्गलं भवतु॥ छः

(२) संवत १३१९ वर्षे फागुण वदी ७ शनौ अनुराधा नक्षत्रेऽद्येह श्री मधुमत्यां श्री महावीर देव चैत्ये प्राग्वाट ज्ञातीय

Dr. Burgess antiquities of Cutch Kathiawar

अपर कोटमें दो कूप हैं जिनके लिये प्रसिद्ध है कि प्राचीन कालमें चूड़ासम राजाओंकी दासी कन्याओंने बनवाए थे।

"Cave temples of India by fergusson and Burgess 1880."

नामकी पुस्तकमें जूनागढ़ गिरनारके सम्बन्धमें लेख है कि नगरकी पूर्व तरफ गुफाएं देखने योग्य हैं खासकर बाबा धाराके मठकी तरफ भीतोंमें। ये गुफाएं बहुत प्राचीन कालकी हैं। मैदानमें एक चौकोर पाषाणके स्तम्भका नीचेका भाग है उसके पास एक छुटा पत्थर मिला था जिसके एक कोनेपर राजा क्षत्रपके लेखका एक भाग था यह लेख स्वामी जयदमनके पोते शायद रुद्रसिंहके समयका है जो रुद्रदमनका पुत्र था जिसका लेख राजा अशोकके लेखकी चट्टानके पीछे है। इस लेखमें केवलज्ञानी शब्द है जिससे डाक्टर बुहलरका खयाल है कि यह जैन लेख है और यह बहुत संभव है कि ये सब राजकुमार जैन धर्मसे प्रेम रखते थे।

(३) सोमनाथ-(देव पाटन, प्रभास पाटन, वेरावल पाटन या पाटन सोमनाथ) काठियावाडके दक्षिण तटपर जूनागढ़ स्टेटमें एक प्राचीन नगर है। दो नगरोंके मध्य आधी दूर जाकर समुद्रकी नोकपर एक बड़ा और प्रसिद्ध शिव मंदिर है। जो पाटनसे करीब १० मील है। उस विरावल पाटनमें एक जैन मन्दिर जुमा मसजिदके पास बाजारमें हैं जिसको मुसल्मानोंने अपना घर बना लिया है। इसके गुम्मज और खंभे खुदे हुए हैं। इसकी

(१४) कच्छ राज्य।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है–उत्तर और उत्तर पश्चिम सिन्धु, पूर्व–पालनपुर, दक्षिण–काठियावाड़ व कच्छ खाड़ी, दक्षिण पश्चिम भारतीय समुद्र।

इसमें ७६१६ वर्गमील स्थान है।

इतिहास यह है कि प्राचीनकालमें यह मिमन्दरके राज्यका भाग था पीछे शकोंके हाथमें गया। फिर पार्थियनोंने कब्जा किया। सन् १४० और ३९० के मध्यमें यहां सौराष्ट्रके क्षत्रपोंने राज्य किया फिर मगधके गुप्त राजाओंमें शामिल होगया और वल्लभी राजाओंने राज्य किया। सातवी शताब्दीमें यह सिन्धका भाग होगया।

(१) भद्रेश्वर (भद्रावती) अन्जारसे दक्षिण १४ मील समुद्र तटपर यह एक प्राचीन नगरका स्थान है। बहुतसा मसाला पत्थर बनानेके लिये हटा लिया गया है। परन्तु अब भी यहां जैन मंदिर देखने योग्य हैं। १७ वी शताब्दीमें इस मंदिरको मुसल्मानोंने लूट लिया और बहुतसी जैन तीर्थंकरोंकी मूर्तियोंको खंडित कर दिया। १२ वीं और १३ वीं शताब्दीमें यह मंदिर प्रसिद्ध यात्राका स्थान था। यह जगडूशाहका मंदिर कहलाता है। इसकी भीत और खंभोपर कुछ लेख हैं। देखो—

(Arch report W India Vol. II).

यह मंदरासे पूर्वोत्तर १२ मील है।

श्रेष्ठि आसवदेवसुत श्री सपालसुत गंधिवी वीकेन आत्मनः श्रेयार्थं श्री पार्श्वदेव विंबकारितं, चन्द्रगच्छे श्री यशोभद्रसूरीभिः प्रतिष्ठितं।

(३) स० १२७२ वर्षे ज्येष्ठ वदी २ रवौ अद्येह टिंवानके मेहरराजश्री रणसिंह प्रतिपत्तौ समस्त सन्धेन श्री महावीर बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चन्द्र गच्छीय श्री शांतिप्रभ सूरिशिष्यैः श्री हरिप्रभ सूरिभिः।

(४) सं० १३४३ माघ सुदी १० गुरौ गुर्जर प्रावाट ज्ञातीय ठ० पेथड श्रेयसे तत्सुत पाल्हणेन श्री नेमिनाथ बिम्बंकारितं प्रतिष्ठितं श्री नेमिचन्द्र सूरि शिष्य श्री नयचन्द्र सूरिभिः।

(७) वाल्ह या वूला-सोनगढ़से उत्तर १६ मील व भरमारसे पश्चिम उत्तर २२ मील। इसीका प्राचीन नाम वल्लभीपुर था (नोट जहां देवर्द्धिगण साधुने ९०० वीर सं० के अनुमान श्वेतांबर आगमोंकी रचना की थी) कुछ ध्वंश स्थान हैं। शिक्के व ताम्रपत्र मिलते हैं।

(८) तेलुजाकी गुफाएं—काठियावाड़के दक्षिण पूर्व सेत्रुंजय पहाड़ीके मुखपर तेलुगिरि नामकी पहाड़ी है। यहां बौद्धोंकी ३६ गुफाएं हैं। वर्तमानमें यहां दो नवीन जैन मंदिर हैं।

(९) द्वारिकापुरी-पोरबंदर प्टेशन उतरकर समुद्रतटसे जहाज पर थोडी दूर चलकर द्वारिका आती है टिकट ≈) है। जहाजसे उतरकर द्वारिकापुरीके स्थान मिलते हैं। यहां एक दिगम्बर जैन मंदिर है भगवान नेमिनाथजीकी प्रतिमा व चरण चिन्ह विराजमान हैं। यह श्री नेमिनाथ भगवानका जन्मस्थान प्रसिद्ध है। (देखो तीर्थयात्रादर्शक ब्र० गेबीलाल कृत)

(२) मध्यविभाग।

(१५) अहमदनगर जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है उत्तर पश्चिम और उत्तर नाशिक, उत्तर पूर्व–निजाम राज्य, पूर्व निजाम, दक्षिण पूर्व और दक्खिण पश्चिम–शोलापुर और पूना–इसमें ६५८६ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास–इस जिलेका शासन सन् ५५०से ७५७ तक बादामी जि० (बीजापुर) के पश्चिमीय चालुक्योंके हाथमें था फिर ९७३ तक राष्ट्रकूटोंके हाथमें गया फिर ११५६ तक कल्याणीके पश्चिमीय चालुक्योंने राज्य किया फिर ११८७ तक कलचूरियोंने फिर सन् १३१८ तक देवगिरि यादवोंने शासन किया। पीछे मुसल्मानोंका राज्य होगया।

मुख्य जैन प्राचीन चिह्न।

(१) पेडगांव--श्री गोडासे दक्षिण ८ मील एक ग्राम है। कर्मातसे उत्तर पश्चिम फिर पश्चिम २० मील तथा अहमदनगरसे दक्षिण ३२ मील है। यह प्राचीन स्थान है। यहां भैरवनाथका मंदिर है जो असलमें जैन मन्दिर था।

(२) मिरी तालुका नेवासा–नेवासासे पूर्व दक्षिण १८ मील यहां एक हेमादपंथी कूप ध्वंश अवस्थामें है। ग्रामसे दक्षिण पश्चिम थोड़ी दूर एक चट्टानमें एक कूआ बना है जो बहुत पुराना है यह जब पानीसे भरा नहीं होता है तब वहांका जागीरदार कहता है कि उसने एक शिलालेख देखा है पासमें जैनमूर्ति है।

(२) अंजार–भद्रेश्वरसे उत्तर पूर्व १६ मील–यह भी देखने योग्य है। यह अजमेरके राजकुमार अजयपालका स्थान है।

(३) गेद्री–रापूरके उत्तर पूर्व १६ मील–यह एक प्राचीन वैराट नगरी है। पुराने सिक्के मिलते हैं। श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर है जिसमें श्री आदीश्वरकी मूर्ति सं० १९३४ की है।

(४) कंथकोट- अंजारसे उत्तर पूर्व ३६ मील, दायसे दक्षिण पश्चिम १६ मील यहां १३ वी शताब्दीका एक जैन मंदिर है-जो अब ध्वंश होगया है। इसमें सं० १३४० का लेख है। यह श्री महावीरस्वामीका सोलखंभा मंदिर कहलाता है।

(१६) खानदेश जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है:—उत्तरमें—सतपुरा पर्वत और नर्मदा नदी, पूर्वमें बरार और नीमाड, दक्षिणमें—सातमाल, चांदोर या अजंटा पहाड़िया, दक्षिण पश्चिम—नासिक जिला। पश्चिममें बड़ौधा और रीवाकांठामें सागवाड़ा राज्य। इसमें स्थान १००४१ वर्गमील है।

इसका इतिहास यह है कि यहां १५० सन् ई०से पूर्वका शिला लेख मिला है—यहां यह दंतकथा प्रसिद्ध है कि सन् ई० से बहुत समय पहले यहां राजपूतोंका वंश राज्य करता था जिनके बड़े अवधसे आए थे। फिर अंध्रोने फिर पश्चिमी क्षत्रपोने राज्य किया। ५वी शताब्दीमें चालुक्यवंशोंने बल पकड़ा फिर स्थानीय राजा राज्य करने लगे—यहां तक कि जब इधर अलाउद्दीन आया था तब असीरगढ़के चौहान राजा राज्य करते थे।

मुख्य प्राचीन जैन चिन्ह—

(१) नंदुरबार नगर व तालुका—तापती नदीपर यह बहुत ही प्राचीन स्थान है। कन्हेरीकी गुफाके तीसरी शताब्दीके शिला-लेखमें इसका नाम नंदीगढ़ है। इसको नंद गौलीने स्थापित किया था यहां शायद कोई जैन चिन्ह मिले।

(२) तुरनमाल—तालुका तलोदा। पश्चिम खानदेश सतपुरा पहाड़ियोंकी एक पहाडी। यहां एक समय मांडूके राजाओंकी राज्यधानी थी। यह पहाड़ी ३३०० से ४००० फुट ऊंची है १६ वर्गमील स्थान है। पहाड़ीपर झील है और बहुतसे मंदिरोंके अशेष हैं। इनको लोग गोरखनाथ साधुके मंदिर कहते हैं।

(३) संगमनेर तालुका—यहां दो ताम्रपत्र मिले हैं जिसमें एक संस्कृतमें शाका ९२२ का है जिसमें यह लेख है कि सुमदासके यादवोंके महासामंत भिल्लोनाने एक दान दिया था।

(Ep. Ind. vol II part XII P. 42.)

(४) मेहेकरी—अहमद नगरसे पूर्व ६ मील एक ग्राम। यहां एक पहाड़ीके नीचे एक प्राचीन जैन मंदिर है। अहमदाबाद गैजेटियर जिल्द १७ छपा १८८४ में पृष्ठ ९९ से १०१ में जैन शिल्पियोंका हाल इस तरह दिया है।

"इनकी संख्या ३४५१ है। ये दरज़ीका काम करते हैं। जाति शैतवाल है। ये माड़वाड़से आकर बसे मालूम होते हैं। इनका रक्त क्षत्रियोंका है। इनका कुटुम्ब देवता श्री पार्श्वनाथ हैं। ये लोग स्वच्छ रहते हैं, परिश्रमी हैं, नियमसे चलनेवाले हैं तथा अतिथि सत्कार करते हैं किन्तु कुछ मायाचारी भी हैं। ये सब दिगम्बर जैन हैं। इनका धार्मिक गुरु विशालकीर्ति है जिसकी गद्दी बारसीके पास लाटूरमें है। इनके जातीय बन्धन दृढ़ हैं। ये अपने झगड़े जातीय पंचायतमें तयकर डालते हैं।"

(५) घोटान—अहमदनगरसे औरङ्गाबाद आते हुए खास सड़पर शिवगांव और पैथानके मध्यमें एक महत्व पूर्ण स्थान है। यहां ४ मंदिर हैं उनमें १ जैन है अब इसको हिंदू कर लिया गया है।

(१६) खानदेश जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है:-उत्तरमें-सतपुरा पर्वत और नर्मदा नदी, पूर्वमें वरार और नीमाड़, दक्षिणमें-सातमाल, चांदोर या अजंटा पहाड़िया, दक्षिण पश्चिम-नासिक जिला। पश्चिममें बड़ौधा और रीवाकांठामें सागवाड़ा राज्य। इसमें स्थान १००४१ वर्गमील है।

इसका इतिहास यह है कि यहां १५० सन् ई०से पूर्वका शिला लेख मिला है-यहां यह दंतकथा प्रसिद्ध है कि सन् ई० से बहुत समय पहले यहां राजपूतोंका वंश राज्य करता था जिनके बड़े अयधसे आए थे। फिर अंध्रोंने फिर पश्चिमी क्षत्रपोंने राज्य किया। ९वीं शताब्दीमें चालुक्यवंशोंने बल पकड़ा फिर स्थानीय राजा राज्य करने लगे-यहां तक कि जब इधर अलाउद्दीन आया था तब असीरगढ़के चौहान राजा राज्य करते थे।

मुख्य प्राचीन जैन चिन्ह—

(१) नंदुरबार नगर व तालुका-तापती नदीपर यह बहुत ही प्राचीन स्थान है। कन्हेरीकी गुफाके तीसरी शताब्दीके शिला-लेखमें इसका नाम नंदीगढ़ हैं। इसको नंद गौलीने स्थापित किया था यहां शायद कोई जैन चिन्ह मिले।

(२) तुरनमाल—तालुका तलोदा। पश्चिम खानदेश सतपुरा पहाड़ियोंकी एक पहाड़ी। यहां एक समय मांडूके राजाओंकी राज्यधानी थी। यह पहाड़ी ३३०० से ४००० फुट ऊंची है १६ वर्गमील स्थान है। पहाड़ीपर झील है और बहुतसे मंदिरोंके अवशेष हैं। इनको लोग गोरखनाथ साधुके मंदिर कहते हैं।

पहाड़ीकी दक्षिण ओर एक श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर है जहाँ अक्टूबरमें वार्षिक मेला होता है। धूलियासे उत्तर पश्चिम ६२ मील तलोदा है।

(३) यावलनगर-पूर्व खानदेश। सावदासे दक्षिण १२ मील। यह स्थान पहले मोटा देशी कागज बनानेमें प्रसिद्ध था।

(४) भामेर-तालुका पींपलनेर। निजामपुरसे ४ मील। पहले एक बड़ा स्थान था। पहाड़ीके सामने निजामपुरकी तरफ बहुतसी गुफाएं हैं जिनमें जाना कठिन बताया जाता है।

(Ind. Ant. Vol II P. 128 & Vol IV. P. 339)

यह भामेर धूलियासे उत्तर पश्चिम ३० मील है। यहां गांवके ऊपर पश्चिममें १ गुफा है बरामदा ७४ फुट है तीन द्वार हैं कमरा २४ से २० फुट है ४ चौखुण्टे खम्भे हैं भीतोंपर श्री पार्श्वनाथ व अन्य जैन तीर्थङ्करोंकी मूर्तियां अङ्कित हैं। गांवके बाहर दो पहाड़ियोंके पश्चिम एक साधुका स्थान है।

(५) निजामपुर-पीपलनेरसे उत्तर पूर्व १० मील--यहां बहुतसे ध्वंश स्थान हैं। एक पाषाणका जैन मन्दिर श्री पार्श्वनाथ भगवानका है जो ७५ से ५९ फुट है। यह १७ वी शताब्दीमें सूरत और आगराके मध्यमें पहला बड़ा नगर था।

(६) पाटन तथा पीतल खोरा--तालुका चालिसगांव। चालिस गांव रेल्वे स्टेशनसे दक्षिण पश्चिम १२ मील, यह एक पुराना ध्वंश नगर है। यहां १॥ मीलपर पहाड़िया हैं। यहीं पीतल खोरा गुफाएं हैं। पश्चिमकी धारा हिंदू कर लिया गया है। सीताकी न्हानी और श्रीनगर चाल मंदिरोंमें एक जैन मन्दिर है।
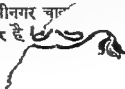
ब्राह्मण मंदिरके आगे १०० गजकी दूरीपर एक ध्वंश जैन मन्दिर है जिसके द्वारपर एक पद्मासन जिन मूर्ति है। भीतर वेदी खाली है परन्तु नक्काशीका काम अच्छा है। नागार्जुन की कोठरी नामकी जो तीसरी गुफा है जो गांवके ऊपर ही है उसमें वरामदा है भीतर गुफा है यह जैनियोंकी खुदाई हुई है इसमें बहुतसी दिगम्बर जैन मूर्तियां हैं।

नागार्जुन कोठरीका वरामदा १८ फुटसे ६ फुट है दो स्तंभ हैं। भीतरका कमरा २० फुटसे १६ फुट है। गुफाके बाहर इन्द्र इन्द्राणी वैसे ही स्थापित हैं जैसे एलूराकी गुफामें हैं। पीछेकी दीवालमें कुछ ऊंची वेदीपर एक जैनतीर्थंकरकी मूर्ति है जो एक कमलपर बिराजित है। आसनके पीछे दो हाथियोंके मस्तक अच्छे खुदे हुए हैं। आसनमें दो खड्गासन जैन मूर्तियां हैं, दो चमरेन्द्र हैं। विद्याधरादि बने हैं। प्रतिमाजीके ऊपर तीन छत्र शोभायमान है। इस प्रतिमाके थोड़े पीछे एक पद्मासन जैन मूर्ति २ फुट ऊंची है। दक्षिण भीतपर कुछ पीछे एक पूरी मनुष्यकी अवगाहनामें कायोत्सर्ग जैन मूर्ति है भामण्डल, छत्रादि सहित है।

यह गुफा एलूराकी सबसे पीछेके कालकी गुफाके समान है शायद यह ९ मी या १० मी शताब्दीकी होगी। पाटन ग्राममें कई ध्वंश मंदिर हैं जिनमें १२ वी व १३ वीं शताब्दीके देवगढ़के यादवोंके लेख हैं।

[illegible] गुफाएं—फर्दापुरसे ३॥ मील दक्षिण पश्चिम [illegible]
राज्यधानी थी। यह पहा[illegible] ३४ मील। यहां दूसरी शताब्दी पूर्वसे
१६ वर्गमील स्थान है। पहाड़ [illegible] नं० ८ से १२ तक पांच गुफाएं
अवशेष हैं। इनको लोग गोरखनाथ[illegible]

बहुत पुरानी हैं। अंधभृत्य या शतकर्णी राजाओंने दूसरी या पहली शताब्दी पहले सन ई० के बनवाई थीं। गुफा १० में सबसे प्राचीन लेख है। नासिकके लेखोंमें प्रसिद्ध वसिट्ठ पुत्रने दान किया था उसका वर्णन है। इन गुफाओंसे यह मालूम होता है कि ७०० सन् ई० तक लोग कैसे वस्त्राभूषण पहनते थे व कैसी चित्रकला थी। बौद्ध साधुओंके जीवन अधिक चित्रित हैं परन्तु ब्राह्मण और जैन साधुओंको भी दिखाया गया है। गुफा १३ वीं में दिगम्बर जैन साधुओंका एक संघ चित्रित है जिनमें केश नहीं हैं न वस्त्र हैं साथमे कुछ ऐसे भी हैं जिनके केश तथा वस्त्र हैं। नं० ३३ की गुफामें भी दाहनी तरह दिगम्बर जैन मूर्तियें हैं। यहांकी गुफा नं० १ बहुत ही सुन्दर है finest तथा नं० २ बहुत ही बढ़िया मठ है richest monastry है।

(८) परंडोल-प्राचीन नाम अरुणावती। यहां पांडववाड़ा है। जहां ९२ दि० जैन मंदिर थे। यहांसे १ अखंडित जैन प्रतिमा, लेख सहित नगरके मदिरमें विराजित है तथा एक मूर्ति जंगलसे लाकर भी जैन मंदिरमें हैं (दि० जैन डायरेक्टरी)

(१७) नासिक जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है–उत्तर और उत्तर पूर्व खानदेश, दक्षिण पूर्व--निजाम राज्य, दक्षिण -अहमदनगर, पश्चिम थाना, धरमपुर, सरगाना–इसमें ५८५० वर्ग मील स्थान है।

इसका इतिहास यह है कि सन ई० के पहले दूसरी शताब्दीसे दूसरी शताब्दी तक यह अंध्रोका राज्य था जो बौद्ध थे। उनकी राज्यधानी नासिकसे दक्षिण पूर्व ११० मीलपर पैथन थी। फिर चालुक्य, राठौर, चांदोर और देवगिरि यादवोंने सन् १२९९ तक राज्य किया- पश्चात् मुसलमानोंने कब्जा किया। इस जिलेमें प्रसिद्ध गुफाओंके मंदिर बौद्धोंके पांडुलेना नामसे हैं तथा जैनियोंके गुफाओंके मंदिर चम्भार और अंकईकी गुफाओंमें तथा इगतपुरीके पास त्रिंगलवाडीमें है। सन् ८०८में मार्कंडेय किला राष्ट्रकूट राजाओंका वास स्थान था।

इस जिलेके जैन स्मारक।

(१) अंजनेरी (अंजिनी)—नासिक नगरसे १४ मील और त्रिम्बकसे भी १४ मील है यह एक पहाडी ४२९९ फुट ऊंची इसमें ३ वर्ग मील स्थान है। ऊपरकी चट्टानमें तालाब और बगलेके ऊपर एक छोटी जैनगुफा है जिसमें एक पद्मासन जैन मूर्ति है–१ छोटा द्वार है दोनों तरफ मूर्तियें हैं–भीतर १ लम्बा बरामदा मंदिररूपमें है। नीचेकी चट्टानमें दूसरी छोटी जैन गुफा है जिसके द्वारपर ही श्री पार्श्वनाथ भगवानकी मूर्ति है। (नोट–भीतर और भी दि० जैन मूर्तियां हैं)

यहां अब एक पुजारी दिगम्बर जैनोंकी तरफसे रहता है जो पूजा करता है। अंजनेरीके नीचे कुछ बढ़िया मंदिरोंके अवशेष हैं। जो सैकड़ों वर्षोंके प्राचीन हैं। ऐसा कहाजाता है कि ये मंदिर ग्वालियरके राजा अर्थात् देवगिरी यादवोंके समयके हैं (सन् ११५० से १३०८) इनमें बहुत जानने योग्य जैनियोंके मंदिर हैं। इनमेंसे एक मंदिरमें जिसमें जैन मूर्ति भी है एक संस्कृतका लेख शाका १०६३ व सन् ११४० ई०का है जिसमें यह कथन है कि सेणचंद्र तीसरे यादवराजाके मंत्री वानीने इस चंद्रप्रभजीके मंदिरके लिये तीन दूकानें भेट की तथा एक धनी सेठ वत्सराज, बलाइद और दशरथने उसीके लिये एक घर और एक दूकान दी। शायद यह पहाड़ी इसीलिये अंजनेरी कहलाती हो कि श्री हनूमानकी माता अंजनाने यहां ही श्री हनूमानको जन्म दिया था।

(२) अंकई (तंकई)—तालुका येवला यहां दो पहाड़िया साथ २ हैं। यह मनमाड़ स्टेशनसे दक्षिण ६ मील है। ३१८२ फुट उंचाई है यहां ७ कोट किलेके हैं इस जिलेमें सबसे मजबूत किला है। तंकईकी दक्षिण तरफ सात जैन गुफाएं हैं जिनमें बढ़िया नकासी है। इन गुफाओंका वर्णन इस प्रकार है—

(१) गुफा २ खनकी खंभोंके नीचे द्वारपाल बने हैं।

(२) गुफा २ खनकी—नीचेके खनमें बरामदा २६ से १२ फुट है दोनों ओर बडे आकार एक तरफ इन्द्रहाथी पर है दूसरी ओर इन्द्राणी है इसके पीछे कमरा २९ फुट वर्ग है उसमें वेदीका कमरा है उसके द्वारपर हर तरफ १ छोटी जैन तीर्थंकरकी मूर्ति है। वेदीका कमरा १३ फुट वर्ग है वहां एक मूर्तिका आसन

है ऊपरके खनमें कमरा २० फुट वर्ग है ४ खंभे हैं। वेदीका कमरा ९से ६ फुट है भीतर एक मूर्तिका आसन है।

(३) गुफा—आगेका कमरा २९ फुटसे ९ फुट है। यहां इन्द्र और इन्द्राणी बने हैं। वेदीका कमरा २१ फुटसे २९ फुट है। इसमें ४ स्तंभ हैं। पीछेकी भीतपर हरएक तरफ पुरुषाकार कायोत्सर्ग नग्न दिगम्बर जैन मूर्ति है। बाईं तरफ श्री शांतिनाथ भगवानकी मूर्ति है मृगका चिन्ह है जिनके दोनो तरफ श्री पार्श्वनाथ खड्गासन हैं। श्री शांतिनाथजीसे इनका आकार तीसरे भाग है। शायद यह १२ वीं व १३ वीं शताब्दीकी गुफा हो।

(४) इस गुफाके बरामदेके सामने दो बडे साफ चौखुन्टे खंभे हैं हरएक ३० फुट ऊंचे हैं। इसका कमरा १८ फुट से २४ फुट है। बाएं खंभेपर एक लेख है जो पढा नहीं जाता। इसके अक्षर शायद १२ वीं व १३ वीं शताब्दीके होंगे।

दूसरी दो गुफाओंमें जो मंदिर हैं उनमें जैन तीर्थंकरकी मूर्तियें हैं। (यह दर्शनीय स्थान है)।

(३) चांदोडनगर—ता० चांदोर नासिकसे उत्तर पूर्व ३० मील व लासलगाव स्टेशनसे उत्तर १४ मील। यह नगर १ पहाडीके नीचे है जो ४००० से ४९०० फुट ऊन्ची है। इस नगरका प्राचीन नाम चन्द्रादित्यपुर शायद होगा जिसको चांदोरके यादव वंशके सस्थापक द्रीधप्रहारने वसाया था (सन् ८०१-१०७३ यादववंश) सन् १६३९ में इसको मुगलोंने ले लिया। पहाडी पर रेणुकादेवीका मंदिर और कुछ जैन गुफाएं हैं। चांदोर किलेकी

चट्टानमें जो जैन गुफा है उसमें भी जैन तीर्थंकरोंकी मूर्तियां हैं उनमें मुख्य श्री चन्द्रप्रभ भगवानकी हैं।

(४) त्रिंगलवाडी–तालुका इगतपुरी--इगतपुरीसे ६ मील। बम्बईसे इगतपुरी ८५ मील है। पहाडीके सिरेपर त्रिंगलवाडी गाव है। पहाडीके नीचे १ जैन गुफा है जो पहले बहुत सुन्दर गुफा थी। इसमें बडा कमरा ३५ फुट वर्ग है भीतरका कमरा व वेदीका कमरा भी है। द्वारके सामने बरामदेकी छतके मध्यमें ५ मनुष्योंके आकार गुफाईमें खुदे हुए हैं मध्यकी मूर्तिको हरएक दोनों तरफ मदद दिये हुए हैं जब कि दो और नीचेको मदद दे रहे हैं द्वारके ऊपर मध्यमें जिनमूर्ति है। कमरेके भीतर उनके चार चौखूटे खंभे हैं। द्वारके ऊपर एक जिन मूर्ति तथा चौखटके ऊपर तीन जिन मूर्तियें हैं। वेदीके कमरेमें जो बहुत स्वच्छ तथा १३ से १२ फुट है वेदीके ऊपर भीतके सहारे एक पुरुषाकार जैन मूर्ति है। छाती, मस्तक और छत्र गिर गए हैं पग और आसन रह गए हैं। आसनके मध्यमें वृषभका चिन्ह है जिससे प्रगट है कि यह श्रीरिषभदेवकी मूर्ति है। इसके दोनों ओर लेख है जिसमें संवत १२६६ है। गुफाके उत्तरकोनेमें भीत पर एक बहुत सुन्दर लेख था। अब उसका थोडासा भाग बच गया है। गुफाका अग्र भाग व द्वारके भाग पहले चित्रित थे जिसके चिन्ह अवशेष हैं।

(५) नासिकनगर–बम्बईसे १०७ मील––

यहां देखने योग्य स्थान हैं (१) दसहरा मैदान–शहरसे दक्षिण पूर्व ॥ मील (२) पंचवटीके पूर्व १ मीलके अनुमान तपो-

वन जिसमें गुफाएं हैं व रामचंद्रजीका मंदिर है। (३) पश्चिमकी तरफ ६ मील गोवर्द्धन या गङ्गापुरकी प्राचीन वस्ती जहां वहुत सुन्दर पानीका झरना है। (४) जैन चंभार लेन गुफाएं (यही श्री गजपंथजी तीर्थ है) (५) पांडु लेना या बौद्धोंकी गुफाएं-ये एक पहाड़ीमें हैं। बम्बईकी सड़कके निकट। इनको शिलालेखोंमें त्रिरश्म कहा गया है। ये बौद्ध गुफाएं सन् ई० २५० वर्ष पूर्वसे ६०० ई० तककी हैं। इनमें बहुतसे शिलालेख अन्ध्रों, क्षत्रपों व दूसरे वंशोंके हैं। पश्चिमीय भारतमें ये लेख मुख्य हैं व इनसे प्राचीन इतिहासका पता चलता है। इन्हीं पांडु लेना गुफाओंमें नं० ११ की जो गुफा है उसमें नीलवर्णकी श्री रिषभदेवकी जैन मूर्ति विराजित है। पद्मासन २ फुट ३ इन्च ऊंची है। मालूम होता है ११ वीं शताब्दीमें दि० जैनोंका यहां प्रभुत्व था। (नासिक गजेटियर नं० सोलह सफा ५८१) (नोट-भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी बम्बईको इस गुफाकी रक्षा करनी चाहिये)।

इसी गजटियरके सफा ५३५ में है कि ११ वीं व १२ वीं शताब्दीमें नासिक जैनधर्मके महत्वमे व्याप्त था। इस नासिकका प्राचीन नाम पद्मनगर और जनस्थान था। यही वह स्थान है जहां सुवर्णनखा खरदूषणकी स्त्रीका मिलाप श्री रामचंद्रजीसे हुआ था। प्राचीन कालमें यहां श्री चन्द्रप्रभु भगवानका जैन मंदिर था जिसको अब कुन्तीविहार कहते हैं।

(६) **चंभार लेना या श्री गजपंथा तीर्थ**—नासिकनगरसे ५ या ६ मील एक पहाड़ी है जो ६०० फुट ऊंची है ऊपर जानेको १७३ सीढ़िया बनी हैं। यहां प्राचीन जैन गुफाएं हैं अब भी

दि० जैन लोग इसको सिद्धक्षेत्र मानकर पूजने जाते हैं। उनके शास्त्रोंका प्रमाण इस भांति है।

संत्ते जे बलभद्दा जदुवणरिंदाण अट्टकोडीओ।
गजपंथे गिरिसिहरे णिव्वाण गयाणमोतेसिं ॥७॥

(प्राकृत निर्वाणकंड)

भाषा

जे बलिभद्र मुक्तिको गए। आठ कोड़ि मुनि और हु भये।
श्री गजपंथ शिषर सुविशाल। तिनके चरण नमो तिहुंकाल ॥

(निर्वाणकांड भगवतीदास)

(७) सिन्नार–सिन्नार तालुका–नासिकसे दक्षिण २० मील। शहरसे एक मील पूर्व खेतोंमें एक छोटा हेमाडपंथी मंदिर है जो कुछ ध्वंश होगया है इसके पूर्वीय द्वारके ठीक बाहर एक कुएंके पास दो पुरुषाकार जैनमूर्तियें हैं।

(८) मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र–इसी मनमाड नासिक जिलेमें मनमाड (G. I. P.) स्टेशनसे करीब ९० मील यह सिद्धक्षेत्र है। दो पर्वत साथमें जुड़े हैं। दोनों पर्वतों पर पांच छः गुफाओंमें प्राचीन दि० जैन मूर्तियां हैं–पर्वतपर बलदेवजी कृष्णजीके भाईने तप किया था उनका स्थान है तथा कृष्णजीकी दाह क्रिया यहीं हुई है उसका भी स्थान है। यहांसे श्री रामचन्द्रजी, हनुमानजी, सुग्रीवजी, गवयजी, गवाक्षजी, नीलजी और महानीलजी तथा निनानवेकरोड़ अन्य साधु गत चतुर्थकालमें मुक्ति पधारे हैं।

गाथा—

रामहणू सुग्गीओ गवय गवाक्खोय णील महणीलो ।
णवणवदी कोडीओ तुणगीगिरि णिव्वुदेवंदे ॥

(प्राकृत निर्वाणकांड)

रामहनू सुग्रीव सुडील, गव गवाख्य नील महानील ।
कोड निनानवे मुक्ति प्रमाण, तुणगीगिरि वंदोधरिध्यान ॥

(निर्वाणकांड भाषा)

पर्वतके नीचे दि० जैन मंदिर व धर्मशालाएं हैं । कार्तिक सुदी १५ को मेला होता है । मुनीम रहता है—

नासिक नगरका वर्णन आराधना कथा कोश ब्र० नेमिदत्तकृत नागदत्ताकी कथामें आया है (नं० ९१में)

आभीराख्य महादेशे नाशक्य नगरेवरे ।
वणिक सागरदत्तो भूत्रागदत्ता च तत्प्रिया ॥

(१८) पूना जिला ।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है। उत्तरमें अहमदनगर, पूर्वमें अहमदनगर और शोलापुर। दक्षिणमें नीर नदी, पश्चिममें कोलाबा।

इसमें ५३४९ वर्ग मील स्थान है।

इसका इतिहास यह है कि इतिहासके पूर्व समयमें यह दंडकवनका एक भाग था। बहुत प्राचीन समयमें यह व्यापारका मुख्य मार्ग था। बोरघाट और नाना घाटियोंपर होकर कोंकनको माल जाता था। इसके बहुत प्रमाण उन लेखोंमें हैं जो पहाड़में खुदे हुए भाजा, बेड़सा, कारली और नानाकी घाटियोंमें हैं।

(१) जुन्नार–पूनासे उत्तर पश्चिम ५६ मील। एक प्राचीन स्थान है। सन ई० के १०० वर्ष पहले अन्ध्रराना राज्य करते थे। बेडसामें एक लेखसे मरहठोंका सबसे प्राचीन नाम मिलता है। यहां पश्चिमी चालुक्योंने ५५०से ७६० ई०तक, राष्ट्रकूटोंने ७६० से ९७३ तक फिर पश्चिमी चालुक्योंने ९७३ से ११८४ तक फिर देवगिरिके यादवोंने १३४० तक राज्य किया पीछे मुसल्मानोंने कब्जा कर लिया।

(२) बेड़सा–ता० मावल, खंडाला स्टेशनसे दक्षिण पश्चिम ९ मील एक ग्राम है–यहां पहली शताब्दीकी गुफाएं हैं। सुपाई पहाडियां ३००० फुट ऊंची हैं मैदानके ऊपर दो खास गुफाएं हैं एक गुफामें द्वारके ऊपर यह लेख है " नासिकके आनन्द सेठीके पुत्र पुस्यन्कका दान" बड़ी कोठरीके ऊपर एक कूएंके पास दूसरा लेख है "महाभोजकी कन्या सामनिकाका धार्मिक दान" यह सामनिका अपदेयमरूकी स्त्री महादेवी महारथिनी थी। यह लेख इसलिये

बहुत ही उपयोगी है कि इसमें सबसे पहले शब्द महारथ आया है।

(३) भांजा—मावल ता० में एक ग्राम, खड़कालासे दक्षिण पश्चिम ७ मील। ग्रामके ऊपर ४०० फुट ऊंची पहाडी है इसकी पश्चिम ओर पहली शताब्दी पहलेकी १८ बौद्ध गुफाएं हैं। बारहवीं गुफामें जो ९९से २९.फुट है प्रसिद्ध कारीगरी है। यहां कई लेख हैं।

(४) भवसारी—(भोजपुर)—हवेली तालुका। पूना शहरसे उत्तर ८ मील। यहां बड़े २ पाषाणोंमें योद्धाओंकी मूर्तियें खुदी हैं—यह ८९० ई०से पुराना है।

(५) कारली—ता० मावल। पूनासे बम्बई सड़कपर एक ग्राम कारलीसे ३॥ मील और लोनौली स्टेशनसे ९ मील प्रसिद्ध गुफाएं हैं। एक बहुत बड़ा और पूर्ण चैत्य है यह बहुत पवित्र है। तथा महाराज भूति या देवदत्त (सन् ई० से ७८ वर्ष पहले) द्वारा खोदा गया था। ऐसा लेखसे प्रगट है। देखने योग्य है—

(६) शिवनेर--जुन्नार ता का पहाड़ी किला, पूना शहरसे उत्तर ९६ मील। यह स्थान पहलीसे तीसरी शताब्दी तक बौद्धोंका मुख्य स्थान रहा है। यहां ५० कोठरियां व मठ हैं।

(७) वामचन्द्र गुफा—पूनासे उत्तर पश्चिम २९ मील। वामचंद्र ग्रामके बाहर एक चट्टानमें मंदिर है तथा दो मंदिरोंकी खुदाईका प्रारम्भ है। यह शायद जैन गुफा ही है। अब इसमें लिंग स्थापित है।

नोट—पूनाके वर्णनमें खास जन स्मारकका नाम कहीं नहीं मिला परन्तु ऊपर दिये हुए स्थानोंमें खोज करनेसे शायद कोई चिन्ह मिल सकें।

(१९) सतारा जिला

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है। उत्तर भोर और फलटन राज्य, और नीरा नदी, पूर्वमें शोलापुर, दक्षिण वारण नदी, कोल्हापुर और सांगली, पश्चिम पश्चिमीय घाट, कोलाबा और रत्नागिरी जिला।

यहां ४८२५ वर्ग मील स्थान है।

इस ज़िलेका इतिहास यह है कि यहां सन् ई०से २०० वर्ष पूर्वसे २०८ ई० तक शतवाहन राजाओंने राज्य किया फिर इनकी कोल्हापुर शाखाने चौथी शताब्दि तक फिर पश्चिमीय चालुक्योंने ५५० से ७६० तक फिर राष्ट्रकूटोंने ९७३ तक फिर पश्चिम चालुक्योंने और उनके नीचे कोल्हापुरके शिलाहारोंने ११९० तक फिर देवगिरीके यादवोंने १३०० तक पश्चात् मुसलमानोंने अधिकार किया।

यहां करादके पास, तामगांवमें मोसा पर वाईके पास, माल तालुकमें मालादरीमें, कुंडल, पाटन, पटेश्वरमें बौद्ध और ब्राह्मण गुफाएं हैं।

(१) करादनगर-सतारानगरसे दक्षिण पश्चिम ३१ मील और कराद रेल्वे स्टे०से दक्षिण पश्चिम ४ मील। दक्षिण पश्चिमसे करीब ३ मील यहां ५४ बौद्ध गुफाएं हैं।

(२) वाई-महाबलेश्वरके पूर्व १९ मील और सतारानगरसे दक्षिण पश्चिम २० मील। यहां पास लोहारी ग्राममें कुछ बौद्ध गुफाएं हैं।

(३) धूमलवाड़ी—सतारारोड रेलवे स्टेशनके निकट—तालुका कोरेगांव यहां एक गुफा है। जिसमें श्री पार्श्वनाथ भगवानकी मूर्ति २॥ फुट ऊंची है मस्तक खंडित है। गुफामें पानी भरा रहता है। पहाड़ीपर आधी दूर जाकर एक खुदाई है जिसको खंभटोंक कहते हैं। एक गुफाका मंदिर है। मट्टी और पानीसे भरी है। पहाड़ीपर पुराने किलेके ध्वंश हैं।

इम्पीरियल गजटियर बम्बई प्रांत भाग १ (सन १९०९) सफा ५३९ पर लिखा है।

"The Jains in Satara dist represent a survival of early Jainism, which was once the religion of the rulers of the Kingdom of carnatec."

भावार्थ—सतारा जिलेके जैनी प्राचीन जैनधर्मके अस्तित्वको बताते हैं। जो कर्नाटकके राजाओंका धर्म था।

(४) फलटन—नगरमें एक २००० वर्षका प्राचीन पाषाण जिन मंदिर है, नग्न मूर्तियां अंकित हैं। अभी महादेव पधरा दिये गए हैं जिनको जगेश्वर महादेव कहते हैं।

(२०) शोलापुर जिला ।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है-उत्तरमें अहमदनगर, पूर्वमें निजाम राज्य, अकलकोट राज्य, दक्षिणमें बीजापुर और मिरज, पश्चिममें औंधराज्य, सतारा, फलटन, पूना, अहमदनगर ।

यहां स्थान ४५४१ वर्गमील है ।

यहां सन् ई० से ९० वर्ष पहलेसे लेकर २३० ई० तक शतवाहन या अंध्रवंशने राज्य किया। जिनकी राज्यधानी गोदावरीपर पैथनपर थी जो शोलापुर नगरसे उत्तर-पश्चिम १५० मील है । मुसल्मानोंके दखलके पहले यहां क्रमसे चालुक्य, राष्ट्र, पश्चिम चालुक्य व देवगिरि यादवोंने राज्य किया था ।

यादवोंके समयकी कारीगरी बावी, मोहाल, मालसिरस, नातेपुते, वेलापुर, पंढरपुर, पुलमेन, कुंडलगांव, कासेगांव तथा मारडेके हेमदपंथी मंदिरोंमें पाई जाती है ।

(१) वेलापुर-पंढरपुरसे २२ मील ग्रामके मध्यमें सर्कारवाड़ा प्राचीन मंदिर चालुक्योंके ढंगका है। यह जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथ भगवानका है । द्वारके ऊपर आलेमें एक जैनमूर्ति है । मंडपकी छतमें चार खुदे हुए स्तम्भ हैं ।

(२) दहीगांव-दिकसाल स्टे० से २२ मील । यहां श्री महावीरस्वामीके मंदिर हैं अनेक प्रतिमाएं हैं यहां महतीसागर ब्रह्मचारी होगए हैं उनका समाधिमरणका स्थान है । जैन लोग वार्षिक

(३) दक्षिण भाग।

(२१) बेलगाम जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है–

उत्तर–मीरज और जथका राज्य, उत्तर पूर्व बीजापुर, पूर्व–जमखंडी, मुघल, कोल्हापुर और रामदुर्ग राज्य दक्षिण व दक्षिण पश्चिम–धाड़वाड़ और उत्तरकनड़ा, कोल्हापुर और गोआ, पश्चिम सावंतवाड़ी और कोल्हापुर राज्य॥

इसमें ४६४९ वर्गमील स्थान है।

इस जिलेमें रिश्ना, घटप्रभा और मलप्रभा मुख्य नदियें हैं।

इतिहास–यहां सबसे प्राचीन स्थान हालसी है। जो नौ कादम्ब राजाओंकी राज्यधानी है। ७ ताम्रपत्र मिले हैं। प्राचीन चालुक्योंने ५५०से ६१०तक, फिर पश्चिमी चालुक्योंने ७६० तक, फिर १२५० तक राष्ट्रकूटोंने जिनकी शक्ति राष्ट्र महामंडलेश्वरोंमें जीवित रही जिन्होंने सन् ८७५ से १२५० तक राज्य किया। इनकी राज्यधानी पहले सौन्दत्ती थी तथा सन् १२१०में वेणुग्राम या बेलगाम हो गई। १२वीं और १३वीं शताब्दीके प्रारम्भमें गोआके कादम्ब राजाओंने सन् ९८० से १२५० तक हालसी जिलेके भाग और वेणुग्राम पर राज्य किया। तीसरे होनाल राजा विष्णुवर्द्धन या विट्टिदेवने (सन् ११०३–४१) हानगोके

१ भागको युद्धकी लूटमें लेलिया। राट्ट राजाओंने गोआको सन् १२०८ में अधिकारमें लिया। राट्टोंका अंतिम राजा लक्ष्मीदास हि० हुआ जिसको देवगिरि यादव सिंघन द्वि०के मंत्री और सेनापति याचनने परास्त किया फिर १३२०में दिहलीके मुसल्मान बादशाहोंने अधिकार किया।

जैन मंदिरोंका महत्त्व-जो यहां जखनाचार्य्यके नामसे मंदिर इधरउधर छितरे हुए पाए जाते हैं वे वास्तवमें चालुक्य राजाओंके हैं। उनमेंसे एक बहुत ही सुन्दर देगानवेमें हैं। कोन्नूरमें इतिहासके पहलेके समाधिस्थान हैं। बहुतसे मंदिर ११, १२ व १३ शताब्दीके जो इस जिलेमें फैले पड़े हैं वे असलमें जैन लोगोंके थे किन्तु उनको लिंग या शिव मंदिरोंमें बदल दिया गया है। उन जैन मंदिरोंमें जो बहुत प्रसिद्ध हैं वे नीचे स्थानोंपर हैं।

(१) बेलगामका किला (२) संपगाव ता० के देगानवे, बावकुंड, नेसार्गी (३) पारसगढ़ ता० केहुली, मनोली, येकम्मा (४) चीकोड़ी ता० शंखेश्वर (५) अथनी ता० के रामतीर्थ और नांदगांव।

जैनोंका महत्त्व—यहां बहुत जैन किसान और मजदूर हैं। जिससे यह विदित होता है कि प्राचीन कालमें इस बम्बई कर्णाटकमें जैन धर्मकी बहुत श्रेष्ठता थी—

(Then a e numurous cultivator and labourers indi cating the former supremacy of the Jain religion in Bombay Carnatic)

वेलगाम गजटियर जिल्द २१ (सन् १८८४) से जो विशेष इतिहास प्रगट हुआ है वह इस तरह पर है। इस वेलगाम जिलेमें सबसे प्राचीन स्थान पालसिगे, हालासिगे या हालसी पर है जो खानापुरसे दक्षिण पूर्व १० मील व बेलगामसे दक्षिण २३ मील है। हाल्सीसे करीब ३ मील पर जो ७ ताम्रपत्र मिले हैं उनसे विदित होता है कि ५वीं शताब्दिके करीब यह नौकादम्ब राजाओंकी राज्यधानी था। प्राय ये सबही प्राचीन कादम्बोंके ताम्रपत्र प्रारंभ और अतमें जैन मंगलाचरणको प्रगट करते हैं और सिवाय एक ताम्रपत्रके जो एक साधारण मनुष्यको भूमिदानके सम्बन्धमें है शेष सब ताम्रपत्र जैन धर्मकी वृद्धिके लिये भूमि या ग्रामोंके दानके सम्बन्धमें हैं। पाच ताम्रपत्रोंमें पालासिग या हालसीका नाम है। एक बताता है कि हालसीमें जैन मंदिर बनाया गया।

वेलगाममें जिन राट्टोने राज्य किया था (सन् ८५० से १२५० तक) वे अपना सम्बन्ध राष्ट्रकूट राजा कृष्ण द्वि० (सन् ८७५ से ९११)से बताते हैं। ये राट्टराजा जैन धर्मके माननेवाले थे।

इनकी उपाधि थी। लाट्टनूर पुरवर आधीश्वर अर्थात् लाट्टनूरके राजा जो सब नगरोंमें प्रधान नगर था। राट्ट वंशका कुलवृक्ष इस प्रकार है—

मेराड
|
पृथ्वीवर्मा (शाका ७९७ या ई० ८००)
|
पिट्टुग स्त्री नीजीदव्वे
|
शांति या शांतिवर्मा (शाका ९०२ या ई० ९८०
| स्त्री चांदी कव्वे
नन्न
|
कार्तवियना प्रथम या कत्त शा० ९६०
|
दवारी या दावुम — कन्नकैर प्रथम या कन्न प्रथम
|
परग — अंक (शा० ९७० या ई० १०४८)
|
शेन प्रथम या कालसेन प्र० स्त्री मैललदेवी
|
कन्नकैर द्वि० शा० १००४ या ८ — कार्तवीर्य द्वि० या कत्त द्वि० (शा० १०१० या १०१०) स्त्री भागलदेवी
|
शेन द्वि० या कालसेन द्वि० स्त्री लक्ष्मीदेवी शा० १०५०
|
कत्तम तृ० या कार्तवीर्य्य तृ० (स्त्री पद्मलदेवी शा० १०८६)
|
लक्ष्मण या लक्ष्मीदेव प्रथम (शा० ११३० या सन् १२०८)
स्त्री चंचलादेवी
|
कार्तवीर्य्य चतुर्थ (शा० ११२४से ४१ स्त्री पद्मलादेवी — मल्लिकार्जुन (शा० ११२३ से ११३० सन् १२०१ या १२०८)
|
लक्ष्मीदेव द्वि० (शा० ११५० या सन् १२२८)

नोट—मेराड या उसके पुत्र पृथ्वीवर्मा असलमें पवित्र मैला-पतीथकी जैनकारेय जातिके आचार्य या गुरु थे (नोट मेलापतीर्थ कहा यह कारेय जाति कहा है, पता लगाना चाहिये)।

राष्ट्रकूष्ट राजा कृष्ण द्वि० ने पृथ्वीवर्माको महासामन्त या महामण्डलेश्वरकी उपाधि दी थी। सौन्दत्तीमें जो शिलालेख सन ९८० (शाका ९०२) का पाया गया है वह लिखता है कि राजा शांतिवर्माने सौन्दत्तीमें एक जैन मन्दिरके लिये भूमि प्रदान की थी। और उसीमें यह भी लेख है हरएक तेलकी चक्की चलानेवाला दीपावलीके उत्सवके लिये एक सेर तेल देगा। लक्ष्मीदेव प्रथमकी रानी चन्दलादेवी या चंद्रिकादेवी थी इसके नामको प्रगट करनेवाला एक शिलालेख सम्पगांवसे उत्तर पश्चिम ६ मील हन्निकेरी पर है—यह लेख कहता है कि राष्ट्रोंने अपनी राज्यधानी सौन्दत्तीसे वेणुग्राम या बेलगाममें बदली।

मुख्य स्थान।

(१) बेलगामशहर व किला—यहांका किला १०० एकड़ करीन भूमिमें है। इस किलेपर जब इंग्रेजोंने अधिकार किया तब वहां १० जैन कुटुम्ब रहते थे। इस किलेमें अब तीन जैन मंदिर हैं जो करीन १२०० सनके हैं—

नोट—इनमेंसे एक बहुत बढ़िया कारीगरीका है इसका हमने ता० २९ मई १९२३ को दर्शन किया है। छतोंपर कमलोंके आकार व खंभोंमें बेलें बहुत अपूर्व हैं। इस मंदिरको कमलबस्ती कहते हैं। चौकमें ७२ जिन प्रतिमाएं छतके वहां हैं उनमें २४ पद्मासन २४ मंदिरोंके आकारोंमें हैं—यह चौक १४ खम्भोंके

इन खंभोंमें पालिश बहुत चमकदार है—द्वार पर देवताओंके चित्र बीचमें पद्मासनजैनमूर्ति है। भीतर भी वेदीके बाहर कमल, भीतर कमल, वेदीके पीछे दो हाथी ऊपर दो सिंह २४ चिन्ह-य यहां बहुतसे कमल हैं-एकएकके भीतर कई कमल हैं। यहांकी पत्थरकी कारीगरी आबूजीके जिन मंदिरोंकी कारीगरीसे मिलती है। यहां जो मूलनायक श्री नेमिनाथजीकी बड़ी मूर्ति थी वह बेलगाम शहरकी बड़ी वस्तीमें विराजित है। वर्ण कृष्ण है—यह मंदिर देखने योग्य है—दूसरी चतुर्भुज वस्ती है। इन तीन मंदिरोंके सिवाय इस किलेमें और भी मंदिर थे क्योंकि किलेके बाहर और भीतर जो अब घर हैं उनमें द्वारके खंभे जो लगे हैं वे जैनमंदिरोंके लगे हैं। सन १८८४ में दो बहुत ही सुन्दर नक्काशीके पत्थर एक बागमें खोदनेपर निकले थे—इसी शताब्दीमें दो राट्ट राजाओंके शिलालेख किलेके मंदिरोंसे पाए गए हैं वे बम्बई रायल एसियाटिक सोसायटीको दे दिये गए हैं। यह प्राचीन कनड़ी भाषामें हैं। इनमेंसे एकमें राष्ट्रकूट या राट्ट वंशीय महाराज शेनद्वि०का नाम है—वंशावली कार्तवीर्य्य चतुर्थ और मल्लिकार्जुन तक गई है जो करीब ११९९ से १२१८ तक यहां राज्य करते थे। तब एक बीचा राजाका और उसके पुत्रोंका वर्णन है। फिर यह लेख कहता है कि सन् १२०५ या शाका ११२७ में पौषसुदी २ के दिन नव राज्यधानी वेणुग्राममें कार्तिवर्मा और मल्लिकार्जुन राज्य कर रहे थे तब श्रीयुत शुभचन्द्र भट्टारककी सेवामें राजा बीचाके बनाए गए राट्टोंके जैन मंदिरके लिये भूमि दान किये गये थे—जो भूमि दी गई थी वे करवड्डी ज़िलेमें

ममूरवानी ग्राममें हैं। दूसरा शिलालेख उन्हीं ऐतिहासिक बातोंको प्रगट करता हुआ इसी मंदिरके लिये उसी दिन उन्हीं शुभचन्द्र भट्टारककी सेवामें दूसरी भूमियोंके दानको कहता है जो बेलगाममें थीं इसमें कार्तवीर्यकी स्त्रीका नाम पद्मावती है। इस किलेके विषयमें यह प्रसिद्ध है कि इसको जैन राजाने बनवाया था।

(नोट—बेलगामके जैनियोंसे मालूम हुआ कि एक दफे कोई जैन मुनिसंघ वेणुग्राममें आया था—तब खबर पाकर राजा और पञ्चलोग रात्रिको ही मशालें जलाकर दर्शन करनेके लिये गए। मुनि सब ध्यानस्थ मौन थे पीछे लौटते हुए अन्तमें जो मशालवाला था उसकी मशालकी लौ किसी बांससे लग गई। इस बातपर किसीने ध्यान न दिया सब चले आए वह आग बढ़ती हुई फैल गई और जिन बांसोंके मध्यमें मुनि गण ध्यान कर रहे थे वहां तक फैल गई और उसने ध्यानस्थ मुनियोंके शरीरोंको दग्ध कर दिया। मुनियोंने ध्यान नही छोड़ा। दूसरे दिन जब यह खबर प्रगट हुई तो महान शोक व दुःख हुआ। इस प्रमादके दोषके मिटानेके लिये राजा और पंचोंने यह प्रायश्चित लिया कि १०८ जैन मंदिर बनवाए जावें। कहते हैं इस किलेमें १०८जिन मंदिर छोटे या बड़े बनवाए गए थे। बेलगाममें अब भी बहुत जैनी हैं व कई जैन मंदिर हैं। इस किलेकी कमलवस्तीमें एक प्रतिमा विराजित है जिसकी सेवा पूजा श्रीयुत देवेन्द्र लोकप्पा चौगुले लकड़ीके व्यापारी बेलगाम फोर्ट करते हैं।

(Indian antiquary V. IV P. 34) में

बेलगाम शहरके सम्बंधमें लिखा है कि प्राचीन बेलगामको जैन राजाने बसाया था। जैनकवि परसिज भवनंदन बेलगाम

निवासीने पुरानी कनडीमें एक यहाके राजाओंका इतिहास लिखा है उससे मालूम हुआ कि शाहपुर और बेलगामको जीर्ण शीतपुर कहते थे। यहा सामंतपट्टन नगरके अधिपति जैनोराजा कुन्तमराय रहते थे जो बडे धर्मात्मा तथा दयावान थे। इनके राज्यमें सब लोग प्रसन्न थे। एक दिन एकसौ आठ १०८ जैन साधु अनगोदू (जो हल्लगिरिका प्राचीन नाम था)के वनमें दक्षिणसे आए और रात्रिको ध्यानस्थ बैठे। राजा कुन्तमराय अपनी रानी गुणवतीके साथ रात्रिको ही वदनाके लिए गए। मसालोंकी लपटोंसे वनमें अग्नि लग गई वे साधु ध्यानसे न उठे अग्निमें ही दग्ध होगए। इसलिये राजाने यह व्रत लिया कि १०८ जैन मदिर बनवाऊगा। जहा किलेमें अब कुछ जैन मदिर पाएजाते हैं वही उसने १०८ मदिर बनवाए। उसकी स्त्री गर्भस्था थी उसने बेलगामका नाम वसपुर रक्खा।

कुछ काल पीछे बेलगाममें सावतवडीका राजा कुन्तमका पुत्र शात बहुत प्रसिद्ध हुआ। यह जैनधर्मका पंडित था, बहुत वीर तथा जैन साधुओंका रक्षक था। इसने जैन मदिरोंमें बहुत धन लगाया। इसकी चौदह स्त्रियें थीं उनमें मुख्य पद्मावती थी जो बहुत प्रसिद्ध थी इसके पुत्रका नाम अनन्तवीर्य था। शात एक दफे यातूरके पास सुदर्शन नदीमें स्नान करनेको गया वहा फिसली गिरनेसे मरणको प्राप्त हुआ। तब मन्त्रियोंने अनतवीर्यको राजा स्थापित किया। कुछ काल पीछे इसी वशमें राजा मल्लिकार्जुन हुआ। इसीके समयमें प्रसिद्ध मुसल्मान असदखाने कपटसे बेलगामका राज्य ले लिया और १०८ मदिरोंको ध्वश करके किला बनाया।

(२) हालसी-(हलसिगे) ग्राम, ता० खानापुर, खानापुरसे दक्षिण पूर्व १०मील। हालसी एक बहुत प्राचीन स्थान पर है जो पूर्व समयके कादम्बों (सन ई० ५००) का मुख्यस्थान था तथा गोआके कुटुम्बोंका छोटा राज्यस्थान था जिन्होंने ९८०से १२५२ तक राज्य किया। यहांके सब ताम्रपत्र कादम्ब राजाओंके प्राचीन वंशको प्रगट करते हैं जो जैनी थे व जिनकी राज्यधानी बनवासी और हालसीमें थी। यहां सन् १८६० में ६ ताम्रपत्र एक टीलेमें मिले थे जो चक्रतीर्थके कूएके पास हैं जो हालसीसे उत्तर ३ मील नांदगढ़की सडकपर है। ये सब ५वीं शताब्दीके हैं और सब जैन कादम्ब राजाओंकी वंशावलीको प्रगट करते है।

(३) होंगल (वेल होंगल) ग्राम ता० साम्पगांव-यहांसे पूर्व ६ मील ग्रामके उत्तर १ प्राचीन जैन मन्दिर है जिसको अब लिंग मंदिर बदल लिया गया। इसमें १२ वीं शताब्दीके दो लेख है। इनमेंसे एक लेखमें ता० ११६४ है। राज्य, राष्ट सर्दार कार्तवीर्य (११४३-११६४)-इसमें १ जैन मंदिरके बनने व उसको भूमि देनेका वर्णन है। इस शिला लेखके ऊपर मध्यमें पद्मासन श्री जिनेन्द्रकी मूर्ति है। उसकी दाहनी तरफ एक खड-गासन मूर्ति है ऊपर चन्द्रमा है और बाई तरफ १ गाय और बछड़ा है ऊपर सूर्य है।

(Indian antiquary IV 115 Fleet's Kanarese dynasties 82.)

हागलके शिला लेखमेंसे Ind. Ant. X P. 249. से बनवासीके कादम्ब वंशकी वंशावली वंशस्थापक मयूरभंजसे दी जाती है।

नं० १ मयूरभंज प्रथम
|
२ कृष्णवर्मा
|
३ नागवर्मा प्र०
|
४ विष्णुवर्मा
|
५ मृगवर्मा
|
६ सत्यवर्मा
|
७ विजयवर्मा
|
८ जयवर्मा प्र०
|
९ नागवर्मा द्वि०
|
१० शांतवर्मा प्र०
|
११ कीर्तिवर्मा प्र०
|

१२ आदित्यवर्मा
१३ चट्टप, या चट्टया या चाट्टुग
१४ जयवर्मा द्वि० या जयसिंह
मायली
तैल या तैलप प्र०
कीर्तिवर्मा द्वि० या कीर्तिदेव
तैलनसिंह शा० ९९०-९९९
शांतिवर्मा द्वि० या शांत, शातप
शा० १०१०
तैल द्वि० शा० १०२१-१०७२
तैलम
चौकी
या
जाकी
विक्रम
या
विक्रमांक
कीर्तिदेव द्वि०
कामदेव या तौलमन अंकका
शा० ११०३-१११८
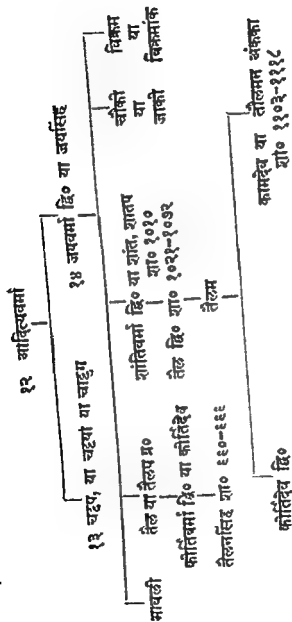
(४) हुली–ग्राम ता० पारसगढ। सौन्दत्तीसे पूर्व ५ मील। यहां खास देखने योग्य एक सुन्दर किन्तु ध्वंश मंदिर पंचलिंगदेवका है। यह असलमें जैन मंदिर था भीतर एक लिंगायत मूर्ति नाग मूर्ति व गणपति विराजित है। जो शायद दूसरे मंदिरोंसे लाकर विराजित किये गए हैं। यहां तीन शिला लेख हैं दो पश्चिमी चालुक्य राज्य विक्रमादित्य द्वि० (१०१८-४८) और सोमेश्वर (१०६९-७५) को बताते हैं व तीसरा कालाचूरी बल्लाल (सन् ११५५–११७७) को बताता है।

(५) कोन्नूर-(कोंड नुरु शिलालेखमें) ग्राम ता० गोकाक। घटप्रभा नदीपर गोकाकसे उत्तर पूर्व ५ मील दक्षिणकी तरफ कुछ रेतीली पहाडियोंके नीचे ऐसी ही कोठरियां हैं जिसमें पाषाणकी दीवालें व छतें हैं ऐसी कोठरियां दक्षिण हैदराबाद तथा दक्षिणी भारतके अन्य स्थानोंमें पाई जाती हैं। इंग्लेंडमें प्राचीन पाषाणके कमरोंसे इनकी सदृशता होती है इमसे ये देखने योग्य है। ये सब ५० से अधिक एक समुदायमें है। लोग इनको पांडवोंके घर कहते हैं। ये बहुत ही प्राचीन है। (नोट–ये सब जैन साधुओंके ध्यानके स्थान है) ग्रामके जैन मंदिरमें राष्ट्र राजाका लेख शाका १००९ का है।

इस शिलालेखका भाव यह है—–

इस लेखमें चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्ल या विक्रमादित्य द्वि० और उसके पुत्र जयकर्णका वर्णन है। जयकर्णके सिवाय इस लेखमें चामुण्ड दंडाधिप या सेनापतिका भी वर्णन है जो कुन्डी देशका शासन करता था और मण्डलेश्वर राजा सेनका भी वर्णन है

जो राष्ट्रोंका राजा था। इसमें बलात्कारगणके वंशधरोंका वर्णन है जो कोंडनूरु और हिहिंयरुमें राजासेनके नीचे ग्रामके अधिपति थे। पहला दान सरिगंक वंशके निप्पियम गामण्डने उस जैन मंदिरको किया जो कोंडनुरुमें शाका १००९ में बनवाया गया था। उसी बडे चालुक्य राजा कोन्नने भी इसी मंदिरको दान किया-यह राजा यहां पूजा करने आया था-तथा एक दान शाका १०४३ में विक्रमके प्रिय पुत्र जयकर्णने अपने पिताके राज्यमें किया-तथा निप्पियम गामण्डने कुण्डीमें एक घर व १५० कम्माभूमि दी। गोकाक फाल जहां नदीका पानी गिरता है वहां जो मंदिर हैं ये मूलमें जैनमंदिर थे।

The temples near fall were originally Jain temples

तथा जो यहां गुफाए हैं वे जैन साधुओंकी तपस्याके लिये हैं। यह कोनुर प्राचीनकालमें जैनियोंका महत्त्व स्थान था। अभी भी ग्रामका आधिपत्य लिंगायत वंशके साथ २ जैन वंशको है।

(६) नान्दीगढ़-ता० बीडी, बेलगामसे दक्षिण २० मील है। यहां एक प्राचीन नमूनेदार जैनमंदिर जंगलमें है जहां अच्छी कारीगरी है।

(७) नेसगीं ता० सांपगांव-सांपगांवसे उत्तर ७ मील यहां एक वास्तवका शिव मंदिर है उसमें राष्ट्र राजा कार्तवीर्यके समयका शिलालेख शाका ११४१ का है।

(८) युगुन्द ता० सांपगाम-यहांसे दक्षिण पूर्व १० मील

यहां एक बहुत बड़ा सुन्दर प्राचीन जैन मंदिर मुक्तेश्वरका है जिसमें विशाल प्रदक्षिणा व बढ़िया खुदाव व शोभा है।

(९) देगुलवल्ली–देगांवसे उत्तर पश्चिम १ मील व कित्तरसे दक्षिण पश्चिम ३ मील। एक प्राचीन ईश्वरका मंदिर है जो मूलमें जैनियोंका था। ध्वंश होगया है। यहां १९ वीं शताब्दीका कनडी शिलालेख है।

(१०) कडरोली–मलप्रभा नदीपर सांपगांवसे दक्षिण ६ मील। यहां पश्चिमी चालुक्य सोमेश्वर द्वि० का शिलालेख शाका ९९७ (Ind. Ant, Vol. I P. 141) का है।

(११) हन्निकेरी–सांपगावसे उत्तर पश्चिम ४ मील यहां एक प्राचीन स्वच्छ जैन मंदिर है जिसको अब शिवालय या ब्रह्मदेव मंदिर कहते है।

(१२) कल्होले–घट प्रभा नदीपर। गोकाकसे करीब ७ मील। यहां एक प्राचीन जैन मंदिर है जिसमें शिलालेख हैं। अब इसको लिंगायत मंदिर कर लिया गया है। शिलालेख राष्ट राजाओंका और कार्तवीर्य चतुर्थ और मल्लिकार्जुन दोनो भाइयोंका है (११९९–१२१८) जिनकी राज्यधानी बेलगाम थी। इसमें लेख है कि शाका ११२७ पौष सुदी २ शनिवारको १६वें तीर्थंकर श्री शांतिनाथ भगवानका (जैन) मंदिर जो कल्होलीमें है उसीलिये कुछ भूमि व कुछ नगद दान राजा कार्तवीर्य चतु० ने पुजारीको किया।

कलहोलेके शिलालेखमें यादव राजाओंकी वंशावली दी है—

रवश स्त्री होला देवी
|
ब्रह्मा स्त्री चन्दलादेवी
|
राजा प्रथम स्त्री मैललदेवी
|
चंदलादेवी या चंद्रिकादेवी — सिद्द या सिंगिदेव स्त्री भागलदेवी
|
राजा द्वि० स्त्री चंदलदेवी और लक्ष्मीदेवी।

नोट—राजा प्रथमकी कन्या चंद्रिकादेवी राष्ट्र राजा लक्ष्मण या लक्ष्मीदेव प्रथमको विवाही गई थी। यही कार्तवीर्य चतुर्थ तथा मल्लिकार्जुनकी माता थी। जिस मंदिरको दान किया गया उसको राजाद्वि० ने बनवाया था। मंदिरके गुरु श्री मूलसंघ कुन्दकुन्द आचार्यकी शाखा हणसांगी वंशके थे। इस हणसांगी वंशके तीन गुरु मलधारी हुए हैं जिनके एक शिष्य सैद्धांतिक नेमिचन्द्र थे। श्री नेमिचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्र थे। शुभचन्द्र चन्द्रके समान पवित्र थे। इन्होंने दिगम्बर धर्मकी बहुत उन्नति की थी। शुभचंद्रके शिष्य श्री ललितकीर्ति थे।

(१३) मनोली—सौदत्तीसे उत्तर ६ मील। यह मलप्रभा नदीपर १ बड़ा नगर है। नगरके पश्चिम मंदिर हैं। दोसे छोटा तीन गुम्बजका एक जैन मंदिर है जिसमें पच्चीकारी अच्छी है।

(१४) सौन्दत्ती—ता० पारसगढ़। बेलगामसे ४० मील पूर्व। यहां एक प्राचीन जैन मंदिर है। यहां ६ शिलालेख हैं जिनमें राष्ट्र वंशके राजाओंके लेख सन् ८७५ से १२२९ तकके हैं।

पहला जैन मंदिरकी बाईं तरफ भीतमें एक पाषाण लगा है। इसके ऊपर मध्यमें श्री जिनेन्द्र पद्मासन है दाहनी तरफ गाय बछड़ा है बाईं तरफ सूर्य चन्द्र है। इस लेखमें पुरानी कनडी भाषाकी ९३ लाइन हैं जिनमें सौन्दत्ती और बेलगामके तीन राष्ट्र राजाओं द्वारा दिये हुए दानोंका वर्णन है। इसमें कथन है कि सुगंधवर्ति (जो सौंदत्तीका प्राचीन नाम था) में दो जैन मंदिरोंको प्रथम राष्ट्र राजा पृथ्वी वर्मा प्रथम और शैन प्रथमने जो ७ वें राष्ट्र राजा थे, बनवाया और ६ या ७ भूमियोंका दान कुछ राष्ट्र राजाओंके द्वारा दिया हुआ है ऐसा कथन है। तथा एक दान १०९७ में पश्चिमी चालुक्य महाराजा विक्रमादित्य छठे (त्रिभुवनमल्ल) ने दिया ऐसा वर्णन है। इनमेंसे तीन दान जैन मंदिरोंको और चार दातारोंके गुरुओंको दिये गए हैं इनमेंसे दो में सा० ८७५ और १०९७ है।

यह लेख यह भी बताता है कि पृथ्वीरामका स्वामी राजा राष्ट्रकूट महाराज कृष्ण थे (८७५ से ९११) तथा सुगन्धवर्ति नगरीके निकट मल्हारी (मलप्रभा) नदी बहती है। इसी लेखमें यह भी प्रगट हुआ कि पृथ्वीवर्मा मेरडका पुत्र था। यह राजा गद्दीपर आनेके पहले पवित्र मुनि मैलपतीर्थका धार्मिक शिष्य कारेय जातिमें था। इसने शाका ७९८ में मन्मथ संवत्सरमें यहा जैन मंदिर बनवाया और १८ निवर्त्त भूमि दान की। दूसरा शिला लेख एक पाषाणमें है जो इसी ही जैन मंदिरकी दाहनी भीतपर लगा है, इसके ऊपर मध्यमें एक पद्मासन जिन है, यक्ष यक्षिणी चमर करते हैं। दाहनी तरफ गाय बछड़ा है, ऊपर सूर्य है तथा

बाई तरफ एक पद्मासन जिन हैं ऊपर चंद्रमा है। यह लेख ५१ लाइनमें है पुरानी कनड़ी भाषा है ता० ९८१ सन् है। इसमें कुन्दुर जैन जातिकी और उसके गुरुओंकी बहुत प्रशंसा दी है तथा यह वर्णन है कि चौथे राष्ट्र राजा शांतने १५० मत्तर भूमि उस जैन मंदिरको दी जो उसने सौंदत्तीमें बनवाया था और उतनी ही भूमि उसी मंदिरको उसकी स्त्री निजिकव्वेने दी। प्रारम्भमें भूमिकी माप है जो राष्ट्र जिनके मंदिरके लिये अलग की गई थी। इसीमें यह भी आज्ञा है कि प्रत्येक तेल मिलवाला १ मन तेल दीपावलीके दिन मंदिरमें दीपके लिये देवे। (बम्बई राय० ए० सी० नं० १०)

पाचवा लेख एक पाषाणमें है जो अब मामलतदारके दफ्तरमें है। यह इसी जैन मंदिरके सामने एक आगनके खोदनेसे मिला है। इसमें ९३ लाइन हैं। वे ही चिन्ह हैं। इसमें पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर द्वि० (स० १०७७–१०८४) के आधीन ९ में राष्ट्र राजा कार्यवीर्य द्वि० की वंशावली राजा नन्नसे दी हैं। " Indian antiquary Vol. IV P. 279-280 " से सौंदत्तीके लेखोंका विशेष वर्णन इस प्रकार और जानना चाहिये—

(१) मैलेयतीर्थकी कारेय शाखामें आचार्य श्री मूल भट्टारक हुए। उनके शिष्य विद्वान गणकीर्ति थे। इनके शिष्य इच्छाको जीतनेवाले इन्द्रकीर्तिस्वामी थे। इनका शिष्य मेरडका बड़ा पुत्र राजा पृथ्वी वर्मा था जो श्रीकृष्णराजदेवके आधीन था शाका ७९७॥
(२) राजापरग–कन्नकेर प्र० का पुत्र गानविद्यामें निपुण था,
(३) कन्नकैरद्वि० के धार्मिक गुरु श्री कनकप्रभ सिद्धांत त्रैवे-

घदेव थे जो गणधरके समान थे (१) कालसेन राजाने सुगंधवर्तिमें जिनेन्द्र मंदिर बनवाया था।(४) शांतिवर्मा राजाने शा०९०२में आचार्य बाहुबलिदेवके चरणोंमें सुगन्धवर्तिके जैन मंदिरोंके लिये १५० मत्तर भूमि दी। यह बाहुबलि व्याकरणाचार्य थे उस समय श्री रविचन्द्रस्वामी, अर्हनन्दी, शुभचन्द्र भट्टारकदेव, मौनीदेव, प्रभाचन्द्रदेव मुनिगण विद्यमान थे (५) भुवनैकमल्ल चालुक्य वंशीय सत्याश्रयके राज्यमें लट्टलरपुरके महा मंडलेश्वर कार्तवीर्य द्वि० सेन प्रथमके पुत्र थे तब मुनि रविचन्द्रस्वामी व अरहनंदी मौजूद थे (६) राजा कत्तम्की स्त्री पद्मलादेवी जैनधर्मके ज्ञान व श्रद्धानमें इन्द्राणीके समान थी जिसका पुत्र लक्ष्मण था जो मल्लिकार्जुन और कार्तवीर्यका पिता था (७) सौंदत्तीके ८ वें लेखमें जो चालुक्य विक्रमके १२ वें वर्ष राज्यमें लिखा गया आचार्योंके नाम दिये हैं बलात्कारगण मुनि गुणचन्द्र-शिष्य नयनंदि, शिष्य श्रीधराचार्य, शिष्य चन्द्रकीर्ति, शिष्य श्रीधरदेव, शिष्य नेमिचन्द्र और वासुपूज्य त्रैविद्यदेव, वासुपूज्यके लघुभ्राता मुनि विद्वान मलयाल थे वासुपूज्य के शिष्य सर्वोत्तम साधु पद्मप्रभ थे। सोरिंगका वंशका निधियामी गुरु वासुपूज्यका सेवक था।

(१५) तावन्दी-बेलगाम कोल्हापुर रोड़पर एक ग्राम चिक्रोड़ीके दक्षिण पश्चिम १५ मील। एक छोटा जैन मंदिर भरमप्पाके नामसे है। यहां कार्तिकमें एक मेला होता है तब करीब १००० जैनी एकत्र होते हैं।

(१६) कोकतनूर ता० अथनी-अथनीसे पूर्व दक्षिण १० मील, बीजापुरसे ४५ मील यहां एक प्राचीन द्रवड़ जैनमंदिर है।

(१७) शाहगी–अथलीसे पूर्व १२ मील, प्राचीन जैनमंदिर जो व्यवहारमें नहीं आता व जीर्ण है।

(१८) कानदाद–अथनीसे पश्चिम २२ मील एक पहाड़में खुदाई है यहां सुन्दर जैन मूर्ति है तथा एक जैनमंदिर है।

(१९) रायबाग–प्राचीन नाम बागे या हवीनबागे बेलगामके देशी राज्योंमें एक नगर है। यहां संस्कृतमें शिलालेख है। इसमें पहले कृष्ण प्रथमका नाम है जिसने राष्ट्वंशको प्रसिद्ध किया। फिर राजामेन सेलेकर कार्तवीर्य चतुर्थ और मल्लिकार्जुन तक नाम हैं। इनका समकालीन यादव वंशका राजा रेव्या था जो कोपनपुरका अधिपति था। इसमें उस दानका वर्णन है जो कार्तवीर्यदेवने शाका ११२४ को शुभचन्द्र भट्टारकदेवको किया, वास्ते राष्ट्रोंके जैन मंदिरोंके लिये जिनको उसकी माता चंद्रिकादेवीने स्थापित किया था। यही दूसरा लेख नरसिंहसेठीके जैन मंदिरमें है। संस्कृतमें यह चालुक्य लेख है। (शायद) शाका १०६२ में नरसिंहसेठीके जैन मंदिरको महाराज जगदेकमल्लके राज्यमें दंडनायक दामिय-रसुने दान किया।

(२२) बीजापुर जिला।

इस जिलेकी चौहद्दी इस प्रकार है–

उत्तर–भीमा नदी, शोलापुर, अकलकोट। पूर्व और दक्षिण पूर्व–निजाम राज्य। दक्षिण–मलप्रभा नदी तटपर धाड़वाड़ और रामदुर्ग हैं। पश्चिम–मुधाल, जामखंडी और जथ राज्य। इस जिलेका प्राचीन नाम–कलादगी जिला है। सन् १८४९में इसका नाम बीजापुर पड़ा है।

इतिहास–प्राचीन कथामें दंडकारण्यवन या दंटकवनके सम्बन्धमें इस जिलेके सात स्थानोंका वर्णन आया है–एवली हंगुडमें, बदामी, बागलकोट, धूलखेड़ इंडीमें, गलगली बागलकोटमें, हिप्पर्गी, सिंदगीमें व महाकूट बदामीमें।

दूसरी शताब्दीमें यहां तीन स्थान बहुत प्रसिद्ध थे जिनका वर्णन Ptolemy टोलमीकी सूचीमें है। (१) बदामी (२) इंडी (३) कलकेरी। जहांतक ज्ञात है बादामी इन सबमें प्राचीन जगह है। यहां पल्लव वंशका किला है। छठी शताब्दीके मध्यमें चालुक्य वंशीय राजा पुलकेशी प्रथमने पल्लवोंसे बादामी ले लिया। यहांसे मुसल्मानोंके आनेतक इतिहासके चार भाग हैं–पूर्वीय चालुक्योंने और पश्चिमीय चालुक्योंने ७६० सन् ई० तक, राष्ट्रकूटोंने ७६०से ९७३ तक फिर कल्चूरी और होसाल बल्लालने ११९० तक जिसमें सिंदा राजा दक्षिण बीजापुरमें ११२० से ११८० तक रहे–देवगिरि यादवोंने ११९० से तेरहवीं शताब्दी मुसल्मानोंके आनेतक राज्य किया।

सातवीं शताब्दीमे चीन यात्री हुइनसागने बादामीका दर्शन किया था तब यह चालुक्य वशका स्थान था। वह वर्णन करता है कि "यहाके लोग लम्बे कदके, मानी, सादे, ईमानदार, कृतज्ञ, वीर और वहुत ही साहसी हैं। राजाको अपनी सेनाका अभिमान है, राज्यधानीमे वहुत मदिर व मठ हैं, पुराने टीले व राजा अशोकके समयके स्तूप हैं। यहा हर प्रकारके साधु मिलते हैं। लोगोको शिक्षाका वहुत प्रेम है और वे सत्य और धर्मके अनुसार चलते हैं। चहुओर १२०० मठ इस राज्यमें हैं।"

यहा बहुत प्राचीन शिल्पकला है व प्रसिद्ध शिलालेख अरसीबीडी, ऐवल्ली, और बादामी में हैं (६ से १६ वीं शताब्दी तकके) व वहुत ही प्रसिद्ध मदिर ऐवल्ली और पत्तदकलमें हैं। ऐवल्लीका मेघुती जैन मदिर सादे पत्थरके कामके लिये प्रसिद्ध है। पत्तदकलके मदिर द्राविड और उत्तरी चालुक्य ढगके हैं। हुगुड तालुकामें सगमपर सगेश्वरका मदिर बहुत पुराना है।

प्रसिद्ध स्थान।

(१) ऐवल्ली (ऐहोली) प्राचीन ग्राम ता० हुडगुड मलप्रभा नदीपर वसा है। हुनगुन्डसे दक्षिण पश्चिम १२ मील है। हम यहा ता० ३ जून १९२३को स्वय गए थे। यह किसी समय वडा भारी नगर होगा क्योंकि पाषाणके मदिर व मकान चारो तरफ टूटे फूटे पडे हैं जैनियोंके भी वहुतसे मदिर हैं। कुछोमें महादेवकी स्थापना है। एक छोटीसी पहाडी है उसके ऊपर जाते हुए मार्गमे मैदानमे एक दि० जैन मूर्ति खडित पडी है। ८० सीढी ऊपर जाकर द्वारपर द्वारपालकी मूर्ति खडी है जिसकी ऊचाई ६ हाथ

होगी। ऊपर जाकर मेघुतिरा प्रसिद्ध दि० जैन मंदिर दर्शनीय है, यह लम्बाईमें ९२ हाथ है। मंदिरके चारों तरफ बड़ा मैदान है। इसकी दाहनी तरफ भीतपर एक शिलालेख पुरानी कनड़ी लिपिमें बहुत बड़ा ऐतिहासिक है जो ९ फुट लम्बा व २ फुट चौड़ा है। यह लेख संस्कृत भाषामें है-इसकी नकल व इसका उल्था आगे दिया गया है। मंदिरके भीतर जाकर वेदीमें खंडित दि० जैन मूर्ति पल्यंकासन तीन हाथ ऊंची है। दो इन्द्र दोनों तरफ हैं, दोनों तरफ सिंह बना है। बीचकी वेदीके पीछे १ गुफा है व १ गुफा बगलमें है, यह मुनियोंके ध्यान करनेके योग्य है।

मंदिरके ऊपर वेदी है, सिंह चिन्ह है प्रतिमा नहीं है। मंदिरके बाहर चित्रकारीमें हाथी व देव आदि निर्मित हैं।

आगे थोड़ी दूर जाकर दि० जैन गुफा आती है जो बहुत ही बढ़िया शिल्पको बताती है व जहां प्राचीन दि० जैन मूर्तियां दर्शनयोग्य हैं।

सामने वेदीमें पल्यंकासन श्री महावीरस्वामीकी मूर्ति ३ हाथ ऊंची अखंडित है दोनों तरफ चमरेन्द्र हैं, व सिंह हैं, तीन छत्र सहित हैं। वेदीके द्वारपर दो इन्द्र हैं। वेदीके बाहर बीचके कमरेमें एक ओर महावीरस्वामीकी मूर्ति ३ हाथ ऊंची पल्यंकासन चमरेन्द्र सहित--इस प्रतिमाजीके दोनों तरफ २४ स्त्री पुरुष हाथ जोड़े खड़े हैं। कमरेके बाहर दालानमें एक तरफ श्रीपार्श्वनाथजीकी कायोत्सर्ग मूर्ति ३॥ हाथ ऊंची धर्णेन्द्र पद्मावती सहित है पासमें एक गृहस्थ हाथ जोड़े खड़े हैं। बांई तरफ श्री गोमटस्वामीकी कायोत्सर्ग मूर्ति है ३॥ हाथ ऊंची यक्ष यक्षिणी सहित। ये सब

दि० जैन मूर्तियां अखंडित और पूज्य हैं (परंतु कोई पूजा करनेवाला नहीं) इस दालानकी छतपर वहुतसे स्वस्तिक वडी कारीगरीसे रचे गए हैं। कमलोंके भीतर व वाहर छतपर अपूर्व शोभा है। इस गुफाका नं० ७० है। नीचे ग्राममें वीरुपक्ष मंदिरके सामने तीन दि० जैन मंदिर हैं। एकमें श्री पार्श्वनाथजीकी मूर्ति २॥ हाथ पद्मासन अखंडित विराजमान है। यहां एक चरन्ती मठ कहलाता है। यहा कई दि० जैन मंदिर हैं। एक हातेमें ६ मंदिर हैं, एक एक द्वारपर वारहवारह मूर्ति स्थापित हैं—१ वेदीमें २ हाथकी ऊंची मूर्ति है।

" Fergusson cave temples of India 1880 '

मे यहाकी जैन गुफाका हाल यह दिया है कि वरामदा ३२ फुटसे १७॥ फुट है जिसके चार चौकोर स्तम्भ हैं। इसकी भीतरकी वाई तरफ श्री पार्श्वनाथ फणसहित वादामीके सामान है। दाहनी तरफ श्री वाहुवलि हैं। वेदीका मंदिर ८ फुट ३ इंच चौकोर है यहा एक तीर्थंकरकी पल्यकासन मूर्ति वदामीके समान है। वीचके कमरेमें श्री महावीर स्वामी हैं और दूसरी मूर्तियां हैं व हाथी हैं जो उनके नमस्कार करनेको आए हैं। यहापर अवश्य कोई ऐतिहासिक घटना है।

" Archealojical survey report 1907-8 '

मे यहाके मेघुती दि० जैन मंदिरका वर्णन इस भांति दिया है जो जानने योग्य है—

ऐहोल एक प्राचीन नगर है। वादामी स्टेशनसे १४ मील व कटगेरीसे १०-१२ मील है। यह तेरह शताब्दियो तक

चालुक्य राजाओंका मुख्य नगर रहा है। प्राचीन शिलालेखमें इस नगरका नाम "आर्य्यपुर" या आय्यवले मिलता है। सातवीं व आठमी शताब्दीमें यह पश्चिमी चालुक्योंकी राज्यधानी थी।

यहां एक जैन गुफा है जिसकी कोई फिक्र नहीं लेता है (uncared for) मेघुती दि० जैन मंदिरमें जो शिलालेख है उससे विदित है कि यह मंदिर सन् ई० ६३४में किसी रविकीर्तिने चालुक्य राजा पुलकेशी द्वि०के राज्यमें बनवाया था। मंदिर उत्तरकी तरफ है। जो यहां वीरुपक्षका मंदिर दक्षिण मुख है जिसमें लिंग स्थापित है यह मूलमें जैन मंदिर होगा। इस मंदिरके सामने प्राचीन जैन मंदिर है। चरन्ती मठमें जैन मंदिर हैं मेघुती मंदिरमें एक विशाल जैन मूर्ति है—यह मंदिर सबसे प्राचीन मंदिर है (It is earliest dated temple.) जैन गुफाके ऊपर बहुतसे कमरे ध्यानके हैं—(बीजापुर गजटियर)।

मेघुती दि० जैन मंदिरका प्रसिद्ध लेख।

"Indian antiquary Vol. V 1896 Page 67."

में इस लेखकी नकल दी हुई है सो उल्था सहित नीचे प्रमाण है—

इस पाषाणकी ९९॥ इंच चौडाई व २६ इंच ऊंचाई है यह चालुक्य वंशका लेख है। इन दक्षिणी भागोंमें यह लेख सबसे पुराना व सबसे अधिक महत्वका है।

(Oldest one and most important of all the stone tablest' of these parts.

इसमे इस भाति राजाओका वर्णन है—

जयसिंह प्रथम या जयसिंह वल्लभ
|
रणराग
|
पुलिकेशी प्रथम
|
कीर्तिवर्मा प्रथम — मगलीश या मगलीश्वर
|
पुलिकेशी द्वि० या सत्याश्रय

इस लेखका अभिप्राय यह है कि शाका ५०७में पुलिकेशीके राज्यमें किसी रविकीर्तिने यह श्री जिनेन्द्रका मदिर पाषाणका बनवाया। इस लेखसे इधरका बहुतसा इतिहास मालूम होता है। इस लेखमें बहुत महत्वकी बात यह है कि इसमें कदम्ब और कलचूरी राजाओंका, बनवासी नगरीका, कोंकणके मौर्योंका, आप्पायिक गोविन्दका वर्णन है जो शायद राष्ट्रकूटवशका था। १२ वी लाइनमें इधरके देशको महाराष्ट्र वातापिपुरी या वातापिनगरी (वर्तमान बदामी) के नामसे लिखा है—

नकल लेख मेघुती मदिर।

(१) जयति भगवान् जिनेन्द्रो ज र(?, क्ष) ण जन्मनो यस्य ज्ञान समुद्रातर्गत मखिलञ्जगदन्तरी पमिव॥ तदनु चिरमपरिचेयश्चलुक्य कुलविपुल जलनिधिर्जयति॥ पृथिवी मौली (लि) ल्लमो–य प्रभव पुरुषरत्नानाम्॥ शूरे विदुषि च विभजन्दानाम्मानञ्च युगपदेकत्र॥(२) अविहित यायातथ्यो जयति च सत्याश्रयस्सुचिरम्॥

पृथिवी वल्लभ शब्दो येषामन्वर्थताञ्चिरङ्गातः तद्वंशेषु निगीषुंपु तेषु बहुष्वप्यतीतेषु ॥ नानोहति शताभिघातं पतितभ्रांताश्वपत्तिद्विपे, नृत्यद्भीमकबन्ध खड्गकिरणज्वाला सहस्रेरणे (३) लक्ष्मीर्भावित चापलादिव कृता शौर्येण येनात्मसात् राजासीज्जय सिंघवल्लभ इति ख्यातश्चलुक्यान्वयः ॥ तदात्मजो भूद्रणराग नामा दिव्यानुभावो जगदेकनाथः अमानुपत्वं किल यस्य लोक सुप्तस्य जानाति वपु प्रकर्षात् ॥ तस्याभवत्तनूज–पुलिकेशि यःश्रितेन्द्रकांतिरपि (४) श्री वल्लभोप्ययासीद्वातापिपुरी वधूवरताम् ॥ यत्त्रिवर्ग पदवीमलं क्षितौ नानु गन्तुमधुनापि राजकम् । भूश्च येन हय मेधया जिना प्रापितावभृथमज्जना बभौ ॥ नलमौर्य्य कदम्ब कालरात्रिस्तनयस्तस्य बभूव कीर्तिवर्मा परदार निवृत्तचित्तवृत्तेरपि धीर्यस्य रिपु (५) श्रिया-नुकृष्टा ॥ रण पराक्रम लब्ध जयश्रिया सपदि येन विरुग्नमशेषतः नृपति गन्धगजेन महौजसा पृथुकदम्बकदम्बकदम्बकम् ॥ तस्मिन् सुरेश्वरविभूति गताभिलाषे राजा भवत्तदनुज किल मंगलीशः य पूर्व पश्चिम समुद्र तटोषिताश्वः सेनारजः–पट विनिर्मित दिग्वितानः ॥ स्फुरन्मयूखैरसि दीपिका शतैः (६) व्युदस्य मातङ्गतमिस्रसंचयम् । अवाप्तवान्यो रणरंगमंदिरे कटच्चुरि श्री ललनापरिग्रहाम् ॥ पुनरपि च जिघृक्षोर्सैन्यमाक्रान्त सालम् रुचिर बहुपताकं रेवती द्वीप माशु व्यासपदि महदुदन्वत्य संक्रान्तबिम्बं वरुण वलमिवा-भूदागतं यस्य वाचा ॥ तस्याग्रजस्य तनये नहुषानुभावे लक्ष्म्या किला (७) मिलषिते पुलिकेशि नाम्नि सासूय मात्मनि भवन्त मत-पितृव्यम् ज्ञात्वा परुद्ध चरितव्यवसाय बुद्धौ ॥ स यदुपचित मन्त्रो-त्साह शक्ति प्रयोग क्षपित बल विशेषो मंगलीशो समन्तात् स्वत-

नयगत राज्यारम्भयत्ने न सार्द्धं निजमतनु च राज्यं जीवितं चोज्झति-स्म ॥ तावच्छत्रभंगे जगदखिल मरात्यन्धकारोपरुद्धं (८) यस्यासह्य प्रताप द्युति ततिभिरिवाक्रान्त भासीत्प्रभातम् नृत्यद्विद्युत्पताकैः प्रजविनि मरुति क्षुण्ण पर्यंत मार्गेर्गर्जद्भिर्व्यारिवासै (है) रलिकुल मलिनं व्योमयातंकदावा ॥ लब्ध्वा कालं भुवमुपगते जेतुमाप्यायिकाख्ये गोविन्दे च द्विरद निकरैरुत्तराम्भोधिरथ्याः यस्यानीकैर्युधि भय रसज्ञत्वमेक-प्रयातस्तत्रावाप्तम्फलमुपकृतस्या (९) परेणापि सद्यः ॥ वरदातुङ्ग तरङ्ग रंग विलसद्धंसानदीमेखला वनवासीमवमृद् नतस्सुरपुर प्रस्पर्द्धिनी सम्पदा महता यस्य बलार्णवेन परितस्संछादितोर्व्वीतलं स्थलदुर्गम्जलदुर्गं तामिवगतं तत्तत्क्षणे पश्यताम् ॥ गंगाम्बु--पीत्वा व्यसनानि सत्त हित्वा पुरोपार्जित संपदो पि यस्यानुभावोपनतासदा सन्ना-(१०) सन्नसेवामृतपान शौण्डाः कोकणेषु यदादिष्ट चण्डदण्डाम्बुवीचिभि उदस्तास्तरसा मौर्य्य पल्वलाम्बुसमृद्धय ॥ अपरजलधेर्लक्ष्मीं यस्मिन्पुरीम्पुरभित्प्रभे मदगजघटाकारे र्नावां शतैरवमृदनति जल्द पटलनीका कीर्ण्णनवोत्पल मेचकञ्जलनिधिरिव व्योम व्योम्न समो भवदम्बुनिधि ॥ प्रतापोपनता यस्य लाट मालव गुर्ज्जरा दण्टोपनतमामन्त चर्य्या वर्य्या इवाभवन् ॥ अपरिमित विभूति स्फीत सामन्तसेना मुकुटमणि मयूखाक्रान्त पादारविन्दः युधि पतित गजेन्द्रानीक बीभत्सभूतो भयविगलित हर्षो येन चाकारि हर्षः ॥ भव गुरुभिरनीकै ञ्शा (१२) सतो यस्य रेवा विविधपुलिन शोभा वन्ध्य विन्ध्योपकंठा अधिकतर मरानत्स्वेन तेजो महिम्ना गिरािरिभिरिभ वर्ज्या नम्म णां स्पर्द्धयेव ॥ विधिवदुपचिता भिरशक्तिभिरशकक्रल्पमितिभूभिरपि गुणौघैस्त्वैश्च

महाकुलाद्यैः अनमदधिपतित्वं यो महाराष्ट्रकाणां नवनवति सहस्र ग्रामभाजां त्रयाणां गृहिणां स्व (१३) स्व गुणैस्त्रिवर्गतुङ्गा विहितान्य क्षितिपाल मानभंगाः अभवन्नुपजात भीति लिंगा यदनीकेन सको (स) ला कलिङ्गाः पिष्टं पिष्टपुरं येन जातं दुर्गम दुर्गमश्चित्रं यस्य कलेर्वृत्तं जातं दुर्गमदुर्गमम् ॥ सन्नद्ध वारण घटास्थ गितान्तरालम् नानायुधक्षतनर रक्षतजाङ्गरागम् आसीज्जलं यदव मर्दित मभ्रगर्भाकौणा लमम्बरमिवोर्जित सान्ध्य रागम् ॥ उद्धतामल चामरध्वज शतच्छा-त्रान्धकारैर्बलैः शौर्योत्साहरसोद्धतारि मथनैर्मौलादि भिष्षड्विधैः आक्रान्तात्म बलोन्नतिम्बल रजस्सम्छन्न कांचीपुरः प्राकारान्तरित प्रताप मकरोद्यः पल्लवानाम्पतिम् ॥ कावेरी द्रुत शफरी विलोल नेत्रा चोलानां सपदि जयोद्यतस्य यस्य प्रश्च्योतन्मद गजसे (१५) तुरुद्ध नीरा सस्पर्श परिहरतिस्म रत्नराशेः ॥ चोलकेरल पाण्ड्यानाम् यो भूत्तत्र महर्द्धये पल्लवानीक नीहारतुहिनेतर दीधितिः ॥ उत्साह प्रभु मंत्र शक्ति सहिते यस्मिन्समंता दिशो जित्वा भुमिपतीन्विसृज्य महितानाराध्य देवद्विजान् वातापीन्नगरीम्प्रविश्य नगरीमेका मिवोर्व्वीमिमाम् चञ्चन्नीरधिनील नीर परिखां (१६) सत्याश्रये शासति ॥ त्रिंशत्सु त्रिसहस्रेषु भारतादाहवादितः सप्ताब्द शत युक्तेषु शतेष्वब्देषु पञ्चसु ॥ पञ्चाशत्सु कलौ काले षट्सु पञ्च शतासु च। समासु समतीतासु शकानामपि भूभुजाम् ॥ तस्याम्बुधित्रय निवा-रित शासनस्य (१) । सत्याश्रयस्य परमाप्तवता प्रसादं शैलंजिनेन्द्र भवनम्भवनम्महिम्नान्निर्म्मापितम्मतिमता रविकीर्तिनेदम् ॥ प्रशस्ते र्व्वसतेश्चास्याः जिनस्य त्रिजगद्गुरो कर्त्ता कारयिता चापि रविकीर्ति कृती स्वयम् ॥ ये नायोजितवेश्म स्थिर मर्त्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म स विजयतां रविकीर्त्ति कविता (१८) श्रितकालिदास भारविकीर्तिः ।

उलथा

श्री भगवान जिनेन्द्र जयवंत हो, जिनके ज्ञानसमुद्रमें सर्व जगत एक द्वीपके समान हैं।....उसके पीछे चालुक्य वंशरूपी समुद्र चिरकाल जयवंत हो, जिसकी महत्ताका परिचय नहीं हो सक्ता। जो पृथ्वीके मुकुटकी मणि है तथा पुरुषरत्नोंकी उत्पत्तिकर्ता है। तथा चिरकाल श्री सत्याश्रय जयवंत हो जो सत्यका आश्रय करनेवाला है तथा जो एक साथ वीर और विद्वानोंको दान और मान देता है। इसके वंशमें बहुतसे राजा हो गए जो विजयके इच्छुक थे व जिनका पृथ्वीवल्लभ नाम सार्थक था।

इसी चालुक्य वंशमें प्रसिद्ध राजा जयसिंहवल्लभ हो गए हैं जिन्होंने ऐसे युद्धमें अपनी शूरवीरतासे उस लक्ष्मीदेवीको जीत लिया है जो चपलतासे भरी हुई है कि जिस युद्धमें उसके सैकड़ों बाणोंसे घबड़ाए हुए अनेक घोड़े पैदल तथा हाथी गिराए गए थे व जहां नाचते हुए व भयमें भरे हुए मस्तकरहित शरीरोंकी व तलवारोंकी हजारों किरणें चमक रही थीं।

उसका पुत्र देवसम प्रभावशाली व पृथ्वीका एक अकेला स्वामी रणराग नामका था जिसके शरीरकी उत्तमतासे उसकी निद्रावस्थामें भी उसका अद्वितीय मनुष्यपना लोकोंमें प्रगट था।

उसका पुत्र पुलिकेशी PuleKesi 1 था जिसने यद्यपि चंद्रमाकी क्रांति पाई थी व जो लक्ष्मीदेवीका प्रिय था तथापि वातापिपुरी नगरीरूपी वधूके वरपनेको प्राप्त था। उसके धर्म, अर्थ, कामरूप तीन वर्गके साधनकी बराबरी पृथ्वीमें कोई नहीं कर सक्ता था। उसके अश्वमेध करनेके पीछे पवित्र भेटसे यह पृथ्वी शोभा-

यमान थी। उसका पुत्र कीर्तिवर्मा था जो नल, मौर्य्य और कदम्ब वंशोंके लिये कालरात्रि था। यद्यपि वह परस्त्रीसे विरक्त था तथापि उस धीरका मन अपने शत्रुओंकी लक्ष्मीसे आकर्षित था। कदम्बोंके वंशके विशाल कदम्ववृक्षको युद्धमें अपने पराक्रमसे विजयलक्ष्मीको प्राप्त करनेवाले महा तेजस्वी नृपके गजने खंड २ कर दिया था।

जब इस राजाकी इच्छा इन्द्रसम विभूतिमें तृप्त हो गई थी तब उसके लघुभाई मंगलीश राजा हुए, जिन्होंने अपने घोड़े पूर्व पश्चिमके समुद्रोंके तटोंपर ठहराए थे तथा अपनी सेनाकी रजसे चारों तरफ मंडप छा दिया था। जिसने मातंग जातिके अन्धकारको अपनी सैकड़ों चमकती हुई तलवारोंके दीपकोंसे दूर करके युद्धके मध्यमें कटचूरियों (कलचूरियों)के वंशकी लक्ष्मीरूपी सुन्दर स्त्रीको अपनी स्त्री बना लिया था और फिर जब उसने शीघ्रही रेवतीद्वीप (द्वारका जहां रेवताचल या गिरनार है) को लेना चाहा तब उसकी विशाल सेना जो सुन्दर पताकाओंसे शोभित व जिसने किलोंको घेर लिया था समुद्रमें ऐसी झलकती थी मानो वरुणकी सेना ही उसके वशमें हो गई है।

जब उसके बड़े भाईके पुत्र पुलकेशीको—जो नहुषके समान-प्रभावशाली था—लक्ष्मीदेवीने पसन्द किया तथा उसने अपने चारित्र व्यापार और बुद्धिमें यह समझा कि उसके चाचा उसकी तरफ ईर्षा भाव रखते हैं, तब पुलकेशी द्वारा संग्रहीत मंत्र, उत्साह तथा शक्तिके प्रयोगसे मंगलीशकी शक्ति बिलकुल नष्ट हो गई और उसके इस प्रयत्नमें कि वह राज्यको अपने ही पुत्रके लिये रक्खे, मंगलीशने अपना राज्य तथा जीवन खो दिया। जब इस तरह मंगलीशका

त्र भंग हुआ तब सर्व जगत शत्रुओंके अन्धकारमें छागया, परन्तु उसके असह्य प्रतापके विस्तारसे पीड़ित होकर मानो प्रभात हो गया। उस आकाशमें जो भौरोंके समान काला था बहती हुई हवासे उडते हुए पताकाओंकी बिजलीकी समान चमकने तड़का हो गया। अवसर पाकर जब अप्पयिक पदधारी गोविन्द राजा (जो राष्ट्रकूटोंका राजा था) जो उत्तर समुद्रका स्वामी था अपनी हाथियोंकी सेनाको लेकर पृथ्वीके विजय करनेको आया तब इस पुलकेशीकी सेनाओंके हाथोंसे-जिसको पश्चिमके राजाओंने मदद दी थी-वह भयभीत हो गया और शीघ्र अपनी कृतिके फलका लाभ किया।

जब वह वनवासीको घेर रहा था जिसके किनारेपर *हंस नदी थी जो वरदा नदीके उच्च तरंगोंमें क्रीड़ा करती थी व जो नगर स्वर्गपुरीके समान था तब वह किला जो सूखी जमीनपर था चारों तरफसे उसकी सेनारूपी समुद्रने ऐसा घिर गया मानो लोगोंको ऐसा मालूम होता था कि समुद्रके मध्यमें कोई किला है। वे लोग भी जिन्होंने गंगाका पानी पिया था और सात व्यसन त्याग दिये थे तथा लक्ष्मीको भी प्राप्तकर लिया था उसके प्रभावसे आकर्षित हो सब उसके निकट सम्बन्धका अमृत पान करना चहते थे। कोंकणके देशोंमें उसकी आज्ञासे नियुक्त चंडदंडरूपी समुद्रकी तरंगोंसे मौर्य्यरूपी सरोवरके जलके भंडार शीघ्र ही वश करलिये

* वर्तमानमें वरदा नदी वनवासी नगरके नीचे बहती है तथा हंस नदी किसी पुरानी धाराका पुराना नाम है। जो यहांसे ७ मील है व इसीकी उपनदी है।

गए थे। नगरको दग्ध करनेवाले शिवके समान उसने जब उस नगरको जो कि पश्चिम समुद्रकी लक्ष्मीदेवीके समान था मदोन्मत्त हाथियोंके समान सैकड़ों जहाजोंसे घेर लिया तब वह आकाश जो नए विकसित कमलके समान नील वर्ण था व मेघोंसे घिरा हुआ था समुद्रके समान हो गया और समुद्र आकाशके समान हो गया।

उसके प्रभावसे पराजित होकर लाट, मालव और गुर्जर ऐसे योग्य आचरणवाले हो गए, जिसतरह दंडसे वशीभूत सामन्त लोग हों। राजा हर्षके चरणकमल उसकी अपरिमित विभूतिमें पाले हुए सामन्तोंके रत्नोंकी किरणोंसे ढके हुए थे जब युद्धमें उसके बलवान हाथियोंकी सेना इससे मारी गई तब उसका हर्ष भयमें परिणत हो गया।

जब वह पृथ्वीको अपनी बडी सेनाओंसे शासित कर रहा था तब रेवा (नदी) जो विन्ध्याचलके निकट है व जिसके तट बालूसे शोभित हैं उसके प्रभावसे अधिक शोभायमान होगई। यद्यपि पर्वतोंके महत्वको देखकर उसके हाथियोंने ईर्षासे उस नदीके सगको छोड़ दिया था।

इन्द्र तुल्य तीन शक्तियोंको रखनेवाले उस राजाने अपने उच्च कुल आदिक गुणोंके समुदायसे तीन देशोंपर अपना अधिकार प्राप्त किया था जिनको महाराष्ट्रक कहते हैं जिसमें ९९००० निन्नानवे हजार ग्राम थे। कलिंग और कोशलदेशवासी—जो गृहस्थोंके उत्तम गुणोंसे संयुक्त हो त्रिवर्ग साधनमें प्रसिद्ध थे और जिन्होंने दूसरे राजाओंका मान भंग किया था इस राजाकी सेनासे तभयभीत थे। उसके द्वारा वशीभूत हो पिष्टपुरका किला दुर्गम न

रहा। इस वीरके कार्य सब दुर्लभ कार्योंमें भी अति दुर्लभ थे। वह जल उसके द्वारा क्षोभित होकर जिसमें उसके हाथियोंकी महान सेनाने प्रवेश किया था व जो उसके अनेक युद्धोंमें मारे गए मनुष्योंके रक्तसे लाल वर्णका हो गया था-उस आकाशके समान झलकता था जिसमें मेघोंके मध्यमें सूर्यके द्वारा संध्याका रंग छागया हो।

अपनी उन सेनाओंसे जोकि निर्दोष चमरोंके हिलानेसे व सैकडों पताकाओं व छत्रियोंसे अंधकारमें आगई थी और जिन्होंने अपने उत्साह और शक्तिसे उन्मत्त उसके शत्रुओंको पीडितकर दिया था और जिसमें छ प्रकार शक्तियें थीं उस राजाने अपनी शक्तिसे प्रसिद्ध पल्लवोंके राजाको उसका प्रभाव अपनी सेनाकी रजसे छिपे हुए उसके कांचीपुर नगरके कोटके भीतर ही छिपा दिया था।

जब उसने चोलोंकी जीतके लिये शीघ्रही तय्यारी की तब उस कावेरी नदीने जो मछलियोंके चंचल नेत्रोंसे भरी हुई थी अपना सम्बन्ध समुद्रसे छोड दिया क्योंकि उसके जलका प्रवाह उस राजाके मदोन्मत्त हाथियोंके पुलसे रुक गया था। वहां उसने चोलों, केरलों और पांड्योंको महाऋद्धियुक्त किया परन्तु पल्लवोंकी सेनाके पालेको गलानेके लिये सूर्य्य सम हो गया।

जब राजा सत्याश्रयने अपने उत्साह, प्रभुत्व व मंत्रशक्तिसे सर्व निकटके देशोंको जीत लिया और परास्त राजाओंको विसर्जन कर दिया तथा देव और ब्राह्मणोंको आराधित किया और अपनी वातापी नगरी (वदामी) मे प्रवेश किया तब उसने सर्व जगतको ऐसे नगरके समान शासित किया जिसके चारो तरफ नृत्य करते हुए समुद्रके जलसे पूरित नीलखाई वह रही हो।

३७३० तीन हजार सातसो तीस वर्ष भारतोके युद्धके वीतनेपर व ३९५० तीनहजार पांचसौ पचास वर्ष कलियुगके जानेपर और शक राजाओके ५०६ पांचसौ छः वर्ष होनेपर महिमापूर्ण यह पाषाणका जिनेन्द्रमंदिर विद्वान रविकीर्ति द्वारा निर्मापित किया गया था। जिस रविकीर्तिने उस सत्याश्रयके महान प्रसादको प्राप्त किया था जिसकी आज्ञा मात्र तीन समुद्रोसे ही रोकी गई थी।

इस तीन जगतके गुरुश्री जिनेन्द्र मंदिरकी प्रशस्तिका लेखक तथा जिसने इस मंदिरको निर्मापित कराया वह यह स्वयं रविकीर्ति है। वह रविकीर्ति विजयको प्राप्त करे, जिसने अपनी कवितासे कालिदास और भैरवीकेसे यशको प्राप्त किया है व जो कार्यके करनेमें विवेकी है व जिसने यह महान जिनमंदिर बनवाया है।

लेखके नीचे जो कनड़ी भाषामें है उसका उल्था।

मुसरीवल्लीका ग्राम, मेलुटिकवाड नगर तथा पर्वनूर, गंगवूर, पुलिगिरि और गंडव ग्राम इस देवताकी सम्पत्ति हैं। उत्तर और दक्षिणकी तरफ इस पर्वतके नीचे दक्षिण भीमुवारी तक इस महापथांतपुर नगरकी सीमा है।

इस मेघुती मंदिरके ऊपरी भागके आंगनमें एक स्मारक पाषाण है जिसमें एक छोटासा लेख पुराने कनडी अक्षरोंमें है। इसके अक्षर १२वीं व १३वी शताव्दीके हैं। जिसका भाव यह है कि यह रामशेठीकी निषिधिका है जो मूलसंघ बलात्कारगणके कमल थे व ऐभसेठीके पुत्र थे जो दुगलगढ़ ग्राम वासी व रामवरग जिलेके संरक्षित व्यापारी थे।

अरसीबीडी–तालुका हुनगंडमें एक ध्वंश नगर–हुंनगडसे दक्षिण १६ मील। यहां प्राचीन चालुक्य राज्यधानी थी जिसका नाम विक्रमपुर था जिसको महान विक्रमादित्य चतुर्थने (१०७६–११२६) में स्थापित किया था। उसके समयमें पश्चिम चालुक्य ९७३–११९०) बहुत उन्नतिपर थे। कलचूरियोने ११९१में लेलिया तब भी यह एक महत्वका स्थान था। यहां दो ध्वंश जैन मंदिर हैं, दो बड़े चालुक्य और कलचूरी वंशके शिलालेख पुरानी कनडीमें हैं।

(२) बादामी–ता० बादामी, एस०एम०रेलवेपर टेशन। यह स्थान इस लिये प्रसिद्ध है कि यहां एक जैन गुफा सन ई० ६५० की है व तीन ब्राह्मण गुफाएं हैं। जिनमें एकमें शिलालेख सन् ई० ५७९का है। जैन गुफा ३१ फुट लम्बी व १९ फुट चौडी है। ता० १ जून १९२३को हमने बादामीकी यात्रा की थी। गुफाके नीचे एक बड़ा रमणीक सरोवर है। यह जैन गुफा बहुत ही सुन्दर व अनेक अखंडित दि० जैन मूर्तियोंसे शोभित है। यह गुफा ५ दरकी है–इसके ४ स्तम्भ हैं। जो चौकोर हैं– स्तम्भोंपर फूलपत्ती व गृहस्थ स्त्री पुरुष बने हैं। गुफाके बाहर पूर्व मुख १ प्रतिमा श्री महावीरस्वामीकी पल्यंकासन है १ हाथ उंची। एक तरफ यक्ष है, दो चमरेन्द्र हैं, तीन छत्र हैं। सामने भीतपर सिंह व हरएक कोनेके ऊपर व स्तंभपर सिंह है। वास्तवमें यह गुफा श्री महावीरस्वामीकी भक्तिमें अपनी वीतरागताको झलका रही है। भीतर जाकर बाहरी दालानमें पूर्वमुख भीतपर श्री पार्श्वनाथ कायोत्सर्ग ५ हाथ ऊंचे फणसहित, १ चमरेन्द्र खड़े, १ बैठे

दोनोओर, १ कोनेमें एक यक्ष। इसीके सामने भीतपर पश्चिम मुख श्री गोमटस्वामी ५ हाथ ऊंचे कायो० चार सर्प लिपटे केश ऊपरसे आगे आकर तपके कारण कंधेपर लटक रहे हैं। दो चमरेन्द्र इधर उधर हैं। नीचे दो गृहस्थ घुटनोंसे हाथ जोडे बैठे हैं। वास्तवमें यह मूर्ति साक्षात् श्री बाहुबलि महाराजके एक वर्ष तपके दृश्यको दिखला रही है। इस दालानमें चार खंभे हैं। दो मध्यमें दो भीतके सहारे। इन चारोंमें अनेक पल्यंकासन और खड्गासन दि० जैन मूर्तियां अपनी वीतरागताको झलका रही हैं। इसके आगे वेदीके कमरेके बाहर भीतरी दालान है यहां भी अपूर्व प्रतिमाएं हैं। १ मूर्ति ४ हाथ ऊंची खडगासन पूर्वमुख है ऊपर तीन छत्र हैं। इसके आसपास कई मूर्तियां हैं। सामने पश्चिम मुख १ मूर्ति ४ हाथ ऊंची कायोत्सर्ग, दो यक्ष हैं व अनेक प्रतिमाएं आसपास हैं। वेदीके कमरेके द्वारके दोनों ओर मुख्य श्री पार्श्वनाथ फणसहित १। हाथ ऊंचे तथा अन्य मूर्तियें हैं।

आगे ४ सीढ़ी चढ़कर वेदीका कमरा है। द्वारपर दोनों ओर दो इन्द्र हैं। भीतर मूल नायक श्री महावीर स्वामी पल्यंकासन ३ हाथ ऊंचे दो इन्द्र सहित व तीन सिंहसहित विराजित हैं।

इस प्रांतमें यह दि० जैन गुफा दर्शनीय तथा पूज्यनीय है।

(Fergusson cave temples of India 1880)—

में इस बादामी जैन गुफाका इस तरह वर्णन दिया गया है कि यह बादामी कलादगी कलेक्टरीमें कलादगीसे दक्षिण पश्चिम २३ मील है। मल्पभा नदीसे ३ मील है। प्राचीन कालमें यह चालुक्य वंशी राजाओंकी वातापि नगरी थी। पुलकेशी म-

थमने छट्ठी शताब्दीके प्रारंभमें इसको अपनी राजधानी किया था। यह जैन गुफा करीब ६९० ही में खोदी गई होगी। वरामदा ३१ फुटसे ६॥ फुट है गहराई १६ फुट है। पीछेका कमरा ६ फुट और २९॥ फुट है। यहांसे आगे ४ सीढी चढ़कर सिंहासन-पर श्री महावीरस्वामी पल्यंकासन विराजित हैं। वरामदेके कोनोंमें दोनों तरफ ७॥ फुट ऊंचे श्री गोमटस्वामी और श्री पार्श्वनाथ की मूर्तियें शोभित हैं। स्तंभों और भीतों पर बहुतसी तीर्थंकरोंकी मूर्तियां हैं।

नोट—यहां पूजन पाठ नही होती है। यहां इंडी निवासी श्री आदप्पा अनन्तप्पा उपाध्याय जैन सकुटुम्ब रहते हैं जो अस्पतालमें कम्पाउंडर हैं। इनके घरमें मूर्ति भी है।

(३) बागलकोट नगर घटप्रभा नदी पर। यहां १ दि० जैन मंदिर है, जैनीलोग भी हैं। यहां १ जैन बाजार है जिसको जैनि-योंने नवाब सावनूर (१६६४–१६७९) के राज्यमे बनवाया था।

(४) हुनगुंद ग्राम—बागलकोटसे २९ मील। यह बीजापुरसे दक्षिण पूर्व ६० मील है। नगरके सामने जो पहाडी है उसपर १ जैन मदिरके अवशेष हैं जिसको मेघुती मंदिर कहते हैं। मंदिरके स्तम्भ चौकोर हैं और बहुत मोटे हैं। एक खंभेमें बहुत अच्छी खुदाई है। पुराने सब डिविजनल आफिसके पास उसके उत्तरमें एक जीर्ण जैन गुफा है। यहांकी मूर्ति नही रहीं। नगरमें पर्वतके नीचे जो रामलिंगदेवका मंदिर है उसमे जैन मदिरोंके सोलह स्तम्भ चौकोर बढ़िया हैं। इस मंदिरके पास एक घरके आंगनमें एक छोटा मंदिर है जिसमें पुराने चौकोर खंभे जैन मन्दिरोंके हैं।

(५) पट्टदकल–ता० वादामी, वादामीसे ९ मील। यहां बहुतसे प्राचीन मंदिर जैन और ब्राह्मणोंके हैं, उनमें ७ वीं व ९ वीं शताब्दीके शिलालेख हैं। ये सब मंदिर द्राविड़ शिल्पके नमूने हैं।

शिव मंदिरके पश्चिममें एक पुराना जैन मंदिर है। द्राविड शिल्पमें रचित है। खुला हुआ कमरा है। जिसके ८ स्तम्भ हैं। मंदिरके हरदोओर सवारसहित हाथीका आधा भाग है, द्वारके ऊपर ५ फणका सर्प है। भीतरके कमरेमें चार चौकोर स्तंभ हैं। इसके भीतरके कमरेमें दो गोल व दो चौकोर खंभे हैं। मंदिरजी मूर्तिरहित है। एक कायोत्सर्ग नग्न मूर्ति जिसपर सात फणका सर्प है आगे चट्टानपर घुटनोंसे खंडित विराजित है। (नोट–यही वेदी पर होगी) कमरेकी छतपर जानेको एक सीढ़ी है। मंदिरके ऊपर शिखर है। उसमें भी एक कमरा है तथा उसमें प्रदक्षिणा है। मंदिरके बाहर आश्चर्यजनक कारीगरीकी खुदाई है। यह बहुत प्राचीन नगर है। टोलमी, मिश्र भूगोलवेत्ता (सन् १९०)ने इसका नाम पेटिरगाला लिखा है।

(६) तालीकोटा–ता० मुद्दे विहाल। एक नगर है। यहां जुमामसजिद एक ध्वंश मकान है जिसके खंभे जैनोंके हैं। एक शिवका मंदिर पुराना है। इसमें एक लिंगके सिवाय कुछ जैन मूर्तियां हैं इसके खंभे गोल हैं। उसपर जैन मूर्तियां बनी हैं।

(७) सलतगी ता० इंडी। इंडीसे दक्षिण पूर्व ६ मील एक पाषाणके खंभे पर देव नागरी अक्षरोंमें एक लेख शाका ८६७ का राष्ट्रकूट वंशका है। इसमें लेख है कि कृष्ण चतुर्थ (९४५–९५६) ने कर्णपुरी जिलेके पाविट्टगामें एक विद्यालय स्थापित किया।

(८) अलमेली ग्राम ता० सिंदगी–यहांसे उत्तर १२ मील। यह कहा जाता है कि यहां ग्रामके पश्चिम सरोवरपर एक बड़ा जैन मंदिर था। आसपास बहुतसी नग्न मूर्तियां पाई जाती हैं।

(९) बागेवाडी–बीजापुरसे दक्षिण पूर्व २९ मील। यहां लिंगायत मठके स्थापक बांसवका जन्म स्थान है। वासवेश्वरका मंदिर दक्षिण मुख है जिसमें आलोंपर जैन मूर्तियां हैं और बड़ी कारीगरीके द्वारपाल हैं। रामेश्वर मंदिर भी पुराना और जैन पद्धतिका है।

(१०) बासुकोड–मुद्देविहालसे ६ मील उत्तर पश्चिम। यहां १ जैन मंदिर है जिसको जासना चार्यने बनवाया था।

(११) बीजापुर–फ्रांसीस यात्री मन्देलो–जिसने सन् १६३८ और ३९ में भारत यात्रा की थी–लिखता है कि सर्व एसिया भरमें जितने बडे २ नगर हैं उनमें एक यह भी है, इसका ऊंचा पाषाणकोट १९ मीलसे ऊपर है। चौडी खाई है। बहुत दृढ़ किला है,जहां १००० पीतल और लोहेके तोपखाने हैं। बादशाही मकानको अर्ककिला कहते हैं। मलिक करीमकी मसजिद को स्थानीय लोग कहते हैं कि यह एक जैन मंदिर था।

(सं० नोट) अब भी यहां कई पुराने जैन मंदिर हैं व किलेमें प्राचीन दि०जैन मूर्तियां अखंडित विराजमान हैं। यहांसे २ मील एक प्राचीन जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथजीका है, प्रतिमा १ हाथ ऊंची है। किलेकी मूर्तियें चंदावावडीसे लाई गई हैं। उनका वर्णन–

एक श्री पार्श्वनाथ ३ हाथ पद्मासन संवत १२३२

२ प्रतिमा प० २॥ फुट ऊंची

१ शांतिनाथकी ३ मूर्तियें १ फुट ऊंची १ स्फटिक पाषाणकी एक प्रतिमामें सं० १००१ विजयसूरि प्रतिष्टाचार्य सब प्रतिमाएं ९ हैं (दि० जैन डाइरेक्टरी)।

हम जब २४ मार्च १९२९को किला देखने गए तो वहां हमें ६ मूर्तियें अखंडित दि० जैनकी नीचे प्रमाण मिलीं।

(१) कायोत्सर्ग	२ हाथ ऊंची			नं० ९ सी ६
(२) ,,	२ ,,			नं० ९ सी ५
(३) ,,	२ ,,	पार्श्वनाथ		९ सी ३
(४) ,,	२ ,,			९ सी २
(५) ,,	२ ,,	कृष्णवर्ण		९ सी ४
(६) पल्यंकासन	२ ,,	पार्श्वनाथ		९ सी १

अंतिम दो प्रतिमाओंपर सं० १२३२ शाका पौष सुदी ३ मूलसंघ आदि लिखा है।

(१२) धनूर-कृष्णा नदीपर। हुनगुंडसे उत्तर १० मील, ग्रामके बाहर एक छोटा मंदिर जैनके ढंगका है—इसमें लिंग है। शनेश्वरका कहलाता है।

(१३) हल्लूर-बागलकोटमे पूर्व ९ मील-ग्रामके उत्तरमें पहाडीपर मेलगुडी अर्थात् पहाडी मंदिर है (मेल=पहाडी, गुडी= मंदिर) जो ७६ फुट लम्बा ४२ फुट चौडा और २१ फुट ऊंचा है। यह दक्षिण मुख है, बहुतही बढिया प्राचीन जैन मंदिर है। अब इसमें लिंग रख दिया गया है। भीतोंके सहारे व सामने

आठ खड़े आसन जैन मूर्तियां हैं, हरएक पांच फुट ऊंची है। इनमेंसे चारपर सात फणका सर्पमंडप है। दूसरे चारपर दो सर्पफण फैलाये हैं। हरएक चरणके पास सर्प है।

(सं० नोट–ये सब श्री पार्श्वनाथकी अपूर्व मूर्तियां हैं) इनमें कुछ खंडित हैं। मंदिर बिजलीसे नष्ट हो गया है।

नोट–शायद यह मंदिर तब बना था जब ११वीं शताब्दीके करीब यहां दिगम्बर जैन बहुत रहते थे।

(१४) हेब्बल–बागेवाड़ीसे दक्षिण १२ मील। ग्रामसे ३०० गज जाकर बागेवाड़ी नोदगुंडी सड़क है। झाड़ियोंके पीछे एक ऊंची भीतसे छिपा हुआ एक सुन्दर जैन मंदिर है। जिसमें मंडप, वेद्री व कमरा है। कमरेमें २२ खंभे हैं व ४ पिलैस्तर हैं चार बीचके खंभे ८ फुट ऊंचे हैं दूसरे ६ फुट ऊंचे हैं। भीतरकी वेदीका मंदिर २९ फुट चौकोर है। इसको भी लिंगमंदिर कर लिया गया है।

(१५) जैनपुर–बागलकोटसे उत्तर पश्चिम २९ मील। यह बीजापुर, बागलकोटकी सड़क पर कृष्ण नदीके बाएं तटपर है। यहां पहले जैन लोग रहते थे इसीलिये जैनपुर प्रसिद्ध है।

(१६) करड़ीग्राम–हुनगुंडसे उत्तर पूर्व १० मील। यहां तीन मंदिर व तीन पुराने शिलालेख हैं। ये मंदिर मूलमें जैनियोंके दिखते हैं। एक लेख ११९२ व एक १९९३का है। यह दूसरा लेख ग्यारहवें विजयनगर राजा सदाशिवरायका है (१५४२–१५७३)

(१७) कुन्टोजी–मुद्देविहालसे उत्तरपूर्व २ मील। वासेश्वरका मंदिर चार कोनोंका है। ७० फुटसे १२४ फुट। दो मंदिर मिले हैं, इनके मध्यमें एक आंगन है जिसमें चौतीस जैन खंभे हैं, २२ गोल १२ चौकोर।

(१८) मुद्देविहाल–बीजापुरसे दक्षिण पूर्व ४९ मील। यहां नगरके आसपास कुछ जैन खंभे पड़े हुए हैं।

(१९) संगम–हुनगुंदसे उत्तर १० मील। संगमेश्वरके मंदिरके २७ खंभे जैन ढंगके हैं। इस मंदिरको ८०० वर्ष हुए एक जैनने बनवाया था, जिसका नाम था दायनायक गंजीपाल। सीढ़ियोंसे नीचे मंदिरसे नदीको जाने हुए एक पाषाणकी छत्री है जिसके भूरे हरे रंगके चार गोल खंभे जैनियोंके हैं।

(२० सिदगी–बीजापुरसे उत्तर पूर्व ३९ मील। यहां संगमेश्वरका मंदिर है जिसमें बहुतसी जैन मूर्तियां हैं, कुछ खंडित हैं।

(२१) सिरूर–बागलकोटसे दक्षिण पश्चिम ९ मील। ग्रामके बाहर लक्ष्मीका खुला मंदिर है जिसमें जैन खंभे हैं। बडे सरोवरके दक्षिण तटपर १८ एकड़ भूमिमें एक प्राचीन और सुन्दर सिद्धेश्वरका मंदिर (६० से ३२ फुट) है। यह मूलमें जैन मंदिर था। भीत और खंभोंपर अच्छी खुदाई है। मंदिरके दक्षिण तरफ शिलालेख हैं, जो संस्कृत और पुरानी कनड़ीमें हैं। इनमें कोल्हापुरवंशका वर्णन है जो चालुक्योंके आधीन थे। नामशाका ९७२से १०२१तकके हैं। मंदिरके पूर्व द्वारपर एक चबूतरा है। एक पत्थरको दो जैन खंभे थांभे हुए हैं। ग्रामके आसपास बहुतसे जैन खंभे फैले पडे हैं।

तलाचकोड या वासिलहिड–वादामीसे दक्षिण ३ मील, देवीके मंदिरके पास १ झील ३६२ फुट चौकोर व २९ फुट गहरी है। इसको सन् १६८०में दो जैन सेठ शंकरसेठ और चन्द्रसेठने बनवाया था।

(२२) बागनगर–जि० बीजापुर–बीजापुरसे २० मील। प्राचीन जैन मन्दिर श्री पार्श्वनाथ कायोत्सर्गवर्णहरा १। हाथ (दि० जैन डा०)

(२३) पनालाका किला–यहां अम्बाबाईका प्रसिद्ध मंदिर है। जिसके चारों ओर बहुतसे प्राचीन मंदिर हैं। एक दिगम्बर जैन मन्दिर है जिसमें अब विष्णुकी मूर्ति है। मंडपके गुम्बजके नीचे बहुतसी कायोत्सर्ग नग्न जैन मूर्तियां हैं।

(१७) कुन्टोजी-मुद्देविहालसे उत्तरपूर्व २ मील। वासेश्वरका मंदिर चार कोनोका है। ७० फुटसे १२४ फुट। दो मंदिर मिले हैं, इनके मध्यमें एक आंगन है जिसमें चौतीस जैन खंभे हैं, २२ गोल १२ चौकोर।

(१८) मुद्देविहाल-बीजापुरसे दक्षिण पूर्व ४९ मील। यहां नगरके आसपास कुछ जैन खंभे पड़े हुए हैं।

(१९) संगम-हुनगुंडसे उत्तर १० मील। संगमेश्वरके मंदिरके २७ खंभे जैन ढंगके हैं। इस मंदिरको ८०० वर्ष हुए एक जैनने बनवाया था, जिसका नाम था चावनायक गंजीपाल। सीढ़ियोंसे नीचे मंदिरसे नदीको जाते हुए एक पाषाणकी छत्री है जिसके भूरे हरे रंगके चार गोल खंभे जैनियोंके हैं।

(२० सिंदगी-बीजापुरसे उत्तर पूर्व ३९ मील। यहां संगमेश्वरका मंदिर है जिसमें बहुतसी जैन मूर्तियां हैं, कुछ खंडित हैं।

(२१) सिरूर-बागलकोटमे दक्षिण पश्चिम ९ मील। ग्रामके बाहर लक्ष्मीका खुला मंदिर है जिसमें जैन खंभे हैं। बड़े सरोवरके दक्षिण तटपर १८ एकड़ भूमिमें एक प्राचीन और सुन्दर सिद्धेश्वर का मंदिर (६० से ३२ फुट) है। यह मूलमें जैन मंदिर था। भीत और खंभोंपर अच्छी खुदाई है। मंदिरके दक्षिण तरफ शिलालेख हैं, जो संस्कृत और पुरानी कनड़ीमें हैं। इनमें कोल्हापुरवंशका वर्णन है जो चालुक्योंके आधीन थे। नामशाका ९७२से १०२१तकके हैं। मंदिरके पूर्व द्वारपर एक चबूतरा है। एक पत्थरको दो जैन खंभे थांभे हुए हैं। ग्रामके आसपास बहुतसे जैन खंभे फैले पड़े है।

तलाचकोट या वासिलहिड-वादामीसे दक्षिण ३ मील, देवीके मंदिरके पास १ झील ३६२ फुट चौकोर व २९ फुट गहरी है। इसको सन् १६८०में दो जैन सेठ शंकरसेठ और चन्द्रसेठने बनवाया था।

(२२) वाग्रानगर-जि० बीजापुर-बीजापुरसे २० मील। प्राचीन जैन मन्दिर श्री पार्श्वनाथ कायोत्सर्गवर्णहरा १। हाथ (दि० जैन डा०)

(२३) पनालाका किला-यहां अम्बाबाईका प्रसिद्ध मंदिर है। जिसके चारों ओर बहुतसे प्राचीन मंदिर हैं। एक दिगम्बर जैन मन्दिर है जिसमें अब विष्णुकी मूर्ति है। मंडपके गुम्बजके नीचे बहुतसी कायोत्सर्ग नग्न जैन मूर्तियां हैं।

(१७) कुन्टोजी-मुदेविहालसे उत्तरपूर्व २ मील। वासेश्वरका मंदिर चार कोनोंका है। ७० फुटसे १२४ फुट। दो मंदिर मिले हैं, इनके मध्यमें एक आगन है जिसमें चौतीस जैन खंभे हैं, २२ गोल १२ चौकोर।

(१८) मुदेविहाल-बीजापुरसे दक्षिण पूर्व ४५ मील। यहां नगरके आसपास कुछ जैन खंभे पड़े हुए हैं।

(१९) संगम-हुनगुडसे उत्तर १० मील। सगमेश्वरके मंदिरके २७ खंभे जैन ढंगके हैं। इस मंदिरको ८०० वर्ष हुए एक जैनने बनवाया था, जिसका नाम था दायनायक गंजीपाल। सीढियोंसे नीचे मंदिरसे नदीको जाते हुए एक पाषाणकी छत्री है जिसके भूरे हरे रंगके चार गोल खंभे जैनियोंके हैं।

(२० सिदगी-बीजापुरसे उत्तर पूर्व ३९ मील। यहां संगमेश्वरका मंदिर है जिसमें बहुतसी जैन मूर्तियां हैं, कुछ खंडित हैं।

(२१) सिरूर-बागलकोटसे दक्षिण पश्चिम ९ मील। ग्रामके बाहर लक्ष्मीका खुला मंदिर है जिसमें जैन खंभे हैं। बड़े सरोवरके दक्षिण तटपर १८ एकड़ भूमिमें एक प्राचीन और सुन्दर सिद्धेश्वर का मंदिर (६० से ३२ फुट) है। यह मूलमें जैन मंदिर था। भीत और खंभोंपर अच्छी खुदाई है। मंदिरके दक्षिण तरफ शिलालेख हैं, जो संस्कृत और पुरानी कनड़ीमें हैं। इनमें कोल्हापुरवंशका वर्णन है जो चालुक्योंके आधीन थे। नामशाका ९७२से १०२१तकके हैं। मंदिरके पूर्व द्वारपर एक चबूतरा है। एक पत्थरको दो जैन खंभे थामे हुए हैं। ग्रामके आसपास बहुतसे जैन खंभे फैले पड़े हैं।

गिनाते हैं और खासकर लिखते हैं कि जैन मंदिरोंके लिये ग्राम और भूमिदान किये गए।

(Fleets' Canarese dynasties 7-10.)

धारवाड़में प्राचीन चालुक्य राज्यका सबसे प्राचीन लेख हांगल्मे पूर्व १० मील आदुरमें एक पाषाणपर पाया गया है। इसमें लेख है कि छठे पूर्वीय चालुक्य राजा कीर्तिवर्मा प्रथम (ता० ५६७) ने जैन मंदिरको दान किया जिसको एक नगरसेठने बनवाया था। कादम्बराज्यके मध्यमें इस लेखका मिलना इस बातको पुष्ट करता है कि कीर्तिवर्माने कादम्बोंको हरा दिया। जो बात ऐहोलके प्रसिद्ध लेखमें है। बंकापुरसे २० मील लक्ष्मेश्वरमें जो तीन लेख ता० ६८७, ७२९ व ७३४के राजा विनयदित्य (६८०-६९७), विजयदित्य (६९७ ७३३), राजा विक्रमादित्य द्वि० (७३३-७४७)के शासन कालके मिले हैं उनमें भी जैन मंदिरों और गुरुओंको दानका वर्णन है।

कलचूरी (११६१-११८४), यद्यपि कलचूरी लोग जैन थे, परन्तु बज्जालको शैवधर्मपर प्रेम होगया। उसका मंत्री वासव था, उसने ऐसा अवसर पाकर लिंगायत पंथ चलाया और बहुत अनुयायी बनाकर बज्जालको गद्दीसे उतारकर आप राजा होगया। जैनियोंके कथनानुसार बज्जालके पुत्र सोमेश्वरसे भय खाकर वासव उत्तर कनड़ाके उलवीमें भाग गया और सोमेश्वर राजा हुआ।

कलचूरी या कालाचूर्य-इनकी उपाधि कालंजर-परवाराधीश्वर है। इनकी उत्पत्ति कालंजर नगरसे है। जो अब बुन्देलखंडमें एक पहाड़ी किला है। कनिंघम साहब (A. R. IX)

(२३) धाड़वाड़ जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है। उत्तरमें बेलगाम, बीजापुर। पश्चिममें निजाम और तुगभद्रा नदी जो मदराससे जुदा करती है। दक्षिणमें मैसूर, पश्चिममें उत्तर कनड़ा। यहा ४६०२ वर्ग मील स्थान है।

इसका इतिहास यह है। ताम्रपत्रोंसे यह बात प्रगट होती है कि सन् ई० के एक शताब्दी पहले धाडवाडके भागोंमें उत्तर कनड़ाके बनवासीके राजा लोग राज्य करते थे। बनवासीके अन्ध भृत्योंके पीछे गग या पल्लव वंशके राजाओंने राज्य किया था, उन्होंने पूर्वीय कदम्बोंको स्थान दिया। कदम्ब एक जैन वंश था जिसने बनवासीमें छठी शताब्दी तक राज्य किया फिर पूर्वीय चालुक्यों और पश्चिमीय चालुक्योंने ७६० तक, राष्ट्रकूटोंने ९७३ तक फिर पश्चिमीय चालुक्योंने ११६९ तक फिर कल्चूरी वंशने ११८४ तक फिर होयसोलियोंने १२०३ तक फिर देवगिरि यादवोंने १२९९ तक। इनके मध्यमें आधीन रहकर कादम्बोंने भी राज्य किया जिनके राज्य स्थान बनवासी और हागलमें थे। फिर मुसल्मानोंने अधिकार किया। कहते हैं कि हागलमें पांडवोंने निवास किया था। धाडवाड गजेटियरसे यह मालूम हुआ कि कादम्ब जैन राजाओंका वंश था। जिनकी राज्यधानी बनवासी थी जो उत्तर मैसूरमें हरिहरके पास उठंगी पर है, तथा बेलगाममें हाल्सी पर व धाडवाडमें त्रिपर्वत या त्रिगिरि पर थी। उनके ताम्रपत्र जो करजगीसे पश्चिम ६ मील देवगिरि पर पाए गए हैं जो राजाओंके नाम

गिनाते हैं और खासकर लिखते हैं कि जैन मंदिरोंके लिये ग्राम और भूमिदान किये गए।

(Fleets' Canarese dynasties 7-10)

धारवाडमें प्राचीन चालुक्य राज्यका सबसे प्राचीन लेख हांगल्लमे पूर्व १० मील आदुरमें एक पाषाणपर पाया गया है। इसमें लेख है कि छठे पूर्वीय चालुक्य राजा कीर्तिवर्मा प्रथम (ता० ९६७) ने जैन मंदिरको दान किया जिसको एक नगरसेठने बनवाया था। कादम्बराज्यके मध्यमें इस लेखका मिलना इस बातको पुष्ट करता है कि कीर्तिवर्माने कादम्बोंको हरा दिया। जो बात ऐहोलके प्रसिद्ध लेखमे है। चकापुरसे २० मील लखमेश्वरमे जो तीन लेख ता० ६८७, ७२९ व ७३४के राजा विनयदित्य (६८०-६९७), विजयदित्य (६९७ ७३३), राजा विक्रमादित्य द्वि० (७३३-७४७)के शासन कालके मिले हैं उनमे भी जैन मंदिरो और गुरुओंको दानका वर्णन है।

कलचूरी (११६१-११८४), यद्यपि कलचूरी लोग जैन थे, परन्तु बज्जालको शैवधर्मपर प्रेम होगया। उसका मत्री वासव था, उसने ऐसा अवसर पाकर लिंगायत पंथ चलाया और बहुत अनुयायी बनाकर बज्जालको गद्दीसे उतारकर आप राजा होगया। जैनियोंके कथनानुसार बज्जालके पुत्र सोमेश्वरसे भय खाकर वासव उत्तर कनड़ाके उलवीमें भाग गया और सोमेश्वर राजा हुआ।

कलचूरी या कालाचूर्य-इनकी उपाधि कालंजर-परवाराधीश्वर है। इनकी उत्पत्ति कालंजर नगरसे है। जो अब बुन्देलखंडमे एक पहाडी किला है। कनिंघम साहब (A. R. IX)

थनानुसार ९ मी, १० वीं, ११ मी शताब्दीमे यह बुन्देलखण्डमें एक बलवान शाखा चेदीवंशकी थी। उनके वंशका संवत कालाचूरी या चेदी संवत कहलाता है—जो सन् ई० २४९ से चलता है। उनकी राज्यधानी त्रिपुरा पर थी। जो जबलपुरसे पश्चिम ६ मील है। कालाचूरीके त्रिपुरा वंशके लोगोंने बहुत दफे राष्ट्रकूट और पश्चिमीय चालुक्योंमें विवाह सम्बन्ध किये थे। इसी वंशकी दूसरी शाखा छठी शताब्दीमें कोन्कनमें राज्य करती थी, जहांसे पूर्वीय चालुक्य राजा मंगलीशने—जो पुलकेशी द्वि० (६१०–६३४) का चाचा था—भगा दिया था। कालाचूरी अपनेको हैहय कहते हैं और अपनी उत्पत्ति यदुवंशमें कार्यवीर्य या सहस्रबाहु अर्जुनसे बताते हैं।

पुरातत्व—धाड़वाड चालुक्य राजाओंके ढंगसे भरा हुआ है। पुरातत्वके मुख्यस्थान है। गडग, लाक्कंडी, दम्बल, हावेरी, हांगल, अन्निगेरी, बन्कापुर, चन्द्रदामपुर, लक्ष्मेश्वर, नारेगल। इन सबोंमें बहुत सुन्दर पाषाणके मंदिर हैं जो ९ मी से १३ वीं शताब्दी तकके हैं। इनको जखनाचार्यका ढंग कहते हैं।

जखनाचार्य एक राजकुमार था जिसके द्वारा अचानक एक ब्राह्मणका वध होगया था। इसके प्रायश्चित्तमें उसने बनारससे केप कमोरिन तक मंदिर २० वर्षमें बनवाये।

लिंगायत—इस जिलेमें चारलाखसैंतीसहजार है ४३७०००। यह बात साधारण रीतिसे मानी जाती है कि लिंगायतोंकी उत्पत्ति १२ बारहवीं शताब्दीमें है। जब एक धार्मिक सुधारक हैदराबादके कल्याणीके निवासी बासवने इस जातिकी प्रसिद्धि की और इसको

शिवभक्त बनाया। यह माना जाता है कि जैन लोग अधिक संख्यामें लिंगायत होगए। उस समय जैन धर्म दक्षिण महाराष्ट्रमें फैला हुआ था।

It is supposed that lingayats were largely converts from Jainism which was prevalent throughout southern Mahratta country where the sect first came with prominence.

मुख्यस्थान।

(१) बंकापुर—ता० बंकापुर। एकनगर। बंकापुरका सबसे पहले नाम कोल्हापुरके एक शिला लेखमें आया है जो सन् ८७८ का है। उसमें वर्णन है कि बंकापुर एक बड़ा प्रसिद्ध और सबसे बड़ा नगर है। इसका नाम चेलेकितन राजा बंकेयारसके नामसे पड़ा है जो राष्ट्रकूट राजा अमोघ वर्ष (८५१–६९) के नीचे धाड़वाड़का राजा था। सन् १०७१ में गंगवंशका राजा उदयदित्य इस नगरमें राज्य करता था। सन् १४०६में बहमनी सुलतान फीरोजशाहने इसे अधिकारमें किया। यहां एक सुन्दर जैन मन्दिर रङ्गस्वामीका है जिसमें कई शिला लेख हैं। उनमें एक लेख शाका ९७७ (सन् १०५५) का है जब कि चालुक्य राजा गंग परमेश्वर विक्रमादित्य देव जो त्रैलोक्य मल्लदेवका पुत्र था व कुवलालपुर नगरका महाराजा व नन्दगिरिका स्वामी था। इसके मुकुटमें हाथीका चिन्ह था व जो गंगावादित ९६००० व वनवासी १२००० पर राज्य करता था और जब कि उसके आधीन बड़ा सर्दार कादम्ब कुलतिलक राजा मयूरवर्मा १२००० वनवासीमें राज्य कर रहा था, उस

थनानुसार ९ मी, १० वीं, ११ मी शताब्दीमें यह बुन्देलखण्डमें एक बलवान शाखा चेदीवंशकी थी। उनके वंशका संवत कालाचूरी या चेदी संवत कहलाता है—जो सन् ई० २४९ से चला है। उनकी राज्यधानी त्रिपुरा पर थी। जो जबलपुरसे पश्चिम ६ मील है। कालाचूरीके त्रिपुरा वंशके लोगोंने बहुत दफे राष्ट्रकूट और पश्चिमीय चालुक्योंसे विवाह सम्बन्ध किये थे। इसी वंशकी दूसरी शाखा छठी शताब्दीमें कोंकनमें राज्य करती थी, जहांसे पूर्वीय चालुक्य राजा मंगलीशने—जो पुलकेशी द्वि० (६१०–६३४) का चाचा था—भगा दिया था। कालाचूरी अपनेको हैहय कहते हैं और अपनी उत्पत्ति यदुवंशमें कार्यवीर्य या सहस्रबाहु अर्जुनसे बताते हैं।

पुरातत्व—धाड़वाड़ चालुक्य गनाओंके ढंगसे भरा हुआ है। पुरातत्वके मुख्यस्थान हैं। गड़ग, लाकंडी, दम्बल, हावेरी, हागल, अन्निगेरी, बन्कापुर, चन्ददामपुर, लक्ष्मेश्वर, नारेगल। इन सबोंमें बहुत सुन्दर पाषाणके मंदिर हैं जो ९ मी से १२ वीं शताब्दी तकके हैं। इनको जखनाचार्यका ढंग कहते हैं।

जखनाचार्य एक राजकुमार था जिनके द्वारा अचानक एक ब्राह्मणका बंध होगया था। उसके प्रायश्चित्तमें उसने बनारससे केप कमोरिन तक मंदिर २० वर्षमें बनवाये।

लिंगायत—इस जिलेमें चारलाख सैंतीसहजार हैं ४३७०००। यह बात साधारण रीतिसे मानी जाती है कि लिंगायतोंकी उत्पत्ति १२ बारहवीं शताब्दीमें है। जब एक धार्मिक सुधारक हैदराबादके कल्याणीके निवासी बसवने इस जातिकी प्रसिद्धि की और इसको

शिवभक्त बनाया। यह माना जाता है कि जैन लोग अधिक सख्यामें लिंगायत होगए। उस समय जैन धर्म दक्षिण महाराष्ट्रमें फैला हुआ था।

It is supposed that lingayats were largely converts from **Jainism** which was prevalent throughout southern Mahratta country where the sect first came with prominence

मुख्यस्थान।

(१) बंकापुर–ता० नरापुर। एक नगर। बंकापुरका सबसे पहले नाम कोल्हापुरके एक शिला लेखमें आया है जो सन् ८७८ का है। उसमे वर्णन है कि बंकापुर एक बडा प्रसिद्ध और सबमे बडा नगर है। इसका नाम चेलेस्तिन राजा बंकेयारसके नामसे पडा है जो राष्ट्रकूट राजा अमोघ वर्ष (८५१–६९) के नीचे धाडवाडका राजा था। सन् १०७१ में गगवशका राजा उदयदित्य इस नगरमें राज्य करता था। सन् १४०६में बहमनी सुलतान फीरोजशाहने इसे अधिकारमे लिया। यहा एक सुन्दर जैन मन्दिर रङ्गस्वामीका है जिसमे कई शिला लेख हैं। उनमें एक लेख शाका ९७७ (सन् १०५५) का है जब कि चालुक्य राजा गंग परमेश्वर विक्रमादित्य देव जो त्रैलोक्य मल्लदेवका पुत्र था व कुवलालपुर नगरका महाराजा व नन्दगिरिका स्वामी था। इसके मुकुटमें हाथीका चिन्ह था व जो गगावाडि ९६००० व वनवासी १२००० पर राज्य करता था और जब कि उसके आधीन बडा सर्दार कादम्ब कुलतिलक राजा मयूरवर्मा १२००० वनवासीमें राज्य कर रहा था, उस

समय जैन मंदिरके लिये हरिकेशरीदेव और उसकी स्त्री सचल-देवीने भूमि दी। यह वंकापुरके पांच धार्मिक महाविद्यालयोंके स्थापक थे, नगरसेठ थे, महाजन थे और सोलह (The sixteen) थे। (सोलह थे इसका भाव समझमें नहीं आया)। नगरेश्वरके खवंतु खम्बद बस्तीके मंदिरमें एक पुराना कनडी लेख है नं० ६मे १२ लाइन हरएक २३ अक्षरकी हैं इसका भाव यह है कि शाका १०१३ में त्रिभुवनमल्ल विक्रमादित्य द्वि० के अफसरने एक दान किया। नं० ७ बाईं तरफ जो लेख है वह २६ अक्षरोंकी लाइनवाला ३७ लाइनमें है। इसमें कथन है कि विक्रमके ४९ वर्षके राज्यमें शाका १०४२में किरिया वंकापुरके जैन मंदिरको दान किया गया।

(Ind. Ant IV. 203 & V 203-5.)

धाडवाड गजटियरमें है कि बंकापुरको शाहाबाजार भी कहते हैं। यह धाडवाडसे ४० मील है। यहां कादम्बोंने १०५० से १२०० तक राज्य किया जो पश्चिमी चालुक्योंके आधीन थे (९७३-११९२)। उस समय यह जैनियोंके महत्त्वमे पूर्ण था।

At that time Bankapur Seems to hve been an important Jain centre with a Jain temple and 5 religious colleges.

एक बड़ा जैन मंदिर था (शायद वही जो रंगस्वामीका मंदिर कहलाता है व जिसमें ६० खंभे हैं) तथा पांच धार्मिक महाविद्यालय थे। सन् १०९१, ११२० और ११३८ में जैन मंदिरको दान किये गए थे जिसका वर्णन नगरेश्वरके मंदिरके लेखमें हैं। ये दान पश्चिमके चालुक्य राजा विक्रमादित्य द्वि० (१०७३-

११२६) और उसके पुत्र सोमेश्वर चतुर्थ (११२६-११३८) के राज्यमें हुए थे।

यहां ही वंकापुरमें श्री गुणभद्राचार्यने अपना उत्तरपुराण शाका ८२० व सन् ८९८में पुर्ण किया जब यह वनवासी राज्यकी राज्यधानी थी व यहां राजा अकाल वर्षका सामन्त लोकादित्य राज्य करता था। यह जैन धर्मका भक्त था।

श्री गुणभद्रकी गुरुवंशावली इस प्रकार है-

श्री जिनसेन बडे भारी आचार्य व कवि व विद्वान थे-जिनसेनने श्री जयधवल टीका शाका ७५९में पूर्ण की तथा पार्श्वाभ्युदय काव्यको मान्यखडमें राजा अमोघवर्षके राज्यमें पूर्ण किया। इस काव्यको इंग्रेज विद्वानोंने मेघदूत (कालिदासकृत)से बढ़िया लिखा है।
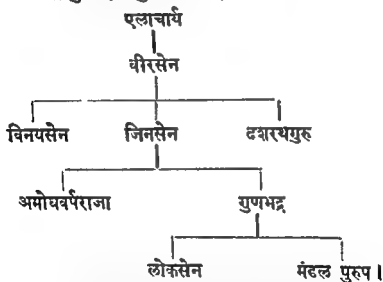
Jinasen however claims to be considered a higher genius than the author of cloud messe-

nger (मेघदूत्त) पार्श्वाम्युदय is one of the curiosities of sanskrit literature.

श्री जिनसेनके समकालीन राजा इस भांति थे।

(१) राजा अमोघवर्ष–प्रथम (जैनधर्मी) नृपतुंगदेव, सार्वदेव। यह बडा विद्वान् था, इसने संस्कृत व कनडीमें अनेक जैन ग्रन्थ बनाए। प्रसिद्ध संस्कृतमें प्रश्नोत्तर रत्नमाला व कनडीमें कविराज मार्ग अलंकार ग्रन्थ हैं। राज्यकाल शाका ७६६ से ७९९ तक है। इनके समयमें ही श्री जिनसेनने शरीर त्यागा। राजा अमोघवर्ष भी अंतमें मुनि होगए थे। इसके पीछे ८०११ वर्ष तक अमोघवर्षके पितृव्य इंद्रराजने फिर अमोघवर्षके पुत्र अकालवर्ष या द्वि० कृष्णने शाका ८११ से ८३३ तक राज्य किया यह बडा सम्राट था।

(२) धाड़वाड़ नगर–नगरके बाहर काली मिट्टीके मैदान नवल गुंडकी पहाडी तक पूर्वओर चले गए हैं व उत्तर पूर्व प्रसिद्ध येलम्मा और पारसगढकी पहाड़ी तक (दक्षिण–पूर्वकी तरफ मुलगंडकी पहाडी करीब ३६ मील दूर है)।

धाड़वाड़के दक्षिण १॥ मील मैलारलिंग नामकी पहाडी है। उसकी चोटी पर एक पाषाणका मंदिर जैन ढंगका बना है। खंभे आदि बहुत बडे भारी पत्थरके हैं तथा उसी पाषाणकी छत बहुत सुन्दर चित्रकलासे अंकित है। एक खम्भेमें फारसीमें लेख है कि इस मंदिरको मसजिदके रूपमें बीजापुर सुलताननें सन् १६८० में बदल दिया।

(३) हांगलनगर–धारवाड़से उत्तर ९० मील। यहा ६०० गजके करीब चौड़ा एक टीला है जिसको कुन्तीनादिव्वा या कुन्तीका

झोपडा कहते हैं। यहा यह विश्वास है कि विदेश भ्रमणमें पाडवोने यहा निवास किया था। इसको शिलालेखोंमें विराटकोट, विराटनगरी, पानुन्गल भी लिखा है। पश्चिमी चालुक्योंके नीचे कादम्ब वशके राजा यहा सन् १२०० तक राज्य करते थे फिर होयसाल राजा वल्लालने अधिकार जमाया। यहा एक पुराना किला है जिसमे कई पुराने जीर्ण जैन मंदिर हैं-इनमें शिलालेख भी हैं। एकमे पश्चिमी चालुक्य राजा विक्रमादित्य त्रिभुवनमल्लका लेख है।

(४) लक्कंडी-ता० गड़गमें एक प्राचीन महत्वका स्थान है। गडग शहरसे दक्षिण पूर्व ७ मील। यहा ५० मंदिर व २९ शिलालेख हैं। ये सब जाखनाचार्यके बनवाए कहे जाते हैं। सबमें पुराना लेख सन् ८६८का है। सन् ११९२में होयसालराजा वल्लाल या वीरवल्लाल (११९२-१२११)ने अपनी राज्यधानी इसी स्थान पर की तब इसका नाम लक्कीगुडी प्रसिद्ध था। यहीं वल्लालने यादव भिल्लानकी सेनाको हराया जो उसके पुत्र जैतुगीकी सेनापतित्वमे आई थी। ग्राममें दो जैन मंदिर हैं-पश्चिममें, सबसे बडा है, इसमे बहुत बडी बैठे आसन जैन तीर्थंकरकी मूर्ति है। इससे थोडी दूर एक छोटा जीर्ण जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथजीका है, इस जैन मंदिरके चारो तरफ बहुतसे जैन मूर्तियोके खड पड़े हैं। एक जैन मंदिरमे ११७२का लेख है। बडा मंदिर बहुत सुन्दर है, शिखर भी पूर्ण रक्षित है। सन् १०७०मे चोल राजाने हमला किया था तब यहाके मंदिर व लक्ष्मणेश्वरके मंदिर नष्ट किये गए थे किन्तु फिरसे दुरुस्त किये गए थे। इस जैन मंदिरमें शिल्पकला बहुत सुन्दर है ऐसा फर्गुसन साहब कहते हैं।

(५) मूलगुंड नगर–गडगसे दक्षिण पश्चिम १२ मील। यहां ४ जैन मंदिर हैं। जिनमें ३ के नाम हैं–श्री चन्द्रप्रभु श्री पार्श्वनाथ, हीरी मंदिर। हीरी मंदिरमें दो शिलालेख हैं। एक सन् १२७५ का है। चौथे जैन मंदिरमें दो लेख सन् ९०२ और १०९३ के हैं।

यह स्थान वेन्तूरसे दक्षिण पूर्व ४ मील है।

गड़गका पुराना नाम क्रतुक है। चंद्रनाथके जैन मंदिरकी भीतें बाहरसे देखनेयोग्य हैं।

यहां ७ शिलालेख हैं (१) चंद्रनाथ मंदिरमें शाका ११९७ का। इसमें मूलगुंडके राजा मदरसाकी स्त्री भामत्तीकी मृत्युका वर्णन है। (२) इसी मंदिरके एक खंभे पर शाका ११९७ का है। (३) यहीं शाका ८२५का है। राष्ट्रकूट राजा कृष्णवल्लभके राज्यमें चंद्रार्य वैश्यने मूलगुंडमें एक जैन मंदिर बनवाया व भूमि दान की। इस मंदिरके पीछे एक बहुत बडी पहाड़ी चट्टान है, उसपर २५ फुट लम्बी एक मूर्ति पूर्ण कोरी गई है व लेख है जो कुछ मिट गया है। (४) वहीं एक पाषाण है उसमें छोटा लेख है। (५) एक जैन मंदिरकी भीत पर शाका ८२४का लेख है। (६) दूसरे जैन मंदिरमें शाका ९७५का है। (७) हीरी मंदिरमें शाका ११९७का है।

मूलगुंडमें एक शिलालेख पर यह वर्णन है–

श्री चंद्रप्रभुको नमस्कार हो–चीकारी जिसने जैन मंदिर बनवाया था उसके पुत्र नागार्य्यके छोटे भ्राता आसार्य्यने दान किया।

यह आसार्य्य नीति और धर्मशास्त्रमें बड़ा विद्वान था इसने नगरके व्यापारियोंकी सम्मतिसे १००० पानके वृक्षोंके खेतको सेनवंशके आचार्य कनकसेनकी सेवामें मंदिरोंके लिये दान किया। यह कनकसेन मीरव व वीरसेनका शिष्य था। यह वीरसेनजी पूज्यपाद कुमारसेनाचार्यके संघके साधुओंके गुरु थे।

(६) नारेगल नगर–ता० ऐन। धाडवाडसे पूर्व ९९ मील। यह प्राचीन नगर है। मंदिर हैं व लेख १२ से १३ शताब्दीके हैं।

(७) रत्तीहल्ली–ग्राम ता० कोड–यहांसे दक्षिण पूर्व १० मील ३६ खंभोंका मंदिर जखनाचार्यके ढंगका है। यहां ७ शिलालेख ११७४से १५५० तकके हैं, एक ध्वंश किला है।

(८) रोननगर–धाड़वाड़से ५५ मील। यहां सात काले पाषाणके मंदिर हैं एकमें लेख ११८०के अनुमानका है।

(९) शिग्गांव–ता० बंकापुर–यहां वासप्पा और कलमेश्वरके मंदिरोंमें १० शिलालेख हैं।

(१०) अमिनभवी–धाड़वाड़से उत्तर पूर्व ७मील। यहां ग्रामके उत्तरमें एक प्राचीन जैन मंदिर श्री नेमिनाथजीका बहुत बड़ा है। ४० गज लम्बा है, बहुतसे खंभे हैं। यहां तीन शिलालेख हैं।

(११) हेब्बली–धाड़वाड़के उत्तर ८ मील पूर्व–ब्यारहट्टीसे ५ मील। यहां गांवके दक्षिण संभूलिंगका मंदिर है जिनमें जैन रीतिका शिल्प है। यह करीब ५७ फुट लम्बा है।

(१२) चब्बी–हुबलीसे दक्षिण ८ मील–इसका प्राचीन नाम सोभनपुर था। यह प्राचीनकालमें जैन राजाकी राज्यधानी था। उस समय यहां सात जैन मंदिर थे जिनमें अब ग्रामके मध्यमें

एक रह गया है। विजयनगरके राजाओंने इसकी उन्नति की थी। तथा कृष्णराजा (सन् १५०९-१५२९) ने यहा और हुबलीमें किला बनवाया। इस छब्बीका वर्णन सबसे पहले यहासे उत्तर ४ मील आदरगुंचीके एक पाषाणमें आया है जिसमे लेख सन् ९७१ का है। जिसमें एक दानका वर्णन आया है जो छब्बी (३०) के अधिपति पांचलने किया था।

(Ind Antiquary XII 255)

(१३) आदरगुंची-छब्बीसे उत्तर ४ मील। यहा एक बडी जैन मूर्ति व शिलालेख है।

(१४) हुबली-यहा एक जीर्ण जैन मंदिर है। जिसका फोटो Dharwar and Mysore architeture नामकी पुस्तकमें दिया है।

(१५) सोरातुर-सिरहट्टीसे पूर्व उत्तर २ मील व मूलगुडसे पूर्वदक्षिण ६ मील। यहा एक जैन मंदिरमें शिलालेख शाका ९९३ का है।

(Ind Ant XII 256)

(१६) अरतल-ता० बकापुर-शिग्गावके पश्चिम ६ मील। यहा १ जैन मंदिर है जो सन् ११२०के अनुमान बना था।

(१७) कल्लुकेरी-हागलसे दक्षिण पूर्व १२ मील व तिलिवल्लीसे पूर्व ६ मील। यहा वासरेश्वरका मदिर जैन ढंगका है। भीतोंपर मूर्तिया व शिल्प दर्शनीय है।

(१८) यलवत्ती-नीदसिंगीसे दक्षिण १॥ मील। यहा पुराना जैन मंदिर है। भीतपर नकाशी हैं। एक मूर्ति विना बनी पड़ी है।

(१९) कर गुद्री कोप–हागलसे ९ मील। नारायणके मदिरके दक्षिण या ग्रामके पश्चिम एक सरक्षित कादम्ब वशावलीको पूर्ण दिखानेवाला शिलालेख १०३० का है।

(२०) मुत्तूर–तडससे पश्चिम ३ मील। यहा जैन ढगका मदिर है।

(२१) भैरवगढ़–हैतुरसे उत्तर, तुङ्गभद्रा नदीपर। रत्तीहल्लीसे १० मील दक्षिण पूर्व इसका प्राचीन नाम सिंधुनगर था। यह सिधुवल्लाल वशकी राज्यधानी था जिनका कुलदेवता भैरव था (नोट–यहा जैनस्मारक मिल सक्ते है)

(२२) लक्ष्यमेश्वर–शिग्गावसे उत्तर पूर्व २१ मील व करजगीसे उत्तर २० मील, इसका प्राचीन नाम पुलिकेरी है। यहा बडे महत्वके मदिरोंका समूह है। जिनमे मुख्य है।

(१) संखवस्ती–यह प्राचीन जैन मंदिर है। नगरके मध्यमें ३६ खभोसे छत थभी हुई है। (२) हलवस्ती यह छोटा जैन मदिर है। सख वस्तीमें ६ लेख है।

(Ind Ant VII P 101 111)

इन लेखोका कुछ भाव यह है।

लक्ष्मेश्वरके सखवस्तीके लेखोका वर्णन—

(१) एक पाषाण ९ फुट ऊचा २ फुट चौड़ा है इसमें पुरानी कनडीमें ८२ लाइन है। दशवीं शताब्दीका लेख है। इसमे तीन भिन्न २ लेख है।

नं० १-९१ लाईन तक है। गंगवंशीय मारसिंहदेव सत्यवाक्य कोंगनीवर्मा अर्थात् गंगकन्दर्पने शाका ८९० में विभवसंवत्सरमें जैन गुरु जयदेवके पुलिगेरी (लक्ष्मेश्वरका पुराना नाम) शहरके भीतरकी कुछ जमीनें राजा गंगकंदर्प (स्वयं) द्वारा निर्मित या जीर्णोद्धारित श्री जिनेन्द्रके जैन मन्दिरकी सेवाके लिये दीं। वंशावली इस तरह दी है—

माधव कोंगनीवर्मा या माधव प्रथम
|
माधव द्वि०
|
हरिवर्मा — मारसिंह
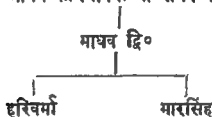
नं० २-९१ ला०से ६१ तक-सेन्द्र वंशका लेख। इस लेखमें चालुक्य राजा रणपराक्रमांक और उसके पुत्र एरय्याका वर्णन है। तब राजा सत्याश्रयका कथन है फिर राजा सत्याश्रयका समकालीन राजा दुर्गाशक्ति था। जो भुजेन्द्र या नागवंशकी शाखा सेन्द्रवंशमें प्रसिद्ध विजयशक्तिके पुत्र कुन्दशक्तिका पुत्र था। राजा दुर्गाशक्तिने जिनेन्द्रके मंदिरके लिये पुलिगेरीमें भूमिदान दी।

नं० ३-६१से अन्ततक-यह पश्चिमीय चालुक्य वंशीय विक्रमादित्य द्वि० (शाका ६९६) का लेख है जो इसने रक्तपुर अपने विजयस्थलसे प्रसिद्ध किया। इसमें कथन है कि पुलिगेरीके संखतीर्थ वस्तीका जीर्णोद्धार कराया व जिनपूजाके लिये कुछ भूमि दान की।

नोट–पहले भागमें कथन है कि देवगणके सिद्धांत परगामी श्री देवेन्द्र भट्टारकके शिष्य मुनि एकदेवके शिष्य जयदेव पंडितको दान किया।

नं० तीसरेमें है कि–मूलसंघ देवगणके श्री रामचंद्र आचार्यके शिष्य श्री विजयदेव पंडिताचार्यको दान किया गया जो जयदेव पंडितके गृहशिष्य थे

(२३) आदुर–हांगलसे पूर्व १० मील। यहां एक शिलालेख संस्कृतमें छठे चालुक्यराजा कीर्तिवर्मा प्रथम (सन् ५६७) का है जिसने जैन मंदिरको दान किया था। चौथा शिलालेख तेरहवें राष्ट्रकूट राजा कृष्ण द्वि० (सन् ८७५ से ९११) या अकालवर्षका है। जैसा कि लेखमें हैं। इसमें चिलकेतन वंशके महासामंतका वर्णन है जो वनवासी (१२०००) का स्वामी था। एक शिलालेख सन् १०४४का पश्चिमी चालुक्यराज्य सोमेश्वर प्रथमका है। इनके समयके ४० लेख सन् १०४२ से १०६८ तकके मिले हैं (Fleet's Canarese Dynasty)

(२४) दम्बल–गड़गसे दक्षिण पश्चिम १३ मील एक प्राचीन नगर है। दक्षिणमें एक जीर्ण पाषाणका किला है जिसके भीतर एक जीर्ण जैन मंदिर है।

(२५) देवगिरि–करजगीसे पश्चिम ६ मील। इसको त्रिपर्वत भी कहते हैं। यहां एक सरोवरको खोदते हुए सन् १८७५–७६में कई ताम्रपत्र मिले हैं। ये सब प्राचीन कादम्ब राजाओंके दानपत्र हैं जो पांचवीं शताब्दीके करीब हुए थे। अक्षर पुरानी

कनडी व भाषा सस्कृत है। एकमें है कि महाराजा कादम्ब श्री कृष्णवर्माके राजकुमार पुत्र देववर्माने जैन मदिरके लिये एक खेत दिया। इसमें यापनीय सघका वर्णन है और है कि श्री कृष्ण कादम्ब वशका शिरोमणी था तथा युद्धका प्रेमी था। दूसरा लेख कहता है कि काकुष्ठ वशी श्री शान्तिवर्माके पुत्र कादम्ब महाराज मृगेश्वर वर्माने अपने राज्यके तीसरे वर्ष कार्तिक वदी १० को परलूरके एक जैन मदिरके लिये खेत दिये। यह दान वैजयन्ती या वनवासीमें दिया गया। तीसरा ताम्रपत्र कहता है कि इसी मृगेश्वर वर्माने जैन मदिरों और निर्ग्रन्थ तथा श्वेतपट जो जैन जातियोंके व्यवहारके लिये एक कालु वग नामका ग्राम अर्पण किया।

(Ind Ant VII 33 34)

(२६) हत्तीमत्तूर—करजगीसे उत्तर ९ मील। यहा एक पाषाण मिला है। पुरानी कनडीमें लेख है। आठवें राष्ट्रकूट राजा इन्द्र चौथे या नित्य वर्ष प्रथमके राज्य सन् ९१६ (शा० ८३८) में शायद जैन मन्दिरके लिये महा सामन्त लेन्देयरासने रच्छवरे कादम्बका तुम्भर ग्राम दान किया। यह सामन्त पुरीगेरी या लक्ष्मेश्वर ३०० का स्वामी व पल्लिय मल्लपूरका महाजन था। यह इस भागका पुराना नाम था।

(२७) निदगुन्डी—बंकापुरसे पश्चिम ९ मील। यहा ९ शिलालेख हैं। उनमेंसे एक चौथे राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष प्रथम (८-१-८७७) के राज्यमें उनके आधीन चिल्केतन वशके बंकेयरायके आधीन बनवासी (१२०००), बेलगाल (३००)

कुन्दूर (५००), पुरीगेरी या लक्ष्मेश्वर ३०० तथा कुन्दरगी (७०) का आधिपत्य था।

(२८) आरटाल—तहसील बंकापुर—हुबलीसे २४ मील। यहां जंगलमें एक प्राचीन पाषाणका मंदिर श्री पार्श्वनाथ स्वामीका है। मूर्ति बड़ी कायोत्सर्ग है। प्राचीन कनड़ीमें शिला लेख है। शाका १०४५में मंदिर बना सत्याश्रय कुल तिलक चालुक्य राजम् भुवनैकमल्लविजय राज्ये।

(दि० जैन डाइरेक्टरी, नकल लेख भी दी है)

(२९) मुन्दी—ता० रोन यहां जैन मंदिरके सम्बन्धमें एक शिलालेख है जो (Fleet s Canarese Dynasty) में दिया है। उसका सार यह है कि इस लेखमें पश्चिमीय गंगवंशी राजकुमार बुट्टुगका वर्णन है। जिसने आतकूर—के शिलालेखके अनुसार चोल राजा दित्त्यको उस युद्धमें मारा था जो दित्त्यसे और राष्ट्रकूट राजा कृष्ण द्वि० से करीब सन् ९४९ में हुआ था। इस लेखमें भूमिदान उस जैन मंदिरको है जिसको उसकी स्त्री दिवलम्बाने मुन्दीके स्थापित किया था। यह राजा बुट्टुग ९६००० ग्रामोंके गंग मन्डलपर राज्य करता था। पुरिकारमें राज्यधानी थी। शाका ८६० कार्तिक सुदी८को इसने जो कि श्रीमान् नागदेव पंडितका शिष्य था ६० निवर्तन भूमि अपनी स्त्री दिवलम्बाके बनाए हुए चैत्यालयके लिये दी। इस स्त्रीने छः आर्यिकाओंका समाधिमरण कराया था तथा इस प्रसिद्ध जैन मंदिरको बनवाया था। यह लेख संस्कृतमें है। वंशावली नीचे प्रकार है—

वंशवृक्ष पश्चिम गंगराजा।

(१) जान्हवी वंश कान्वायन गोत्रीय प्रसिद्ध कोंगुणी वर्मन्
|
माधव प्रथम–जिसने दत्तकसूत्रपर टीका लिखी है।
|
हरिवर्मन
|
विष्णुगोप
|
माधव द्वि०
|
परमेश्वर या अविनीति–यह माधवकी बहनका लड़का कादम्बवंशीय कृष्ण वर्मनका पुत्र था।
|
दुर्विनीत–किरातार्जुनीयके १५ अध्यायोंका कर्ता।
|
मुष्कर
|
श्रीविक्रम
|
भूविक्रम
|
शिवमार
|
श्री पुरुषकोंगुणी वर्मन्
|
शिवमार सैगोत्तकोंगुणी वर्मन — विनयदित्य

विनयदित्य
|
राजमल्ल सत्यवाक्य कोंगुणी वर्मन्
|
एरगंग नीतिमार्ग कोंगुणी वर्मन्
|
राजमल्ल सत्य वाक्यकों० — गुणदत्तरंग बुटुग (इसने पल्लव राजाको लूटा व अमोघ वर्षकी कन्या अव्वलब्बा व्याही)
|
कुमार वेदेंग-एरगंग नीतिमार्ग कोंगुणी वर्मन् (इसने पल्लवोंको जंतिप्पेरुपेंअेरु पर हराया)
|
वीर वेदेंग नरसिंह सत्यवाक्य कोंगु०
|
कल्लेयगंग राजमल्ल नीतिमार्ग कों० — जयदत्तरंग, गंगगांगेय, गंगनारायण, बुटुग, सत्यनीति वाक्य को०

सन् ९३८में इसकी स्त्री दिवलम्बा थी। इसी बुटुगने तंजापुर घेर लिया था और राजा दित्यको जीता था।

(२४) उत्तर कनड़ा जिला।

उसकी चौहद्दी इस प्रकार है। उत्तरमें बेलगाम, पूर्व धारवाड़, मैसूर, दक्षिणमें मदरास प्रांतीय दक्षिण कनड, पश्चिममें अरब समुद्र ७६ मील रह जाता है। उत्तर-पश्चिम गोआ।

यहां ३९४५ वर्ग मील भूमि है।

शरवती नदी-होनावरसे पूर्व ३५ मीलके करीब ८२५ फुट ऊंची चट्टानके ऊपरसे गिरती है। यही प्रसिद्ध जरसोप्पा फाल Gorsoppa Fall कहलाता है।

इतिहास-यहां सन् ई० के पहले तीसरी शताब्दीमें राजा अशोकने बनवासीको अपना दूत भेजा था। यहां जो बहुतसे शिलालेख मिले हैं उनसे प्रगट है कि यहां बनवास के कादम्बोंने, फिर राष्ट्रोंने, फिर पश्चिमीय चालुक्योंने फिर यादवोंने क्रमसे राज्य किया। यह बहुत काल तक जैन धर्मका दृढ स्थान रह चुका है। It was for long a stronghold of Jain religion सन् १६००में यह विजयनगरके राजाओंके आधीन था।

पुरातत्व-इस जिलेमें विशेष महत्वके स्थान बनवासी जरसप्पा, और भटकलके जैन मंदिर हैं।

बनवासीका मंदिर जिसके लिये यह प्रसिद्ध है कि यह चालुक्या-चार्यका बनाया हुआ है, बहुत बड़ा है। इसमें बहुत सुन्दर मूर्तियां व चित्रादि कोरे हुए हैं। इसके आंगनमें एक खुदा पत्थर पड़ा है जिसमें दूसरी शताब्दीका लेख है।

वर्तमान जरसप्पा नगरके पास नगर बस्तीकेरीमें कई जैन मंदिर हैं जो इस बातको बताते हैं कि यहां एक पुराना नगर था।

यद्यपि समयके फेरसे ये बहुत नष्ट होगए हैं, परन्तु इनमें २३ वें और २४ वें तीर्थंकरोंकी मूर्तियां अभीतक ठीक हैं। बड़े सुन्दर कृष्ण पाषाणकी हैं। भटकलमें अभी तक १४ जैन मंदिर मौजूद हैं जो पंद्रहवीं शताब्दीमें प्रसिद्ध चन्नभैरवदेवीके राज्यके समयसे हैं।

भटकल–जरसप्पा और बनवासीमें बहुत लेख कनड़ी भाषामें पाए गए हैं:—

मुख्यस्थान।

(१) बनवासी (बनवासी) ग्राम तालु० सिरसी, वरदा नदीके तटपर, सिरसीसे १४ मील। यह प्राचीनकालमें बड़े महत्वका स्थान था। यहां कादम्ब राजाओंकी राज्यधानी रह चुकी है। जो जैन मंदिर पश्चिमकी तरफ बड़ा है उसमें १२ शिलालेख दूसरी शताब्दीसे १७वी शताब्दी तकके हैं। Ptolemy टोलमी ने इसका वर्णन किया है। सन् ई० से तीसरी शताब्दी पहले बौद्ध पुस्तकोंमें भी इसका नाम आया है।

बनवासी (१२०००) को तेरहवीं शताब्दीमें देवगिरि यादवोंने ले लिया। इसका प्राचीन नाम जयन्तीपुर था। पांचवीं शताब्दीमें कादम्ब वंशका राजा मयूरवर्मा बहुत प्रसिद्ध हुआ। उसने चालुक्य राजाओंसे मित्रता कर ली थी। सन् १०७५ में यह जिला भुवनेकमल्लके सेनापति उदयदित्यके आधीन था, उस समय विक्रमादित्यने १०७६ में उसपर अधिकार किया। इसने इस जिलेको अपने भाई जयसिंहको दे दिया। उसने झगड़ा किया तब यह जिला बर्मदेवको दिया गया तथा ११५७ में कलचूरी लोगोंने चालुक्योंका विरोध किया तब चालुक्योंने अपना

अधिकार स्थिर रक्खा यहां वहुतसे शिलालेख विभु विक्रम धवल-परमादिदेव तथा कादम्व सर्दार कीर्तिवर्मदेव शाका ९९०के हैं।

(India Antiquary IV Vol 205 6)

भटकल या सुसगडी या मणिपुर-यह एक नगर तालुका होनावरमें हैं जो होनावरसे २४ मील दक्षिण हैं, यह एक नदीके मुख पर बसा है जो अरब समुद्रमें गिरती हैं। कारवारसे दक्षिण पूर्व ६४ मील है। चौदहवीं और सोलहवीं शताब्दिमें यह व्यापारका स्थान था। कप्तान हैमिलटन (१६९०से १७२०)के कहनेके अनुसार यहां एक भारी नगरके अवशेष थे। तथा १८ वीं शताब्दिके प्रारंभमें यहां बहुतसे जैन और ब्राह्मणोंके मंदिर थे।

इन मंदिरोंमेंसे जानने योग्य महत्वके जैन मंदिर नीचे भांति हैं। जैन मंदिरोंकी रचना वहुत प्राचीन कालकी है। उनमें अग्रसाला है, मंदिर है, ध्वजा स्तंभ है।

(१) जत्तपा नायक चंद्रनाथेश्वर वस्ती-यह यहां सबसे बड़ा जैन मंदिर है। एक एक खुले मैदानमें है। चारों तरफ पुराना कोट है। इसमें अग्रसाला, भोगमंडप तथा खास मंदिर है। मंदिरमें दो खन हैं। हरएक खनमें तीन२ कमरे हैं, जिनमें श्री अरह, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि तथा पार्श्वनाथकी मूर्तियां हैं। परन्तु ये सब प्रायः खंडित हैं। इस मंदिरके पश्चिम भोगमण्डपकी दीवालोंमें सुन्दर खिडकियां लगी हैं। अग्रशालाका मंदिर भी दो खनका है हरएकमें दो कमरे हैं जिनमें श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, तथा चंद्रनाथेश्वरकी प्रतिमाएं हैं। द्वारपर द्वारपाल भी हैं। इसकी कुल लंबाई ११२ फुट है, आगे मंदिरकी चौड़ाई

४० फुट है। तथा भीतर मंदिरकी चौडाई ९० फुट है। ध्वजा दंड-एक बहुत सुन्दर स्तंभ है जो १४ वर्ग फुट चबूतरेपर खडा है। इसका स्तंभ एक पाषाणका २१ फुट ऊंचा है ऊपर चौकोर गुंबज है। वस्तीसे पीछे एक छोटा स्तंभ है जिसको यक्ष ब्रह्म खंभा कहते हैं। इसका खंभा १९ फुट लम्बा है। यह एक चबूतरेपर हैं जिसके ऊपर चार कोनेमें चार छोटे खंभे हैं उनपर आले हैं। जत्तपा नायकने इस मंदिरकी रक्षाके लिये बहुतसी जमीनें दी थीं परन्तु उनको टीपू सुलतानने लेलिया। यह मंदिर भटकलमें सबसे सुन्दर पुराना मंदिर है तथा इसकी रक्षा अच्छी तरह करनी चाहिये। ग्रामवाले अपनी मरज़ीसे यहांके सुन्दर पाषाणोंको उठा ले जाते हैं।

(२) श्री पार्श्वनाथ वस्ती-९८ फुट लम्बी व १८ फुट चौडी है। शिलालेखके अनुसार यह शाका १४६९ में बना था। ध्वजा स्तंभ-एक ऊंचे टीले पर सुन्दर स्तंभ है। ऊपर एक छोटा मंडप है जिसमें चौतरफ मूर्तियां हैं।

(३) शांतेश्वर वस्ती-यह करीब२ चंद्रेश्वर वस्तीके समान है।

तथा धेतवाल नारायण देवस्थान जो सुन्दर कारीगरीके साथ काले पाषाणका बना है तथा शांतप्पा नायक तिरुमल देव-स्थान और रघुनाथ देवस्थान भी देखने योग्य है।

यहां बहुतसे शिलालेख हैं जैसे (१) चन्द्रनाम वस्तीमें ७० लाइनका, (२) वहीं ७९ लाइनका, इसके पीछे ६३ लाइनका, ता० १४७९ नल संवत्सर, (३) इसीके आंगनके दक्षिण पूर्वकोनेमें जिसमें जैन चिन्ह हैं, (४) पार्श्वनाथ वस्तीमें शाका १४६८

विश्ववसु संवत्सर, (५) उसीमें, (६) उसीमें शा० १४६९ द्वब सं०, (७–८) उसीके पीछे, (९) शातेश्वर मंदिरके आगनमें इसमें बहुत सुन्दर विराट क्षेत्रपाल अंकित हैं ऊपर लेख शा० १४६९, (१०) एक छोग, (११) वहीं दो पत्थर बडे जो दब गए हैं, (१८) चतुर्मुख वस्तीमें जिसके पत्थरोंको गावबाले उठा ले गए हैं। एक झाडीमें एक सुन्दर बडा आसन है जिनमें जैन चिन्ह हैं, (१९) उसीके पास माट कस्में दक्षिण पश्चिम आध मीलपर एक पाषाणका पुल है जिसको जैन राजकुमारी चन्द्रभैरवदेवीने १४९० में बनवाया था। पहाडीके ऊपर एक रोशनी घर है जो ८ मीलसे दिखता है।

(३) चितकुल–ग्राम ता० कारवार। यहासे उत्तर ४ मील यह समुद्र तटपर है। एक बडा स्थान रह चुका है। इसका नाम सिंधपुर, चिंतपुर, सिंतपुर सितकुल, सितक्वोरस, चित्तीकुल, चिति-कुल भी प्रसिद्ध है। अरब यात्री मसौदी (९००के लगभग)से लेकर इंग्रेज भूगोल वेत्ता ओगिलवी (१६६० के लगभग) तक इसका वर्णन करते हैं। (यहा जैन चिन्होंको तलाश करना चाहिये)।

(४) जरसप्पा ग्राम–तालु० होनावर। यहासे पूर्व १८ मील शरावती नदीपर। जरसप्पा झरनेसे भी इतनी दूर है। इस ग्रामसे १॥ मील नगरबस्तीकेरीके बहुत बडे जीर्ण मकान हैं। यह जर-सप्पाके जैन राजाओं (१४०९–१६१०) का राज्य स्थान था। स्थानीय लोग ऐसा विश्वास करते हैं कि अपने महत्वके दिनोंमें यहा १ एक लाख घर तथा ८४ चौरासी मंदिर थे। सबसे बड़े महत्वका मंदिर एक चौमुखा जैन मंदिर है जिसके चार द्वार हैं

व उनमे चार प्रतिमाए हैं। पाच और जीर्ण जैन मदिर हैं जिनमें मूर्तियें व शिलालेख हे। श्री वर्द्धमान या महावीरस्वामीके मदिरमे एक सुन्दर कृष्ण पाषाणकी मूर्ति श्री महावीरस्वामी चौवीसवें तीर्थंकरकी है। इसमे ४ शिलालेख हैं। यह निम्वदन्ती है कि विजयनगरके राजाओ (१३३६–१५६५) ने जरसप्पाके जैन वंशको कनडामे उन्नत किया। बुचानन साहब कहते हैं कि हरिहरके वशके राजा प्रतापदेवराय त्रिलोकचियारी आज्ञासे जर-सप्पाके सरदार इचप्पा वोदियारु प्रतिनीने सन् १४०९मे मनकीके पास गुणवतीके जैन मंदिरको दान किया था। इचप्पा सरदारकी पोती विजयनगर राजाओसे करीब २ स्वतत्र हो गई। तबसे यहांका राजत्व प्रायः स्त्रियोंके हाथमें रहा है, क्योकि करीब२ सर्व ही १६ वी व १७ वी शताब्दीके प्रथम भागके लेखक जर-सप्पा या भटकलकी महारानीका नाम लेते हैं। १७ वी शताब्दीके शुरूमे जरसप्पाकी अतिम महारानी भैरवदेवी पर वेदनूरके राजा वेंकटप्पा नायकने हमला किया और हरा दिया। स्थानीय समाचारके अनुसार वह सन् १६०८में मरी। सन् १६२३ में इटलीका यात्री डेलावेले Dell.valle इस स्थानको प्रसिद्ध नगर लिखता है। तथा उस समय नगर व राजमहल ध्वंश हो गया था, उनपर वृक्ष उग आए थे। यह नगर काली मिर्च pepper के लिये इतना प्रसिद्ध था कि पुर्तगालोने जरसप्पाकी रानीको 'Rainbad. Pimanta' अर्थात् pepper queen लिखा है।

उपर लिखित चतुर्मुख मदिरका विशेष वर्णन यह है कि यह बाहरके द्वारसे भीतरके द्वारतक ६३ फुट लम्बा है। मदिर २२ फुट

चर्ग है। बाहर २४ फुट है। चार बडे मोटे गोल खंभे हैं, उनपर टांडें लटक रही हैं। मंड़प व मंदिरके द्वारोंपर हरतरफ द्वारपाल मुकुट सहित हैं। भूरे पाषाणका मंदिर है। इसके शिखरके पाषाणोंको होनावरके मामलतदारने दूसरे मंदिरमें ले लिया है। यहां नेमिनाथका मंदिर भी अच्छा है। मूर्ति बडी सुंदर व बडी अवगाहना की है। आसन गोल है। उसके पीछे शिल्पकारी अच्छी है आसनके किनारे कनड़ी अक्षरोंमें दो श्लोक हैं। श्री पार्श्वनाथके मंदिरमें बहुतसी मूर्तियां दूसरे मंदिरसे लाई गई हैं। उनमें एक पांच धातुकी वड़ी ही सुन्दर है। इसके पश्चिम एक बड़ा पाषाणका मकान है उसमें १२ दि० जैन मूर्तियें खड़गासन विराजमान हैं। कांदेवस्तीके मंदिरमें छत नहीं रही परंतु कृष्णवर्ण १ पार्श्वनाथकी मूर्ति ४। फुट ऊंची है उस पर शेषफण बहुत ही सुन्दर कारीगरीके हैं।

शिलालेखोंका वर्णन—श्री वर्द्धमान स्वामीके मंदिरमें (१) पाषाण ६ फुट ऊपर जिनमूर्ति है, दो पूजक हैं। नीचे गाय व बछडा है व लम्बा लेख है, (२) १ पाषाण ४ फुट लंबा ऊपर श्री जिनेन्द्र चमरेन्द्र सहित, बीचमें दो समुदाय पूजकोंके हैं। हर तरफ १ ऊंची चौकी है। नीचे हर तरफ स्त्रियां पूजक हैं। वैसी ही चौकी है। (३) १ पाषाण ५ फुट लंबा दूसरेके समान करीब २ (४) मंदिरके पीछे भूमिमें दबी श्री पार्श्वनाथ मंदिरके पूर्वकोनेमें तीन पाषाण खुदे हुए ऊपरके समान हैं। कांदेवस्तीकी भीतके बाहर एक लेख ४ फुटका है।

जरसप्पासे घाटकी तरफ जाते हुए ५ या ६ मीलपर एक

पुराना कनडी शिलालेख है जो सडकके किनारे खड़ा है।

(५) मनकी–ग्राम, ता० होनावर, यहां बहुतसे जैन मंदिरों-के अवशेप हैं जो इस बातको बताते है कि किसी समय यहां जैनियोंका बडा जोर था! बहुतसे शिलालेखोंसे यहांका महत्व झलक रहा है।

(६) सोनडा–ग्राम, ता० सिरसी, यहासे उत्तर १० मील यहांका पुराना किला बडे महत्वका है। यहां स्मार्त, वैष्णव और जैनके मठ हैं। सोंडाके राजा विजय नगरके राजाओंकी शाखा थी जो सोंडामे (१६७०–८०)में बसे। सोंडा ष्टेशनसे ३ मील पश्चिम त्रिविक्रमका मंदिर है। सामने लम्बा ध्वजास्तम है। यह बात प्रसिद्ध है कि दक्षिण कनडाके उडपी मठके आठ साधुओंमेंसे एक श्री वादिराज स्वामी बडे प्रसिद्ध थे–उन्होने अपने तपके बलसे नारायण भूतकी सहायतासे इस मंदिरको बद्रिकाश्रमसे सोंडामें उठा मंगाया और आप स्वयं उसमें स्थापित होगए। उनका नाम त्रिविक्रम देव हुआ।

(नोट–यह वादिराजस्वामी अवश्य जैनाचार्य विदित होते हैं। इस मंदिरको देखकर इस कथाका भाव समझना चाहिये। स०)

यहा जैनियोका मठ आठवी शताब्दीका है। एक पुराने आदीश्वर भगवानके जैन मंदिरमें बहुत ही पुराना शिलालेख है। इसमे यह लेख है कि राजा इमोढी सदाशिवरायने शाका ७२२ व सन् ७९९ में दान दिया। दूसरा लेख सन् ८०४का जैन मठमें था। जो चामुंडराय राजाके राज्यका था, जो चामुंडराय दक्षिणके सब राजाओंका मुख्य था। यह एक जैन राजा था। दानपत्रमें

लेख है कि इस राजाके पुरुषाओंने अर्थात् सदाशिव और वल्लालने चौद्धोंको परास्त किया। तीसरा लेख सन् ११९८ का जैन मठमें सुद्धिपुरके सदाशिव राजाका है।

(७) उलगी–ग्राम ता० हलियल। यहां बहुत प्राचीनकालके कुछ मंदिर हैं।

(८) चिदरकन्नी-या वेदक्रनी–विलगीसे सिद्धापुरको जाते हुए सडकपर एक छोटा जैन मंदिर है जिसमें बहुतसे पाषाण नकाशीके हैं।

(९) विलगी-सिद्धपुरसे पश्चिम पांच मील। यहां महत्वकी वस्तु श्री पार्श्वनाथजीका जैन मंदिर है। इसका जीर्णोद्धार सन् १६९० में राङ्गप्पराजाके पुत्र जैनकुमार घंटेयादियाने कराया था। इसमें श्री नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और श्री महावीरजीकी मूर्तियें स्थापित कीं। यह मंदिर बहुत बढ़िया नकाशीका है। तथा द्राविडी ढंगका है। जैसा पश्चिम मैसूरके हलेविड या द्वार समुद्रमें होयसाल वल्लाल मंदिर विष्णुका है। दो शिलालेखोंमें वर्णन है कि नौ ग्राम तथा चावल दान किये गए।

विलगीका प्राचीन नाम श्वेतपुर था। ऐसा कहा जाता है कि इसको जैन राजा नरसिंहके पुत्रने स्थापित किया था जो विलगीसे पूर्व ४ मील होसूरमें १५९३ के अनुमान राज्य करता था। कहते हैं श्री पार्श्वनाथके मंदिरको नगर बनानेवाले जैन राजाने बनाया था। श्री पार्श्वनाथ मंदिरके द्वारके भीतर दो बड़े शिला-लेख ६ फुट शाका १६१० व ६॥ फुट शाका १६६० के हैं।

(१०) हादुवल्ली–भटकलसे उत्तर पूर्व ११ मील। यहां

पुराने मकानोंके ध्वंश हैं। पहले यह बड़ा समृद्धिशाली जैन नगर था। यहां तीन जैन मंदिर भटकलके समान हैं उनमेंसे दोलो ग्राममें हैं व एक चन्द्रगिरि पर्वतपर जीर्ण है।

(११) होनावर-एक व्यापारका प्राचीन स्थान। यह शिरावती या जरसप्पा नदीके तटसे दो मील है। यही हनुरुहद्वीप है। जिसका वर्णन पग्न (९०२-४३) ने जैन रामायणमें किया है। यूनान लोगोंने इसको नवुरके नामसे कहा है।

(१२) कलटीगुडड-एक पर्वत २९०० फुट ऊंचा होनावरसे उत्तर पूर्व १० मील यह स्थान जरसप्पाके जैन राजाओं (१४०९-१६१०) के आधिपत्यमें एक महत्व पूर्ण द्राविग संस्थान था।

(१३) कुम्ता-रूईको जहाजपर लादनेका खास बंदर। यह याद्री नदीसे ३ मील है। यह जैनवंशका मुख्य स्थान था जिनके हाथमें दक्षिण होनावर तक स्थान था।

(Buchanan Mysore and Canara III 53)

(१४) मुर्देश्वर-होनावरसे दक्षिण १३ मील। व वैल्लरसे दक्षिण ३ मील। एक कंदुगिरि नामकी छोटी पहाड़ीपर एक जैन मंदिर है जिसको कहा जाता है कि कैकुरीके जैन राजाओंने बनवाया था। यहां बहुतसे पाषाणोंपर अच्छी नक्कासी बनी हैं। फसली १२२१ में सर्कार इस मंदिरको १४४०) वार्षिक देती थी। यहां ३१ शिलालेख शाका १३३६ और १३८१ के हैं। स्कूलके पश्चिम ९० गजपर १ जैन लेख ५४ लाइनका है हरएकमें ५० अक्षर हैं।बंगलेसे उत्तर पश्चिम दो मील एक जीर्ण जैन मंदिर वस्ती मकीके नामसे हैं। यहां बहुत सुन्दर लेख युक्त पाषाण हैं।

(१९) कुलेटार–ता० सिरसी ग्राम, बनवासीसे ९ मील। यहां पुराना जैन मंदिर है। इसमें ४ पाषाण हैं हरएकमें जिनेन्द्रकी मूर्ति चमरेन्द्र सहित है ऊपर सूर्य और चंद्र है। दो बड़े पाषाणोंमें बहुत लेख हैं। तथा कृष्ण पाषाणकी ४ जैन मूर्तियां हैं नीचे आसनपर लेख हैं।

(२५) कोलाबा जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें बम्बई बन्दर, कल्याण। पूर्वमें पश्चिमी घाट, भोर राज्य व पूना, सतारा। दक्षिण पश्चिम रत्नागिरी। पश्चिममें जजीरा राज्य व अरब समुद्र।

यहा २१३१ वर्गमील स्थान है—

इतिहास—कोलाबामें बडे महत्वकी बात यह है कि इसका व्यापारी संबध विदेशी जातियोंसे रहा है। भारतीय समुद्र होकर मार्ग था। इतिहासके पहलेसे अरव और आफ्रिकासे व्यापार था। मिश्र और फैनीशिया (२९००से ९०० वर्ष सन् ई० से पहले)से मुख्य सबन्ध था। ग्रीक और पैथियन लोगोंके साथ (२०० सन् ई० से पहलेसे २०० सन् तक) मुसल्मान अरबोंके साथ मित्रके समान व्यवहार था जो यहा (सन् ७००–१२००) में आते रहे थे। कोलाबामें सबसे पुराने इतिहासके स्थान चिउल, पाल, कोल महाड़के पास, कुडा राजपुरीके पास जिनमें पहली शताब्दीकी बुद्ध गुफाएं हैं।

कोलाबामें बौद्धोका बहुत निवास रहा है, उनका महत्व था। चीन यात्री हुइनसाग (६४०) ने यहा चिमोलोके पूर्व कुछ मीलपर राजा अशोकका स्तभ देखा था (सन् ई० से २२९ वर्ष पहले)। यहा अन्ध्र भृत्योने भी राज्य किया है। सन् १६० मे जब वहां यज्ञश्री या गौतमी पुत्र द्वि० राज्य करते थे तब इनका बहुत मानल्य था। शतकर्णी राज्यके नीचे कोन्कनका व्यापार पश्चिमसे बहुत उन्नत पर था जब रोम लोगोंने मिश्रको ले लिया था (सन् ई० से ३० वर्ष पहले)। टोलिमी, यूनानी भूगोल वेत्ताको (सन् १३९–१९०) कोंकनका ज्ञान था। कन्हेरी, नासिक, करली

और जुन्नर गुफाओंमें जो यादवोंने दान किये हैं उनसे पता चलता है कि कुछ यूनानी लोग यहां बस गए थे और उन्होंने बौद्धधर्म स्वीकार किया था।

(See Hough s clues to antiy in India P 51)

पहली शताब्दीमें यूनानी बुद्धिमान डिसमाइस मिश्रसे भारतको व्यापार केन्द्रोंको देखने आया था–अलेक्जेंड्रियासे पन्टेनस ईसाई पादरी होकर सन् १२८ में आया था, वह कहता है कि यहां उसने श्रमण (जैन साधु), ब्राह्मण व बौद्ध गुरुओंको देखा जिनको भारतवासी बहुत पूजते थे क्योंकि उनका जीवन पवित्र था। ऐसा भी मालूम होता है कि उस समय भारतवासी अलेक्जेंड्रियामें गए भी थे। सन् ई० से २०० वर्ष पूर्वसे २०० ई० तक मिश्र निवासी लाल जातिसे तथा भीतर पैथान और टागोरसे बंगालकी खाडी व और पूर्वी किनारोंतक खास व्यापार चलता था। जो वस्तु भारतसे भेजी जाती थी वे ये थी। भोजन, शक्कर, चावल, कपड़े रुईके, रेशमका सूत, हीरे, पन्ने, मोती, लोहा, सुवर्ण। भारतीय फौलाद (Steel) बहुत प्रसिद्ध था। फारसकी खाडीसे पैल्मैरातक बहुत व्यापार था। कोंकनके व्यापारियोंने सन् १८७८म बहुतसे सुन्दर मठ बनवाए थे। ये उनकी उदारताके नमूने हैं, गुजरातके क्षत्रप राजाओंमें सबसे बडे राजा रुद्रदमनने शतकर्णी लोगोंको दो दफे हराया और उत्तरकोंकण ले लिया—

(Indian Ant VII 262)

मसलीपटनके महीन कपड़े बहुत प्रसिद्ध थे। यह बडा भारी बाजार था अबीसीनियाकी राज्यधानी अदुलीसे भी व्यापार

था। भारतीय जहाज कपडा, लोहा, रुई ले जाते थे व वहासे हाथीदात व सींग लाते थे।

छठी शताब्दीमें मौर्य्य लोग या नल सर्दार राज्य करते थे। चालुक्योंका प्रथम राजा कीर्तिवर्मा (सन् ५५०से ५६७)—जिसने कोंकणमे चढाई की थी—नल और मौर्योंके लिये यमके समान वर्णन किया गया है। कीर्तिवर्माका पोता पुलकेशी द्वि० (६१०--६४०) था। जिसने कोनुकनको विजय किया। इसने लिखा है कि उसका सर्दार चंड—डंड मौर्योंको भगानेके लिये समुद्रकी तरग था (Arch S. R III 26) थाना जिलेके वाडसे लाए हुए एक लेखयुक्त पाषाण (पाचवी या छट्ठी शताब्दी)से मालूम होता था कि उस समय कोकणमें सुकेतुवर्मा राज्य कर रहा था। इस चालुक्य सर्दार चंड—दंडने मौर्योंकी राज्यधानी पुरी (अज्ञात) पर हमला किया था। यह नगर पश्चिमीय भारतकी लक्ष्मीदेवीका स्थान था।

वीस शिलाहारोने थाना और कोलावामें सन् ई० ८१० से १२६० तक राज्य किया था। पाचवा राजा झंझा था जिसका वर्णन अरब इतिहासज्ञ मसूदीने लिखा है कि वह सन् ९१६ मे चिवलमे राज्य करता था। तथा चौदहवा राजा अनन्तपाल या अनन्तदेव था (सन् १०९६) जिसने दो मंत्रियोंकी गाडियोपर कर माफ कर दिया था जो चिवलवदरपर आती थीं। तेरहवी शताब्दीमे देवगिरिके यादवोंने राज्य किया। सन् १३७७मे विजयनगरके या आनेगुडीके राजाओंने कोकणके कुछ वदर लेलिये। मुसल्मानोके पहले दक्षिण कोकण जिसमें वर्तमान कोलाबा है लिंगायतवंशी राजाओंके हाथमें था जिनको कनडा राजा कहते थे जिनका मुख्यस्थान आनेगुंडी था।

मुख्य स्थान।

(१) चिवल या रेवडंड–वम्बईसे दक्षिण ३० मील, कुंडलिका नदीके उत्तर तटपर। यह वहुत ही प्राचीन स्थान है। कन्हेरी गुफाओंमें (सन् १३०–९००) में इसका नाम चेमुला लिखा है। हुइनसांगने चिमोलो लिखा है। पौराणिक समयमें–इसको चंपावती या रेवतीक्षेत्र कहते थे। ९१९ में अरब यात्री मसूदीने इसका नाम सैमूर दिया है–उस समय यहां राजा झंझा था। सन् ९४२ में यहांका वर्णन यह प्रसिद्ध है कि यहांके लोग मांस, मत्स्य व अंडे नहीं खाते थे। सन् १३९८ में वहमनी वादशाह फीरोजने यहांसे जहाज दुनियांकी सुन्दर वस्तुओंको लानेके लिये भेजे थे। सन १९८६ में यहां भारतीय तटसे नारियल, मसाले, औषधि, चीन व पुर्तगालसे चन्दन, रेशम आदि तथा यहांसे मलका, चीन, उर्मज, पूर्व अफ्रिका, पुर्तगालको लोहा, अन्न, नील, अफीम, रेशम, अनेक प्रकारके रुईके कपड़े, सफेद, रंगीन, छपे हुए भेजे जाते थे।

There would seem to have been (about 1584 A. D.) a strong Jain and Gujrati Wani element among the merchants of Cheul as Fitch English man describes, the gentiles as having a very strange order among them. *They killed nothing, they* ate no flesh, but lived on roots, rice and milk In Cambay they had hospitals to keep lame dogs and cats and for the birds. *They* would give food to ants (*Fitch in Hakluyt's* Voyage 384)

भावार्थ–सन् १९८४ के अनुमान यहां वहुतसे जैन और गुजराती वनिये व्यापारी थे। जैसे फिच इंग्रेज लिखता है कि जो किसीकी हिंसा नहीं करते थे, वनस्पति, चावल व दूध खाते थे।

मांस नहीं लेते थे, तथा इन लोगोमे बहुत आश्चर्यकारक नियम हैं। कंबे (खंभात) में इन्होने लंगडे कुत्ते व बिल्लियोंके लिये व चिड़ियोंके लिये अस्पताल बनादिये थे ये लोग चीटियो तकको भोजन देते थे।

फ्रेंच यात्री फ्रैन्कन पैरर्ड (१६०१–१६०८) ने यहांका हाल देखकर लिखा है (Bruce's Anual I 125) कि यहां बुननेका बहुत बड़ा शिल्प हैं, बहुत सुन्दर रुईके सूत मिलते हैं। चीनके रेशमसे भी बढ़िया रेशमका सामान बनता है। गोवामे यहांका माल बहुत खपता है। उत्तर पूर्वको बौद्ध गुफाएं है।

(२) गोरेगांव—मनगांव तटमें बन्दर—दासगावके उत्तर पश्चिम ६ मील बौद्ध गुफाएं हैं।

(३) कुड़ा गुफाएं—मानगावके उत्तर–पश्चिम १२ मील कुड़ा ग्राम है। राजपुरी तटसे उत्तरपूर्व २ मील। यहां बौद्धोकी २६ गुफाएं है। छठी गुफामे ५ लेख ५वी या ६ठी शताब्दीके हैं शेष गुफाए पहली शताब्दी की हैं। सबसे पुरानी गुफामे लेख यह है।

"एक गुफा बनानेका दान किया सिवमाने जो लेखक शिवभूतका छोटाभाई था जो सुलाशदत्तके पुत्रोमे थे उसकी स्त्री उत्तरदत्ता थी। ये महाभोज मान्दव खडपलीताके सेवक है जो महा भोज सदागिरि विजयका पुत्र है। चट्टानपर खुदाई कराई शिवमाकी स्त्री विनयाने और उसके पुत्र सुलासदत, शिवपाल्तिा, शिवदत्त, सपिलने, खभे बनवाए उसकी कन्याओने सपा, शिवपलिता, शिवदत्ता और सुलासदत्ताने।"

(४) महाड—सावित्री नदीके दाहने तटपर, बांकटसे पूर्व ३४ मील। यह दासगांवमे ८ मील एक बंदर है। प्राचीन नाम

मंदिकावती है-यहां पाले पहाड़ीपर बौद्ध गुफा है।

(५) पाले-महाड़से २ मील ग्राम। होलिंगी (१२ वें) ने इसे बाल पाटना लिखा है तथा शिलाहर वंशके १४वें राजा अनन्तदेव (सन् १०९४) के ताम्रपत्रमें इसका नाम वलिपट्टन है, बौद्ध-गुफाएं हैं।

(६) कोल्ल गुफाएं-महाड़से दक्षिणपूर्व १ मील। यहां भी समूह बौद्धोंकी गुफाओंका है।

(७) रायगढ़-राज्यकिला-प्राचीन नाम रायरी महाड़से उत्तर १६ मील। यह १ पहाड़ी २२९० फुट ऊंची है। शिवाजीकी राज्यधानी थी। बांटीसे चढ़नेमें तीन घंटे लगते हैं।

(८) रामधरण पर्वत-अलीबागमें-अलीबागसे उत्तरपूर्व ९ मील। कालें ग्रामसे उत्तर। यह पुरानी चट्टान है। गुफाएं १२ खुदी हैं, पता नहीं चलता है, किस धर्मकी हैं। (नोट-यहां जैनियोंको खोजना चाहिये) कालें ग्रामसे पश्चिम मुखसे पश्चिमकी तरफसे जानेका मार्ग है।
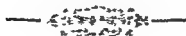
(२६) रत्नागिरी जिला।

इसकी चौहद्दी इसप्रकार है–उत्तरमें जंजीरा कोलावा, पूर्व–सतारा, कोल्हापुर, दक्षिण–सावतवाड़ी, गोआ। पश्चिम–अरब समुद्र।

इतिहास–यहां चिपलून और कोल गुफाएं यह प्रगट करती हैं कि सन् ई० से २०० वर्ष पूर्वसे ५० सन् ई० तक यहां बौद्धोंका जोर था। पीछे यहां चालुक्य राजाओंका बहुत बल रहा। सन् १३१२में मुस०ने कब्ज़ा किया।

मुख्यस्थान।

(१) दामल–समुद्रसे ६ मील, बम्बईसे दक्षिण पूर्व ८९ मील। अंजनवेल या विशिष्ट नदीके उत्तर तटपर यह बड़ा प्राचीन स्थान है। बहुतसे ध्वंश स्थान हैं। यहां एक चंडिकाबाईका मंदिर नीचे भौरेमें हैं, यह उसी समयका है जिस समय बादामी (बीजापुर जिला)की गुफाओंके मंदिर बनाए गए थे।

परवार नामका स्थानीय इतिहास है। उसमें कहा है कि ग्यारहवीं शताब्दीमें दामल बलवान जैन राजाका स्थान था और एक पाषाणका लेख शालिवाहन १०७८का पाया गया है। यहांके लोगोंका कहना है कि इसका प्राचीन नाम अमरावती था।

(२) खारेपाटन–ता० देवगढ़–इस नगरके मध्यमें करनाटक जैनी रहते हैं। एक जैन मंदिर हैं, मंदिरमें एक छोटी पाषाणकी कृष्णमूर्ति है जो एक नदीकी खाड़ीमें पाई गई थी। राष्ट्रकूट वंशके ताम्रपत्र भी यहां मिले हैं।

(Indian Ant.Val II 321 and IX 33).

(२७) सिंध प्रांत।

उत्तर–बलूचिस्तान, बहावलपुर। पूर्व–राजपूताना राज्य जैसलमेर और जोधपुर। दक्षिण–कच्छखाडी अरब समुद्र। पश्चिम–नामकोलात, बलूचिस्तान। यहां ५३११६ वर्गमील स्थान है।

इतिहास–मौर्य्य राज्यके पीछे यूनानियोंने पञ्जाबपर सन् ई० से २०० पूर्व हमला किया। अपोलोदातस व मेनन्दर यूनानियोंने सन् ई० के १०० वर्ष पूर्व तक सिंधुमें राज्य किया। फिर मध्यएसियासे बहुतसे हमले हुए। सफेद हून लोग यहां बस गए और रायवंशको स्थापित किया। अलोर और ब्राह्मणाबादमें दक्षिणमें बौद्धोंका जोर रहा।

पुरातत्व–इन्दस नदीकी खाडीमें बहुतसे ध्वंश नगरोंके स्थान हैं जैसे लाहोरी, काकरबुकेरा, समुई, फतहबाग, कोटबांभन, जुन, थरी, वदिनतूर, थर और पारकर जिलेमें विरावह ग्रामके पास पारीनगर नामके एक बड़े महत्वशाली नगरके ध्वंश स्थान हैं। इस नगरको कहा जाता है कि सन् ४५६में याल्मीरके जसोपरमारने स्थापित किया था। जिसको मुसल्मानोंने ध्वंश किया ऐसा माना जाता है। इन्हीं ध्वंश स्थानोंमें बहुतसे जैन मंदिरोंके खंड हैं।

मुख्यस्थान।

(१) भाम्बोर–(करांची जिला) यह प्राचीन नगर है। प्राचीन नाम देवल है व मंसावर है। यहां जो सिक्के व ध्वंश मिले हैं उनसे प्रगट है कि यह पहले बहुत महत्वका स्थान था।

धार और पार्कर जिला-उत्तरमें खैरपुर, पूर्वमें-जैसलमेर राज्य, मतानी, जोधपुर, कच्छवाडी, दक्षिण रन्छवाडी, पश्चिम हैदराबाद।

(२) गोरी-इस जिलेके पार्कर भागमें कई प्राचीन मंदिर दिखलाई पड़ते हैं उनमें एक जैन मंदिर विरावहसे १४ मील उत्तर है। इस जैन मंदिरमें एक बड़ी पवित्र और प्रसिद्ध मूर्ति है जिसका नाम गोरी प्रसिद्ध है।

यह जैन मंदिर १२९ फुटमें ५० फुट है। संगमर्मरका बना है। यह कहा जाता है कि ५०० वर्ष हुए एक मगा ओसवाल पारीनगरका पाटन माल खरीदने गया था। उसको स्वप्न हुआ कि एक मुसल्मानके घरमें १ मूर्ति है। वह उसे पारीनगर ले आया। गाडीपर रख ली थी। जहा गाडी ठहर गई आगे न चली, वहीं उसको स्वप्न हुआ कि बहुत धन व संगमर्मर जडा है। उसने निकालकर संवत् १४३२में गौरीके नामसे इस मंदिरको बनवाया। इसमें बडी बढिया खुदाई है। सन् १८३९मे मूर्ति गायब होगई। मंदिरमें शिला लेख सन् १७१९का है, जब जीर्णोद्धार हुआ था।

इसी जैन मंदिरके पास पारीनगर नामके पुराने नगरके ध्वंशस्थान है जो ६ वर्गमील तक स्थानमें है। जिसमे बहुत संगमर्मरके स्तम्भ फैले पडे हैं।

यह नगर किसी समय बहुत धनशाली और जनसंख्यासे पूर्ण था। इसका ध्वंश १६ वी शताब्दीमे हुआ था। अभी भी यहा पाच या ▩ पुराने मंदिरोंके ध्वंश मोजूद हे जिनमे बहुत ही बढिया शिल्प व खुदाई है। (नोट-किसी जैनीको यहा जाकर देखना चाहिये)-दूसरा ध्वंश नगर यहा रत्नकोट है। जो रानाहू

ग्रामसे २० मील दूर खिप्र नगरसे दक्षिण नार नदीपर है। मीरपुर खासके पास कहसी नगरके ध्वंश हैं जो पहले ब्राह्मणाबाद कहलाता था इसका नाश ८ वी शताब्दीमें हुआ। यहा बहुत प्राचीन ध्वंश हैं।

(R J A S of Indit 1903-4)

(३) नगरपार्कर—ता० नगर। अमरकोटसे दक्षिण १२० मील। प्राचीन नगर। नगरपार्करसे उत्तर पश्चिम भोदेश्वर हैं वहा तीन प्राचीन जैन मकानोंके ध्वंश हैं जो कहा जाता है कि सन् १३७५ और १४४९ में बनाए गए थे।

(४) गिरानह—के ध्वंशोंमें जो जैन मंदिरोंके शेषांश हैं उनमेंसे मि० गिल बहुतसे खुदे हुए पाषाण कराची अजायबघरमें ले गए हैं। यहा बहुत प्राचीन व महत्वकी रचनाएं हैं। ग्राममें दूसरा जैन मंदिर है जो हालका बना है।

(२८) कोल्हापुर राज्य ।

इसके मुख्यस्थान नीचे प्रकार हैं—

(१) अत्ला–ग्राम, कोल्हापुर शहरसे उत्तरपूर्व १२ मील, वरण नदीसे दक्षिण छ मील। यहा रामलिंगका जो गुफा मंदिर है वह वास्तवमें बौद्ध या जैनका होगा। अब वहा ब्राह्मण पूजा होती है।

(२) कोल्हापुर शहर–यह बहुत प्राचीन स्थान है। यहां पासमें सन् १८८० के लगभग एक बडे स्तूपके भीतर एक प्राचीन पिटारा मिला था जिसमे सन् ई० की तीसरी शताब्दीके राजा अशोकके समयके अक्षर है। यहा अम्बाबाई मंदिर, नवग्रह मंदिर, सेशासायी मंदिर जो आजकल हैं वे जैन मंदिरोंके भाग हैं। इनके पाषाण नगरके दूसरे स्थानोसे लाए गए है उनमे खुदाई बहुत अच्छी है।

नगारखाना–इसमे जैन मंदिरोसे लाए हुए खुदाईके पाषाण हैं।

जैन वस्ती–हेमदपती ढगका एक प्राचीन जैन मदिर यह यह ७३ फुटसे ९३ फुट है। मदिरजीके पास दो शिलाहार लेखके पाषाण शाका १०५८ और १०६९ के हैं।

(३) पावल गुफाएं–जोतिबाकी पहाडीके पास कोल्हापुरसे ९ मील। यहा एक बडी गुफा ३४ फुट चौकोर है जिसमे १४ खम्भे है। अलटाके पास पूर्वकी तरफ एक प्राचीन जैन कालिज (old jain college) है जिसपर ब्राह्मणोने अधिकार कर लिया है।

(४) रायबाग–कोल्हापुरसे दक्षिण पूर्व ५० मील, चिकोडीसे उत्तर पूर्व १४ मील। कहा जाता है कि यह जैन राजाओकी राज्यधानी ग्यारहवीं शदीमें थी। वैसे ही येरूद खेलना, शंखे-

श्वरमें भी थी । यहां जैनमन्दिर सबसे पुराना मकान है । यह काले पाषाणका है, ७६ फुट लम्बा ३० फुट चौड़ा, इसमें बहुत बडे खम्भे हैं । दो पाषाणोंपर लेख शाका ११२४ के हैं ।

(५) खेद्रापुर—या कृष्ण । कोल्हापुरसे पूर्व ३० मील और कुरुन्दवाडसे पूर्व ७ मील । ग्राममें एक छोटासा जैन मंदिर है ।

(६) भिड या बैरद—पच गगा नदीपर । कोल्हापुरसे दक्षिण पश्चिम ९ मील । यह एक राजाकी राज्यधानी थी जो कोल्हापुर और पनालाका स्वामी था । प्राचीन ध्वंश बहुत हैं । सुवर्णकी पुरानी मोहरें मिलती हैं । एक प्राचीन पाषाणका मंदिर सन् १२००के करीबका है ।

(नोट—यहा जैन चिन्होंको ढूंढना चाहिये) ।

(७) हेरले—कोल्हापुरसे उत्तरपूर्व ७ मील । मीरजकी सडक पर यहा एक शिलाहार राजाका शिलालेख पुरानी कनडीमें शाका १०४०का है जिसमें एक जैन मंदिरको दान देनेकी बात है ।

(८) सावगांव—कागलसे पूर्व २ मील । यहा एक जैन मंदिरमें श्री पार्श्वनाथजीकी मूर्तिका आसन है ।

(९) नमनी—सिदमोर्लीके पास, कागलसे दक्षिण पश्चिम ४ मील । यहा एक जैन मंदिरमें शाका १०७३ का शिलालेख है ।

(१०) करवीर—कोल्हापुरके राज्यकी प्राचीन राज्यधानी ।

(११) वडगांव—कोल्हापुरसे उत्तर १० मील एक नगर । यहा एक जैन मंदिर है जिसको आदप्पा भगसेटीने १६९६ में ४००००) खर्चकर बनवाया था ।

(१२) कुंदल—सदर्न मरहठा रेलवेके कुदल स्टेशनसे २

मील। ग्राम निकट पहाड़ीपर दो प्राचीन जैन मंदिर, इनमें श्री पार्श्वनाथकी मूर्तियें हैं जो श्री गिरीपार्श्वनाथ और झरी पार्श्वनाथके नामसे प्रसिद्ध हैं।

(१३) कुंभोज—बाहुबली पहाड—हाथकलंगड़ा स्टे०से ९ मील। पहाड़ी ॥ मील ऊंची है, यहां बाहुबलि नामके दि० जैन मुनि होगए हैं, व बाहुबलि मुनिकी चरणपादुका हैं। इमसे पर्वत प्रसिद्ध है। यहां १६ खंभोका जैन मंदिर है।

(१४) स्तवनिधि—कोल्हापुरसे व चिकोड़ी स्टेशनसे करीब ३० मील। यहांपर प्राचीन जैन मंदिर हैं। पहाड़ी मुनियोंके ध्यानके योग्य है।

कोल्हापुर शहरके जैन मंदिरमें जो शिलहारी शिलालेख शाका १०६९ का है उसका भाव यह है।

शुक्रवारपेठमें यह जैन मंदिर है। शिलालेख संस्कृत भाषा पुरानी कनड़ी लिपिमें है। शिलाहार वंशके महामंडलेश्वर विजयदित्यदेवने माघ सुदी १९ शाका १०६९को एक खेत और १ मकान १२ हस्त आजिर गेरवोल्ला जिलेके हाविन हीरिलगे ग्राममेंसे वहीं स्थापित श्री पार्श्वनाथजीके जैन मंदिरमें अष्टद्रव्य पूजाके लिये दिया। इस मंदिरको मूलसंघ देशीयगण पुस्तक गच्छके अधिपति माघनंदि सिद्धांतदेवके शिष्य सामंत कामदेवके आधीनस्थ वासुदेवने बनवाया था। तथा उस दानसे क्षुल्लकपुरमें पवित्र रूपनारायणके जैन मंदिरकी मरम्मत भी वहांके पुजारीके द्वारा हो यह भी लेख है, यह दातार विजयादित्यदेव तगार नगरके राजा जातिगके पुत्र गोकुल उसके पुत्र मारसिंह उसके पुत्र गंधारादित्यदेवका पुत्र था।

दानके समय राजाने श्री माघनंदि सिद्धांतदेवके शिष्य माणकनंदि पंडितके चरण धोए थे। इस दानको सर्व करसे मुक्त कर दिया गया। नोट–यहांके दोनो लेखोंकी नकल दि० जैन डाइरेक्टरीमें दी हुई है। नोट–क्षुल्लकपुर–कोल्हापुरका दूसरा नाम है।

चमनी ग्राममें जो शाका १०७३का लेख शिलाहार राजा विजयादित्यका है उसका भाव यह है–

जैन मंदिरके द्वारपर लेख है। संस्कृत भाषा पुरानी कनड़ी है। ४४ लाइन हैं। इसमें लिखा है कि राजाने चोडहोर–कानगाबुन्ड के पास ग्रामके श्री पार्श्वनाथ भगवानके जैन मंदिरकी अष्टद्रव्य पूजा व मरम्मतके लिये नावुक गेगोल्ला जिलेके भुवलुर ग्राममें एक खेत और घर दान किया। श्री कुंदकुंदान्वयी श्री कुलचंद्र मुनिके शिष्य श्री माघनंदि सिद्धांतदेवके शिष्य श्री अर्हनंदि सिद्धांतदेवके चरण धोकर

(Epigraphica Indica III)

कोल्हापुर राज्यमें यह बडे महत्त्वकी बात है कि वहां जैन किसान ३६००० हैं। ये बहुत प्राचीन कालके बसे हुए हैं। पहले यहां जैनोंका बहुत प्रभाव था इसके ये चिन्ह हैं। ये बड़े शांतप्रिय व परिश्रमी है।

Kolhapur is remarkable in large number of Jain Cultivators (36000) who are evisidence of former predominance of Jain relic in south Marhatta country They are peaceful and Industrious peasentry (P. 51) Infi. Gaz 1908 Vol 11 Bombay.

कोल्हापुर–गजेटियरमें लिखा है कि यहांके जैन बडे निय-

मोंके पावन्द व आज्ञानुवर्ती हैं वे वहुत कम अदालतोंमें आते हैं। यहांके जैन जमीदार अपनी स्त्रियोंके साथ खेतका काम करते हैं।

जैन मूर्तियें–कोल्हापुर शहर और आसपास बहुतसी खंडित जैन मूर्तियां मिलती हैं। मुसलमानोंने १३वीं व १४वीं शताब्दीमें जैन मंदिर तोड़ डाले थे। जब जैनलोग ब्रह्मपुरी पर्वतपर अंबाबाईका मंदिर बनवा रहे थे तब राजा जयसिंहने किला बनवाया था। यह राजा अपनी सभा कोल्हापुरसे पश्चिम ९ मील बीडपर किया करता था।

१२वीं शताब्दीमें कोल्हापुरमें कलचूरियोंके साथ–जिन्होंने कल्याणके चालुक्योंको जीत लिया था और दक्षिणके स्वामी हो गए थे–चालुक्योंके आधीनस्थ कोल्हापुरके शिलाहारोंका युद्ध हुआ था। तब भोज राजा द्वि० (११७८–१२०९) शिलाहार राजाने कोल्हापुरको राज्यधानी बनाई और बहमनी राजाओंके आनेतक राज्य किया। यहां कुल २५० मंदिर हैं उनमें अंबाबाईका मंदिर सबसे बड़ा और सबसे महत्वका और सबसे पुराना शहरके मध्यमें है। यह काले पाषाणका दो खना है। जैनलोग कहते हैं कि यह मंदिर पद्मावती देवीके लिये बनवाया गया था। इस इमारतकी कारीगरी प्रमाणित करती है कि जैनलोग इसके मूल अधिकारी हैं (Jains to be orijinal possessors) जैसे हरएक ब्राह्मण मंदिरमें गणपतिकी मूर्ति होती है सो यहां नहीं है। भीत और गुंबजों पर बहुतसी पद्मासन जैन मूर्तियां हैं जो बहुतसी नग्न हैं। इससे यह जैन मंदिर था ऐसा प्रमाणित होता है। इसमें ४ शिलालेख शाका ११४० और ११९८ के हैं।

खिद्रापुर—कृष्ण नदी तट सेढ़वाल स्टेशनसे ४ मील। प्राचीन मंदिर श्रीऋषभदेव बड़ी मूर्ति है। यहां कोपेश्वरमहादेवका मंदिर है यह जैनियोंका विदित होता है। (दि० जैन डा०)

कोल्हापुरके आजरिका स्थानमें त्रिभुवनतिलक चैत्यालयमें श्री विशालकीर्ति पंडितदेव शिष्य शिलाहारकुलतिलक वीर भोज-देव राज्ये शाका ११२७में श्री सोमदेव आचार्यने शब्दार्णव चंद्रिका व्याकरण लिखी (देखो सं० प्रति इटावा दि० जैन मंदिर पंसारीटोला)

(२९) मीरज राज्य।

यहां मुख्य स्थान हैं।

(१) मुदौल-कलादगीसे पूर्व उत्तर १६ मील। दो प्राचीन मंदिर जैनियोंके टगके हैं। अब शिव स्थापित हैं।

(२) पंदगांव-बेलगावसे कलादगीकी सड़कपर ग्रामके पश्चिम ४-५ मील। सड़कके किनारे एक छोटा जैन मंदिर है।

(३०) सांगली स्टेट।

यहां मुख्य स्थान हैं।

(१) तेरदाल-यहा बडे महत्वका एक जैन मंदिर श्री नेमिनाथ भगवानका है जो ११८७में बना था।

(३१) गोआ (पुर्तगाल)

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें सावतवाडी स्टेट, पूर्वमे पश्चिमीय घाट, बेलगाम, उत्तर कनडा, दक्षिण उत्तर कनडा, पूर्वमें अरब समुद्र यहा १४७० वर्ग मील स्थान है।

इसका प्राचीन नाम गोमनचल है।

यहांके कुछ शिलालेख यह बताते हैं कि गोआमें बनवासीके कादम्बोंका राज्य था जिनका प्रथम राजा श्री त्रिलोचन कादम्ब सन् ई० ११९ व १२० के करीब हुआ है। इस वंशने (सं० नोट-यह जैन वंश था) यहा मुस० के आने तक सन १३१२ तक राज्य किया।

(३२) हैदराबाद राज्य।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है:—

उत्तर--वरार। उत्तर पूर्व—खानदेश। दक्षिण कृष्णा नदी और तुङ्गभद्रा नदी। पश्चिम—अहमदनगर, शोलापुर, बीजापुर, धारवाड़। पूर्वमें वर्धा और गोदावरी नदी। यहां स्थान ८२६९८ वर्गमील है।

यहां अन्ध्रोने सन ई० से २२० पूर्वसे राज्य किया। फिर चालुक्योने, ९९० ई० के करीब तक उनकी राज्यधानी कल्याणी रही। पुलकेशी द्वि० (६०८—६४२) ने प्रायः सर्व भारतमें नर्मदाके दक्षिण तक राज्य किया तथा यह कन्नौजके हर्षवर्द्धनसे भी मिला था।

मलखेड़—के राष्ट्रकूटोंने आठवीं सदीमें फिर करीब ९७३ के चालुक्य वंशने पीछे ११८९ के अनुमान यादवोंने राज्य किया। राज्यधानी देवगिरि या दौलताबाद। सन् १३१८ में देवगिरि का राजा हरपाल मारा गया। मुहम्मद तुघलक दिल्ली ने राज्य किया। यहां जैनियोंकी वस्ती २०३४९ है। (हंटर गजटियर १९०८)

मुख्यस्थान।

(१) आतनूर—(चंद्रनाथ) दुधनीसे ९ मील। ग्राम बाहर जैन मंदिर प्राचीन है। प्रतिमा श्री चन्द्रप्रभु २ हाथ पद्मासन है १ पाषाण २४ प्रतिमाका है। तीन प्रतिमा कायोत्सर्ग १॥ फुट ऊंची हैं।

(२) आष्ट—आलंदसे १६ मील। मार्गमें अचलेर ग्राममें प्राचीन जैन मंदिर है। वर्तमानमें महादेव पधरा दिये गए हैं।

आष्टामें श्री पार्श्वनाथजीका जैन मंदिर शाका ९२८ का बना है। कृष्ण वर्णा २ फुट पद्मा० मूर्ति चौथे कालकी है। इनको विघ्नहर पार्श्वनाथ कहते हैं।

(३) उखलद्–जि० परभणी किंगोली स्टेशनसे ४ मील। पूर्णा नदीपर प्राचीन पाषाणका जैन मंदिर प्रतिमा श्री नेमिनाथ बडे आकार।

(४) कचनेर–औरङ्गाबादसे २० मील। विशाल जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथजीका है।

(५) कुन्थलगिरी–बारसी टाउनसे १६–१७ मील। यह जैन सिद्धक्षेत्र है। पर्वतपर बहुतसे जैन मंदिर हैं, सब दि० जैन हैं। श्री देशभूषण कुलभूषण मुनि यहांसे मोक्ष पधारे हैं उनके चरण चिन्ह हैं। दिगम्बर जैनोमे प्रसिद्ध निर्वाणकांडमें इस क्षेत्रका इस तरह वर्णन है—

गाथा–वंसत्थलवरणियरे पच्छिमभायम्मि कुन्थुगिरिसिहरे।
कुल देसभूषणमुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १७॥
(प्राकृत निर्वाण कांड)

भाषा वंशस्थल वनके ढिग होय, पश्चिम दिशा कुंथगिरि सोय। कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणों करौं प्रणाम ॥ १८ ॥ (निर्वाणकांड भगवतीदास)

(६) कुलपाक–(वज़वादा लाइन) अलेर स्टेशनसे ४ मील। प्राचीन जैन मंदिर, प्रतिमा श्री आदिनाथजीकी जिनको माणक स्वामी कहते हैं:—

(७) तडकल–(G. I. P. Ry.) गाणगापुरसे १२ मील।

जैन मंदिर प्रतिमा श्री शांतिनाथजीकी कृष्ण वर्ण ६ फुट ऊंची कोरी हुई है ।

(८) तेर-धाराशिवसे ८ मील । यहां प्राचीन जैन मंदिर है जिसमें एक पद्मासन मूर्ति श्री महावीरस्वामीकी उन्हींके मूल आकारमें विराजित है अन्य मूर्तियां हैं व लेख हैं जो पढ़ा नहीं जाता है । यह ग्राम प्राचीन कालमें तगर नामका नगर था और दक्षिणमें व्यापारका मुख्य स्थान था ऐसा यूनानी लेखकोंने लिखा है पहली शताब्दी तक इस मुख्य नगरका पता है । तथा १० वीं या ११वीं शताब्दीमें भी यह एक बडा महत्त्वका स्थान था ऐसा देशी राज्योंके लेखोंसे पता चलता है । यह बारसीसे पूर्व ३० मील है । तर्णा नदीके पश्चिम तटपर है । यहां जो उत्तरेश्वरका मंदिर है वह मूलमें जैन मंदिर था । उसकी कारनिशके नीचे जैन मूर्ति है । यहां बहुत प्राचीन और भी जैन मूर्तियां मिलती हैं । एक पुजारी रहता है । प्रबन्ध धाराशिवके दि० जैन पंचोंके आधीन है । मुख्य भाई सेठ नानचन्द नेमचन्द बालचन्दजी हैं ।

(९) धाराशिव-इसको अब उस्मानाबाद कहते हैं । बारसी लाइनके एडसी स्टेशनसे १४ मीलके करीब । यहां नगरसे २-३ मीलपर बहुत पुरानी ७ गुफाएं हैं । एक गुफा बहुत बड़ी है जिसमें श्री पार्श्वनाथजीकी मूल अवगाहनाकी मूर्ति बैठे आसन बहुत सुन्दर सात फणके छत्र सहित विराजमान है । दूसरी गुफामें भी ऐसी ही मूर्ति है । एक गुफामें मूर्ति खंडित होगई है । ये गुफाएं दर्शनीय हैं । इनको राना करकंडुने बनवाया था । आराधनाकथाकोषमें ११३ वीं कथा राना करकंडुकी है । उसमें तेर

नगर व धाराशिवका वर्णन है व गुफाओंमें श्री पार्श्वनाथ स्थापनका कथन है– प्रमाण–

अत्रैव भरते क्षेत्रे देशे कुन्तलसंज्ञके।
पुरे तेरपुरे नीलमहानीलौ नरेश्वरौ ॥ ४ ॥
अस्मात्तेरपुरादस्ति दक्षिणस्यां दिशि प्रभो।
गव्यूति कान्तरेचारुपर्वतोस्योपरि स्थितम् ॥ १४४ ॥
धाराशिवपुरं चास्ति सहस्रस्तंभसंभवम्।
श्री मज्जिनेन्द्रदेवस्य भवनं सुमनोहरम् ॥ १४५ ॥
करकंडश्च भूपालो जैनधर्मधुरंधुरः।
स्वस्य मातुस्तथा बालदेवस्योच्चैः सुनामतः ॥ १९६ ॥
कारयित्वा सुधीस्तत्र लयणत्रयमुत्तमम्।
तत्प्रतिष्ठां महाभूत्या शीघ्रं निर्माप्य सादरात् ॥ १९७ ॥

अर्थात् करकुंड राजाने धाराशिवमें अपने, अपनी मां व बलदेवके नामसे तीन गुफाओंके मंदिर बनवाकर बड़ी विभूतिसे प्रतिष्ठा कराई।

(१०) बंकुर–जि० गुलबर्गा–शाहाबाद (G. I. P.) से २ मील। जैन मंदिर पाषाणका है–चार गर्भालय हैं। अंतर्गर्भमें प्रतिमा ६ फुट कायोत्सर्ग। बाहर–पार्श्वनाथ, आदिनाथ आदि।

(११) मलखेड़–वाड़ीके पास चितापुरसे ४ मील–मलखेड़ रोड टेशन। प्राचीन नाम मलियाद्री यहां पहले १४ दि० जैन मंदिर थे। अब एक मंदिर स्थिर है कई मंदिर किलेमें दबे हैं। यही वह मान्यखेड है जो राजा अमोघ वर्ष जैन सम्राट्की–राज्यधानी थी। यही श्री जिनसेनाचार्यने पार्श्वाभुदयकाव्य पूर्ण

किया था। जो मंदिर अब चालू है इसमें बहुत प्राचीन तथा मनोज्ञ दि० जैन मूर्तियें हैं।

यही वह मान्यखेड है जहां जैनियोंके प्रसिद्ध आचार्य श्री राजवार्तिकके कर्त्ता श्री अकलंकदेव हुए हैं। राजा शुभतुंगके मंत्री पुरुषोत्तम भार्या पद्मावतीके यह पुत्र थे।

प्रमाण—

अत्रैव भारते मान्यखेटाख्यनगरे वरे।
राजाऽभूच्छुभतुंगाख्यस्तन्मंत्री पुरुषोत्तमः॥
भार्या पद्मावती तस्य तयोः पुत्रौ मनः प्रियौ।
संजातावकलंकाख्य निष्कलंकौ गुणोज्वलौ॥ ३॥

इन्होंने ही कलिंग देशके रत्नसंचयपुरके राजा हिमशीतलकी सभामें बौद्धोंके गुरु संघश्रीसे वाद करके उनको परास्त किया था। यह राजा शुभतुंग अकालवर्ष सन् ८६७ में यहां राज्य करते थे। जैसा राष्ट्रकूट वंशकी पट्टावलीसे प्रगट है।

(१२) सांवरगांव–(नि० उसमानाबाद) बारसीसे २४ मील। शोलापुरसे १४ मील। हेमाडपंथी दि० जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथ ३॥ हाथ कृष्णवर्ण है।

(१३) होनसलगी–जि० गुलबर्गा। होनसलगी स्टेशन है। सावलगी (G. I. P.)से २ मील-प्राचीन जैन मंदिरमें श्रीपार्श्वनाथ ४ फुट कायोत्सर्ग व शांतिनाथ ४ फुट। शिलालेख कनड़ीमें हैं।

(१४) एलुराकी जैन गुफाएं–दौलताबाद स्टेशनसे १२ मीलके करीब दर्शनीय। यहां ३२–३३ गुफाएं हैं जिनमें ९ जैन गुफाएं बहुत बड़ी हैं। जिनमें बड़ी मनोज्ञ दि० जैन प्रतिमाएं हैं

व बड़ी सुन्दर कारीगरी है तथा हजारो आदमियोंके बैठनेका स्थान है। हम देखनेको गए थे अपूर्व काम किया हुआ है।

Arch S of W. India Vol V Report of Elura by Burgess 1880)

नाम पुस्तकमें जो वर्णन दिया हुआ है वह नीचे लिखे भांति है।

इन्द्रसभा।

यहां दो बहुत बडी जैन गुफाएँ हैं। दो खनकी हैं। एकका नाम इन्द्र गुफा दूसरीका नाम जगन्नाथ गुफा। इन गुफाओका समय बौद्ध और ब्राह्मण गुफाओंके पीछे मालूम पडता है। क्योंकि राठोड़ वंशके नष्ट होनेके पीछे राष्ट्रकूटोंका राज्य गोविंद तृतीयके समयमें बट गया था जब उसके छोटे भाई इन्द्रने आठवीं शताब्दीके अन्तमे गुजरातमें भिन्न राज्य स्थापित किया था। जैनियोंने इस स्थानपर अधिकार कर लिया था और तब उन्होने अपने धर्मका महत्व यहापर स्थापित किया। जिसकी उन्होंने अन्य दो धर्मोंके मुकाबलेमें आवश्यक्ता समझी थी।

इन्द्रसभा—कैलाश गुफाके समान गुफाओका समूह है। बीचमें दो खनकी गुफा है। सामने सभा है। हरएक तरफ छोटी २ गुफाएं हैं। गुफाका मुंह दक्षिण ओर है। सभाके बाहर हरतरफ एक छोटा कमरा १९ फुटसे १३ फुट है, जिसमे एक छोटी भीत परदेके तौरपर है। सामने दो खंभे है, जो नीचे चौकोर है ऊपर गुम्बज हैं। इस कमरेके अन्तमे श्री पार्श्वनाथ भगवानकी और तपस्या करते हुए गोमटस्वामी या बाहुबलिकी मूर्तियें है। सभाके दक्षिण तरफ एक भीत है और एक द्वार है। यह सभाका कमरा

९६ फुट लम्बा दक्षिणसे उत्तर है व ४८ फुट पूर्व पश्चिम है। इसमें दाहनी तरफ एक हाथी आसनको छोड़कर ११ फुट ऊं है। जो गिर गया है। एक सुन्दर स्तम्भ २७ फुट ४ इंच ऊं है इसके ऊपर चतुरमुख प्रतिमा है और एक छोटा मंडप शियमंडपके समान है। यह आठ फुट ४ इंच चौकोर है। ... ८ सीढ़ियां हैं, हर तरफ द्वार है। चढ़ाई उत्तर व दक्षिण तरफसे है हरएक द्वारमें दो स्तम्भ हैं।

इस कमरेके भीतर एक चौकोर पाषाणकी वेदी है जिसके हर तरफ सिंहासनपर श्री महावीरस्वामीकी मूर्ति कोरी हुई है। बरामदेको छोडकर नीचेका कमरा ७२ फुटसे ४८ फुट है। जिसके आगे दो स्तंभ हैं और दो स्तंभ उस मंदिरके कमरेके सामने हैं जो ४० फुटसे १९फुट है।

यह मंदिरका कमरा १७॥ फुटसे १३ फुट है। इसमें श्री महावीरस्वामी सिंहासनपर विराजमान हैं। सामने धर्मचक्र है। इन चिन्होंसे यह प्रगट होता है कि ये गुफाओंके मंदिर दिगम्बर जैनोंके हैं। बरामदेको सीढ़ी गई है जो ऊपर बडे कमरेकी पूर्व तरफ है। यह ऊपरका कमरा बरामदेको छोटकर जिसके मध्यमें एक नीचीसी भीत है ९९ फुटसे ७८ फुट है। बरमदा ९॥ फुटसे १० फुट है। इसके हर तरह इन्द्र और इन्द्राणी विराजमान हैं—पूर्व ओर इन्द्र हाथीपर और पश्चिम ओर इन्द्राणी सिंहासनपर हैं (नोट—ये बड़े ही सुन्दर सुसज्जित हैं)। कमरेकी बगलसे जाकर इन मूर्तियोंके पीछे एक छोटा कमरा ९ से ११ फुट है। इसमें होकर उन मंदिरोंमें जाना होता है जो सामनेके मंदिरके हरतरफ बगलमें हैं।

कुछ दूर जाकर हरएक बगलके कमरेसे एक छोटे कमरेमें पहुंचना होता है जहां सब तरफ जैन तीर्थंकरोंकी मूर्तियां कोरी हुई हैं। ये कमरे बगलके कमरेंकि बरामदेके अन्तमें हैं। पूर्व ओर बरामदेमें दो खंभे सामने व दो पीछे हैं। द्वारके सामने दक्षिण तरफ अंबिका देवी है। दाहनी तरफ इंद्र हैं। बाएं हाथमें एक थैली व दाहनेमें नारियल है। ये मुख्य जैन मूर्तियोंके सामने हैं। कमरा २९ फुटसे २३॥ फुट है। छतका आधार ४ चौकोर खंभोंसे है। जिसमें गोल गुम्मज हैं। इसमें दाहनी तरफ श्री गोम्मटस्वामीकी मूर्ति है जो दिगम्बर जैनोंको बहुत प्यारी है, कनड़ा देशमें ऐसी कई बड़े२ आकारकी मूर्तियां स्थापित हैं। बाईं तरफ भी श्री पार्श्वनाथ भगवानकी नग्न मूर्ति चमरेन्द्र सहित है। छोटी वेदियोंमें पद्मासन श्री महावीरस्वामीकी मूर्तियें हैं। कमरेकी हर तरफकी भीतोंके सहारे बहुतसी नग्न जैन मूर्तियां हैं व बीचमें इधरउधर बहुतसी छोटी२ मूर्तियां हैं। भीतर सिंहासनपर पद्मासन श्री महावीर स्वामी विराजमान हैं।

• इस बड़े कमरेके दक्षिण पश्चिम कोनेमें दूसरा द्वार है जिस पर चार हाथकी देवी दाहनी तरफ है व नीचे बाईं तरफ एक मोड़पर आठ हाथवाली देवी सरस्वती है। एक छोटे कमरेसे होकर कुछ क़दम चलकर हम एक बरामदेमें आते हैं फिर एक छोटे कमरेमें जैसा पहले कह चुके हैं—यहां भी अंबिका दाहनी ओर है और उसके सामने चार हाथकी देवी है, जिसके उठे हुए हाथोंमें दो गोल फूल हैं और जो हाथ घुटनेपर है उसमें वज्र है। बरामदेके पश्चिम ओर द्वारके सामने इन्द्रकी मूर्ति है। भीतर वेदीके

कमरेमें श्री महावीरस्वामी हैं, भीतोंमें कई कमरे हैं। इस कमरे
बाईं तरफ श्री पार्श्वनाथ भगवान और दाहनी तरफ श्री गोम
ट्टस्वामी पूर्व ओरके समान विराजित हैं।

यहां जो चार मध्यके खंभे हैं उनमें खुदाई बहुत महीन है
इस पहाडी चट्टानके दाहने भागमें दो खन हैं जब कि बा
तरफ एक भवन है। दाहने दो खनोंमेंसे ऊपरके खन और बाईं तर
फके खनके मध्यमें बढ़िया खुदाई है। नीचली तरफ ए
युद्धका चित्र है जिसमें तीन लेटे हुए शरीरोंके ऊपर चार शरी
पडे लड रहे हैं। इसके ऊपर एक आला है जिसमें एक चबूतरेके
बाईं तरफ दो स्त्रियां और दाहनी तरफ दो पुरुष घुटनोंके बल
झुके हुए हैं तथा इसके ऊपर श्री पार्श्वनाथकी मूर्ति पद्मासन
सिंहासनपर है। सामने चक्र है। दाहनी तरफ एक पूजक है। हर
तरफ मुकुट सहित चमरेन्द्र हैं। पीछे सात फणका सर्प छत्र किये
हुए है। ऊपर बाईं तरफ एक चित्र मंदिरका है। दाहनी तरफ
जो सबसे नीचेका खन है वह हालमें ही मट्टीसे साफ किया गया
है जिसमें सामने दो स्वच्छ खंभे हैं। दीवालके पीछें इन्द्र और
अम्बिकाकी मूर्तियें हैं जो बहुत सुन्दर व सुरक्षित हैं। इसमें बाईं
तरफ श्री पार्श्वनाथ और दाहनी तरफ श्री गोमट्टस्वामी हैं
जिनके चरणोंपर हिरण और कुत्ते बैठे हुए हैं और पीछे जाकर
पद्मासन तीर्थंकर विराजमान हैं। भीतर वेदीमें श्री महावीरस्वामी
चमरेन्द्र छत्र तीन, और अशोक वृक्ष सहित हैं। इसके आगे एक दूसरा
कमरा है जिसमें श्री पार्श्वनाथ बाईं तरफ व दाहनी तरफके आधे
ऊपरके भागमें दो छोटी पद्मासन मूर्तियां हैं। मंदिर द्वारके हरतरफ

इन्द्र और अम्बिका (इन्द्राणी) हैं और सामने सिंहासनपर पद्मासन चमरेन्द्र सहित तीर्थंकर विराजमान हैं। इस मंदिरमें श्री गोमटस्वामीकी मूर्ति खास गुफा और इस मंदिरके मध्य सामने कोरी हुई है।

इन दोनोंकी बाईं तरफ और करीब २ इतना ऊँचा-जितने ये दोनों हैं एक कमरा करीब ३० फुट चौडा व २९ फुट गहरा है। सामने एक भीत है जिसके ऊपर द्वारके हरतरफ एक खंभा है। भीतके ऊपरी भागपर बहुतसे कमलादि कोरे हुए हैं तथा हाथी बने हुए हैं जिनका मुख पुष्पोंपर है। भीतर चार खंभे हैं जिनकी जड चौकोर है, ऊपर गुम्बज है। सामनेके खंभोंपर बहुत चित्रकारी है। पश्चिमकी तरफ बीचके कमरेमें श्री पार्श्वनाथ विराजमान हैं। फणके छत्र सहित व चमरेन्द्र सहित हैं। पगमें दो नागनियां हैं और दो सुन्दर वस्त्र सहित पुजारी हैं। जबकि उनके चारों ओर देवतागण ध्यानमें उपसर्ग कर रहे हैं। (नोट—यह कमठके जीव द्वारा उपसर्गका चित्र है)।

पासवाले दूसरे कमरेमें पहलेकी भांति रचना छोटे मापमें है तथा एक पद्मासन तीर्थंकर विराजमान हैं। पूर्वकी भीतकी तरफ मध्य कमरेमें श्री गोमटस्वामी हैं जिनके चरणोंपर हिरण और कुत्ते और कुछ स्त्रियां बैठी हुई हैं। इनके ऊपर गंधर्व आदि देव हैं जो बाजा, फूलादि लिये हुए हैं। इसके दाहनी तरफ कमरेमें एक छोटी मूर्ति श्री पार्श्वनाथजीकी है। बाईं तरफ एक खड़ी मूर्ति है, जो आधी तडक गई है, जिनके पास मृग, मकर, हस्ती, शूकर आदिके चिन्ह हैं।

इसके ऊपर एक पद्मासन जिनकी मूर्ति है और भीतके पीछे इन्द्र और इन्द्राणी थे जो अब मिट गए हैं। मंदिर द्वारपर दो जैन द्वारपाल हैं। भीतर सिंहासनपर जिनेन्द्र हैं तीन छत्र व देवोंद्वारा दुदुंभि आदि सहित हैं। तीन कमरोंके ऊपर दीवालके सामने एक कमरा बीचमें है जिसमें एक स्त्री पुरुष कोरे हुए हैं। जिनकी सेवामें पुष्प लिये दो छोटी स्त्रियां हैं। बगलमें मकर तोरण लिये हुए हैं। भीतोंकी तरफ हाथी पुष्पोंपर रमते व शार्दूल एक छोटे हाथीपर चढ़ा हुआ है–इसके ऊपर पानीके घड़े हैं। कमरेके ऊपर मालाएं लटक रही हैं। पासमें जो रचना है उसमें कई पशु बने हैं। इसके ऊपर छोटे२ मंदिर हैं हरएकमें मूर्ति है। बीचमें बाई तरफ इन्द्र है, दाहनी तरफ इन्द्राणी है। शेष आलोंमें श्री गोमटस्वामी, श्री पार्श्वनाथ तथा दूसरे तीर्थंकर हैं। मध्यभागमें एक मकान छत सहित है जिसको चार झुकती हुई मूर्तियां थांभे हैं। एक तरफ श्री जिनेन्द्रदेव पद्मासन विराजित हैं उसीके ऊपर एक चैत्यकी खिड़कीमें दूसरे जिनेन्द्र हैं। इसके ऊपर कुछ आगे आकर इसकी रक्षाका उपाय है।

बड़े कमरेमें लौटकर छतको थांभनेवाले खंभोंमें भिन्न २ प्रकारके नमूने हैं तथा भीतोंपर चित्रकारी है। मध्य कमरेमें पांच भिन्न २ नमूनोंके स्तंभ हैं। हरएक बगलकी भीतके मध्यमें जो बड़े कमरेमें हैं उनमें सिंहासनपर एक पद्मासन जिन है, सामने चक्र, हाथी व सिंह खुदे हैं, नीचे दो हाथी हैं, भामंडल, छत्र व अशोक वृक्ष व चमरेन्द्र हैं। दूसरे दो स्थानोंपर सिंहासनपर दो छोटी जैन मूर्तियां हैं। मंदिरके सामने हरएक खंभेके सामने तथा

हरएक तरफ भीतपर भी लम्बी नग्न मूर्तियां हैं जिनमें कुछ हानि आगई है। छतमें बड़ा कमल मध्यमें है तथा बहुत कुछ रंगावेजी है यद्यपि धूआं छा गया है।

जगन्नाथ सभा ।

दूसरी बड़ी गुफा इस जैन समुदायमें जगन्नाथ गुफा है जो इन्द्र सभाके पास है। इस गुफाका सभास्थान ३८ फुट चौकोर है। इसमें जो रचना है वह बिलकुल नष्ट होगई है। सभास्थानसे एक जीना बड़े कमरेके दाहने कोनेकी तरफ गया है। यह कमरा ५७ फुट चौड़ा व ४४ फुट गहरा है। करीब १४ फुट ऊंचा है। १२ पड़े २ खंभे छतको संभालते हैं तथा दो खंभे सामने हैं। बाहर हरएक कोनेपर एक बड़े हाथीका मस्तक है। हरएक खंभेके सामने बीचमें मनुष्योंके व इधर उधर पशुओंके चित्र हैं, उपर छोटे २ वृक्षोंकी नांदे हैं उनपर मनुष्योंके व दूसरे चित्र हैं। इसके उपर और भी चित्रकारी हैं। इसकी नीचेकी चट्टान इन्द्रसभाके नमूनेकी है, परंतु छोटी है। कमरा नीचेका २४ फुट चौकोर व ६२॥। फुट ऊंचा है। चार खंभे छतको थांभे हैं। सामने एक छोटा बरामदा है। भीतपर दो चौकोर खंभे हैं। दो खंभे बरामदेसे कमरेको जुदा करते हैं। जिसमें दो वेदियां हैं बाईं ओर श्री पार्श्वनाथ भगवान हैं ऊपर सर्पफण हैं व चमरेंद्र आदि हैं तथा दाहनी तरफ श्री गोम्मटस्वामी हैं। भीतके छः स्थानोंपर दूसरी पद्मासन तीर्थंकरकी मूर्तियां हैं। बरामदेमें बाईं तरफ इंद्र है व दाहनी तरफ इन्द्राणी हैं। भीतरके मंदिरमें एक छोटे कमरेके द्वारा जाना होता है। द्वारपर सुन्दर तोरण है। यह कमरा ९ फुटसे ७ फुट व १०

फुट ८ इंच ऊंचा है। इसमें पद्मासन श्री महावीरस्वामी सिंहासनपर विराजमान हैं।

इस जगन्नाथ सभाके बाईं तरफका हॉल २७ फुट चौकोर व १२ फुट ऊँचाई जिसमें मंदिर ९॥ फुटसे ८॥ फुट व ९ फुट १॥ इंच ऊँचा है हर तरफ इसके कोठरी है। जिसके बाईं तरफ पासकी गुफामें जानेका मार्ग है। इस सभाकी दूसरी तरफ दो छोटे मंदिर हैं जिनमें जैन चित्रकारी है।

गुफा नं० ३४ वीं

आखरी गुफा जगन्नाथ सभाके पास है। बरामदा नष्ट हो गया है। इसमें हॉल २०० फुट चौडा, २२ फुट गहरा व ९ फुट ८ इंच ऊँचा है, ४ खंमे हैं। भीतोंपर सुन्दर चित्रकारी है। छोटा कैलास-गुफा यह जैनियोंकी पहली गुफा है। हाल ३६ फुट चौकोर है। १६ खंमे हैं। कुल गुफा ८० फुट चौडी व १०१ फुट लम्बी है। यहां खुदाई करनेपर कुछ मूर्तियां शाका ११६९ की मिली थीं।

एल्लरा पर्वतको चरणाद्रि भी कहते हैं।

एल्लरा पहाडकी गुफाओंका वर्णन भिन्न २ रचनाके चित्रों सहित जिनमें जैन मूर्तियोंके भी व खंभोंके भी चित्र हैं (Cave temple of India by Fergusson and Burges 1880) में दिया है। उससे जो विशेष हाल मालूम हुआ वह यह है। कि इन्द्रसभाके पश्चिम बीचके कमरेमें दक्षिण भीतपर श्री पार्श्वनाथ हैं व सामने श्री गोमटस्वामी हैं। पीछे भीतके इंद्र, इन्द्राणी, भीतर मंदिरमें सिंहासनपर श्री महावीरस्वामी हैं नीचेके

हॉलमें घुसते ही सामने बरामदेकी बाईं तरफ दो बडी नग्न मूर्तिया श्री शांतिनाथ सोलहवें तीर्थंकरकी हैं। नीचे एक शिलालेख ८वी व ९मी शताब्दीके अक्षरोंमें है, लेख है "श्री सोहिल ब्रह्मचारिणा शांति भट्टारक प्रतिमेयम्" अर्थात् सोहिल ब्रह्मचारी द्वारा यह शांतिनाथ भगवानकी प्रतिमा।

इसके आगे एक मंदिर है, इसके हालमें एक खंभा है, जिस पर एक नग्न मूर्ति विराजित है। उसके नीचे एक लेख है "श्री नागवर्म्मा कृत प्रतिमा" अर्थात् नागवर्मा द्वारा निर्मित प्रतिमा।

जगन्नाथ गुफा—में विशेष कथन यह है कि इस गुफाके कुछ खंभोंपर पुरानी कनड़ीमें कुछ लेख हैं—जो सन ई० ८००से ८५० तकके होंगे।

इन गुफाओंकी पहाडीकी दूसरी तरफ कुछ ऊपर जाकर एक मंदिरमें बहुत बडी मूर्ति श्री पार्श्वनाथ भगवानकी है जो १६ फुट ऊंची है, इसके आसनपर लेख है—मिती फाल्गुण सुदी तीज संवत ११५६ है जो ता० २१ फर्वरी बुधवार सन १२३३ के बराबर है। लेखमें है कि श्री वर्द्धमानपुर निवासी रेणुगी थे, उनके पुत्र गेलुगी थे, उनकी स्त्री स्वर्णा थी। जिसके चार पुत्र थे। चक्रेश्वर आदि। उसने चारणोंसे निवासित इस पहाडीपर श्री पार्श्वनाथकी मूर्ति प्रतिष्ठा कराई।

इसके नीचे बहुतसी छोटी २ जैन गुफाएं हैं जो बहुत नष्ट होगई हैं। तथा चोटीके पास एक खाली गुफा है जिसमें सामने दो चौकोर खंभे हैं।

एक शिलालेख—एलूरामें एक दशावतार लेख है इसमें

महान राष्ट्रकूट वंशके दो प्राचीन राजाओंका वर्णन है अर्थात् दंतिवर्मा और इन्द्रराजका जो सातवीं शताब्दिके प्रारम्भमें जरूर राज्य करते होंगे इसमें वंशावली दी है जिसमें नाम हैं, गोविंद प्रथम, कर्क, इन्द्र, दंतिदुर्गा। दंतिदुर्गाने पश्चिमीय चालुक्य राजा कीर्तिवर्मा द्वि० को अपने अधिकारमें किया था तथा और भी राजाओंको विजय किया था इससे इसका नाम वल्लभ प्रसिद्ध था। इस राजाके प्रथम मंत्री मोरारजी सार्वकी भी प्रशंसा लिखी है। यह भी प्रगट होता है कि यह सेना लेकर यहां आया था और ठहरा था। दंतिदुर्गा सन ७२९से ७९९ तक राज्य करता होगा और इसने यहां यात्रा की। इससे प्रगट है कि शायद इसने दशावतार मंदिर बनवाया हो। इसका चाचा व उत्तराधिकारी कृष्ण प्रथम था। इसके सम्बंधमें प्रसिद्ध है कि इसने एलापुरा पहाडी पर अपनेको बसाया था। इस स्थानकी जांच नहीं हुई है शायद यह एल्लरा गुफाओंके ऊपरकी पहाडी है। जहां वर्तमान रोजा नगरके बाहर प्राचीन हिन्दू नगरके ध्वंश है।

बोधान—ता० निजामाबाद। यहां एक देवल मसजिद है जो मूलमें जैन मंदिर था क्योंकि तीर्थंकरकी बैठी मूर्तियें कई पाषाणोंपर अंकित है। (निजामपुरा रिपोर्ट १९१४–१९)

पाटनचेरू—हैदराबादसे उत्तर पश्चिम १८ मील। यह स्थान जैन धर्मकी पूजाका बहुत प्रसिद्ध स्थान था। यहां नगरके कई स्थानोंपर श्री महावीरस्वामी और दूसरे तीर्थंकरोंकी बड़ी२ मूर्तियें १० फुटसे १२ फुटतककी विराजमान है—तथा हालमें भूमि खोदनेसे और भी मूर्तियें निकली है। दक्षिणके उत्तर भाग, एलोरा,

बोधान, वारंगल आदि स्थानोंके स्मारकोंसे प्रगट है कि इन भागोंके शासक रामागण सातवींसे दशवीं शताव्दी तकके जैनधर्मसे प्रेम करते थे और यह धर्म बहुत उन्नतिपर था। पीछे शिव तथा विष्णु भक्तोंने जैन मंदिरोंको नष्ट किया। वही दशा पाटनचेरूके मंदिरोंकी हुई है। (हैदराबाद १९१९-१६)

गुजरातका इतिहास।

बम्बई गजेटियर जिल्द १ भागमें गुजरातका इतिहास सन् १८९६में छपा था। उसमेंसे लिखा गया।

पं० भगवानलाल इंद्रजीने प्राचीन गुजरातका इतिहास सन् ई० ३१९ पहलेसे १३०४ तक तय्यार किया था जिसको जैक्-सन साहबने पूर्ण किया था।

गुजरातकी चौहद्दी है-पश्चिममें अरब समुद्र, उत्तर पश्चिम कच्छ खाडी, उत्तर-मेवाड, उत्तरपूर्व-आबू, पूर्व-विन्ध्याका वन, दक्षिणमें तापती नदी। इसके दो भाग हैं-गुर्जरराष्ट्र और सौराष्ट्र या काठियावाड।

गुर्जरराष्ट्रमें ४९००० वर्गमील व सौराष्ट्रमें २७००० वर्ग-मील स्थान है।

यहां सन् ३०० ई० पहलेसे १०० ई० तक समुद्रद्वारा यूनानी, बेकटीरियावाले, पार्थियन और स्कैथियन आते रहे। सन् ६००से ८०० तक पारसी और अरब आए। सन् ९०० से १२०० तक संगानम् लुटेरे, सन् १५०० से १६०० तक पुर्त-

गाल और तुर्क, सन् १६०० से १८०० तक अरब, आफ्रिकन, आरमीनियन, फ्रांसीसी, सन् १७६०से १८१२ तक वृटिश आए।

तथा पृथ्वीद्वारा उत्तरसे सन्ई०से २०० वर्ष पूर्वसे सन् ९०० तक स्कैथियन और हून, सन् ४०० से ६०० तक गुर्जर, सन् ७६० से ९०० तक पूर्वीय जादव और काथी, सन् ११०० से १२०० तक अफगान और मुगल, पूर्वसे सन् ई० ३०० वर्ष पूर्व मौर्य लोग, सन् १०० पूर्वसे ३०० तक छत्रप और अर्ध स्कैथियन३०० में गुप्त लोग, सन् ४०० से ६०० तक गुर्जर, सन् १९३० में मुगल, सन् १७६० में मराठा। दक्षिणसे सन् १०० में शतकर्णी, ६१० से ९६० में चालुक्य और राष्ट्रकूट आए।

शिलालेखोंसे यह प्रगट है कि गुर्जरोंका प्राचीन स्थान पंजाब व युक्त प्रान्त था वे मथुरामें सन् ई० ७८ में राजा कनिष्कके समयमें थे वहांसे वे सन् ३०० के अनुमान राजपूताना, मालवा, खानदेश और गुजरातमें आए जब गुप्तोंका राज्य था और सन् ४९० के अनुमान स्वतंत्र राजा होगए। सन ८९० में काश्मीरके राजा शंकर वर्मनने गुर्जर राजा अलखानापर हमला किया यह हार गया तब अलखानाने टक्कादेश या पंजाब देकर संधि करली। चीन यात्री हुईनसांगके समयमें सन् ६२० में गुर्जरोंके दो स्वतंत्र राज्य थे।

(१) उत्तरीय गुर्जर–जिसको चीनाने क्यूचलो लिखा है। इसकी राज्यधानी पिलोमो या भिनमाल या श्रीमाल थी। यह आबूसे उत्तर पूर्व ३० मील एक प्राचीन नगर है। एक जैन लेखक

(Indian Autiquary XIX 233) में लिखते हैं कि भिन माल भीमसेन राजाकी राज्यधानी थी तथा विद्याका मुख्य केन्द्र था। (राज्यमाला भाग १ पत्र ९६) के अनुसार इस श्रीमाल-नगरका राजा मूलराजसोलंखी (सन् ९४२–९९७)के साथ उस हमले ने था जो सोरठके विरुद्ध किया गया था। यहां बहुत वस्ती थी—

२ दक्षिण–गुजरात–इसकी राज्यधानी नांदीपुरी थी वर्तमानमें नांदोद जो राजपीपला राज्यकी राज्यधानी है। सन् ५८९ से ७३५ तक यह बहुत महत्वशाली नगर था जैसा प्राचीन शिलालेखसे प्रगट है।

चौथीसे आठवीं शताब्दी तक उत्तर और दक्षिणके मध्यका गुजरात देश वल्लभियोंके अधिकारमें था जो मूलमें गुर्जर थे।

इस गुजरातके प्राचीन विभाग–तीन थे (१) आनर्त्त (२) सौराष्ट्र और (३) लाट–आनर्तकी राज्यधानी आनंदपुर या बडनगर या आनर्तपुर थी जो नाम वल्लभी राजाओंने सन ५०० से ७०० तकमें व्यवहार किया है (Ind Ant: VII 73-77) रुद्रामन क्षत्रपके गिरनारके लेख (सन १५०) में आनर्त्त और सौराष्ट्रको भिन्न२ प्रांत लिखा है। स्कंध गुप्तके गिरनार लेख सन् ४५० में भी सौराष्ट्रका नाम है। नासिकके गौतमीपुराके लेखमें सोरठ नाम प्राकृतमें है (सन् १५०)। १३ वी व १४ वीं शताब्दीके श्री जिनप्रभसूरि रचित तीर्थकल्पमें सुराष्ट्रआ नाम है। विदेशियोने भी इसका नाम लिखा है जैसे स्टेशनों (५० सन् ई० पहलेसे २० तक) ने व प्लिनी (सन् ७०) ने व टोलिमी मिश्र

गाल और तुर्क, सन् १६०० से १८०० तक अरब, आफ्रिकन, आरमीनियन, फ्रासीसी, सन् १७६०से १८१२ तक वृटिश आए।

तथा पृथ्वीद्वारा उत्तरसे सन्ई०से २०० वर्ष पूर्वसे सन् ९०० तक स्केथियन और हून, सन् ४०० से ६०० तक गुर्जर, सन् ७५० से ९०० तक पूर्वीय जादव और काथी, सन् ११०० से १२०० तक अफगान और मुगल, पूर्वसे सन् ई० ३०० वर्ष पूर्व मौर्य लोग, सन् १०० पूर्वसे ३०० तक छत्रप और अर्ध स्केथियम३०० में गुप्त लोग, सन् ४०० से ६०० तक गुर्जर, सन् १५३० में मुगल, सन् १७५० में मराठा। दक्षिणसे सन् १०० में शातकर्णी, ६५० से ९५० में चालुक्य और राष्ट्रकूट आए।

शिलालेखोंसे यह प्रगट है कि गुर्जरोंका प्राचीन स्थान पंजाब व युक्त प्रान्त था वे मथुरामें सन् ई० ७८ में राजा कनिष्कके समयमें थे वहासे वे सन् ३०० के अनुमान राजपूताना, मालवा, खानदेश और गुजरातमें आए जब गुप्तोंका राज्य था और सन् ४९० के अनुमान स्वतंत्र राजा होगए। सन ८९० में काश्मीरके राजा शंकर वर्मनने गुर्जर राजा अलखानापर हमला किया यह हार गया तब अलखानाने टक्कादेश या पंजाब देकर संधि करली। चीन यात्री हुईनसागके समयमें सन् ६२० में गुर्जरोंके दो स्वतंत्र राज्य थे।

(१) उत्तरीय गुर्जर–जिसको चीनाने क्यूचलो लिखा है। इसकी राज्यधानी पिलोमो या भिनमाल या श्रीमाल थी। यह आबूसे उत्तर पूर्व ५० मील एक प्राचीन नगर है। एक जैन लेखक

(Indian Autiquary XIX 233) में लिखते हैं कि भिनमाल भीमसेन राजाकी राज्यधानी थी तथा विद्याका मुख्य केन्द्र था। (राज्यमाला भाग १ पत्र ९६) के अनुसार इस श्रीमाल-नगरका राजा मूलराजसोलंकी (सन् ९४२–९९७)के साथ उस हमले ने था जो सोरठके विरुद्ध किया गया था। यहां बहुत वस्ती थी—

२ दक्षिण–गुजरात–इसकी राज्यधानी नांदीपुरी थी वर्तमानमें नांदोद जो राजपीपला राज्यकी राज्यधानी है। सन् ५८९ से ७३५ तक यह बहुत महत्वशाली नगर था जैसा प्राचीन शिलालेखसे प्रगट है।

चौथीसे आठवीं शताब्दी तक उत्तर और दक्षिणके मध्यका गुजरात देश वल्लभियोंके अधिकारमें था जो मूलमें गुर्जर थे।

इस गुजरातके प्राचीन विभाग–तीन थे (१) आनर्त्त (२) सौराष्ट्र और (३) लाट–आनर्त्तकी राज्यधानी आनंदपुर या बड़नगर या आनर्तपुर थी जो नाम वल्लभी राजाओंने सन ६०० से ७०० तकमें व्यवहार किया है (Ind Ant: VII 73·77) रुद्रामन क्षत्रपके गिरनारके लेख (सन १५०) में आनर्त्त और सौराष्ट्रको भिन्न२ प्रांत लिखा है। स्कंध गुप्तके गिरनार लेख सन् ४५० में भी सौराष्ट्रका नाम है। नासिकके गौतमीपुराके लेखमें सोरठ नाम प्राकृतमें हैं (सन् १५०)। १३ वीं व १४ वीं शताब्दीके श्री जिनप्रभसूरि रचित तीर्थकल्पमें सुरायूआ नाम है। विदेशियोने भी इसका नाम लिखा है जैसे स्टेशनों (५० सन् ई० पहलेसे २० तक) ने व लिपनी (सन् ७०) ने व टोलिमी मिश्र

गाल और तुर्क, सन् १६०० से १८०० तक अरब, आफ्रिकन, आरमीनियन, फ्रांसीसी, सन् १७५०से १८१२ तक वृटिश आए।

तथा पृथ्वीद्वारा उत्तरसे सन्ई०से २०० वर्ष पूर्वसे सन् ९०० तक स्कैथियन और हून, सन् ४०० से ६०० तक गुर्जर, सन् ७५० से ९०० तक पूर्वीय जादव और काथी, सन् ११०० से १२०० तक अफगान और मुगल, पूर्वमें सन् ई० ३०० वर्ष पूर्व मौर्य लोग, सन् १०० पूर्वसे ३०० तक छत्रप और अर्ध स्कैथियम३०० में गुप्त लोग, सन् ४०० से ६०० तक गुर्जर, सन् १५३० में मुगल, सन् १७५० में मराठा। दक्षिणमें सन् १०० में शतकर्णी, ६५० से ९५० में चालुक्य और राष्ट्रकूट आए।

शिलालेखोंसे यह प्रगट है कि गुर्जरोंका प्राचीन स्थान पंजाब व युक्त प्रान्त था वे मथुरामें सन् ई० ७८ में राजा कनिष्कके समयमें थे वहांसे वे सन् ३०० के अनुमान राजपूताना, मालवा, खानदेश और गुजरातमें आए जब गुप्तोंका राज्य था और सन् ४९० के अनुमान स्वतंत्र राजा होगए। सन ८९० में काश्मीरके राजा शंकर वर्मनने गुर्जर राजा अलखानापर हमला किया यह हार गया तब अलखानाने टक्कादेश या पंजाब देकर संधि करली। चीन यात्री हुईनसांगके समयमें सन् ६२० में गुर्जरोंकि दो स्वतंत्र राज्य थे।

(१) उत्तरीय गुर्जर–जिसको चीनाने क्यूचलो लिखा है। इसकी राज्यधानी पिलोमो या भिनमाल या श्रीमाल थी। यह आबूसे उत्तर पर्व ३० मील एक प्राचीन नगर है। एक जैन लेखक

वर्ष पहले तक भारतकी लकड़ी तथा सिंधुमें अर्थात् भारतीय तन्जेवोंमें पश्चिमीय भारत और युफ्रटीज नदीके मुख तकके देशसे व्यापार होता था। द्राविड़ भाषा बोलनेवाले सुमरी लोगोंका संबंध सिनाई और मिश्रसे था, जिनका सम्बन्ध पश्चिम भारतसे ६००० वर्ष सन्के पुर्व तक था (Compare Hibbert lectures J. R. A. S XXI 326) हिन्दू धर्म शास्त्रोंमें गुजरातको म्लेच्छ देश लिखा है और मना किया है कि गुजरातमें न जाना चाहिये। (देखो महाभारत अनुशासन पर्व २१९८–९ व अ० सात ७२ व विष्णुपुराण अ० द्वि० ३७)। भारतके पश्चिममें यवनोंका निवास बताया है (J R. A. S IV 468)

प्रबोधचंद्रोदयका ८७ वां श्लोक कहता है कि जो कोई यात्राके सिवाय अंग, वंग, कलिंग, सौराष्ट्र तथा मगधमें जायगा उसको प्रायश्चित लेकर शुद्ध होना होगा।

(स० नोट–ऐसा समझमे आता है कि इन देशोंमें जैन राजा थे व जैन धर्मका बहुत प्रभाव था इसीलिये ब्राह्मणोने मना किया होगा।)

मौर्य्योंके अधिकारके समयसे गुजरातका इतिहास ब्राह्मण, बौद्ध तथा जैन लेखोंमे मिलता है।

मौर्य्य लोग बडे उदार शासक थे, और इनकी प्रतिष्ठित मित्रता यूनान व मिश्र देशके राजाओंसे व अन्योसे थी।

(Mauryas were beneficent rulers and had also honorable alliances with Greek and Egyptian Kings etc.)

इन कारणोसे मौर्य वंश एक बडा बलवान व चिरस्मरणीय वंश था। शिलालेखोसे यह बात विश्वास की जाती है कि मौर्य

भूगोल वेत्तामें (सन् १९०) व यूनानी लेखक पैरीप्लसने (सन् २४०) चीनीहुईनसांगने भी सन् ६०० से ६४० में वल्लभी और सौराष्ट्रको भिन्नर प्रांत लिखा है। वल्लभीको वर्तमानमें गोहिलवाडा कहते हैं इसीको जिनप्रभसूरिने सेत्रुंजय कल्पमें वल-कवसाड लिखा है। (३) लाट प्रांत माही नदीसे ताप्ती तक है। टोलिमीने इसे लारिकी कहा है। तीसरी शताब्दीके वात्स्थापन रचित कामसूत्रमें मालवाके पश्चिम लाट देश आया है। छठी शता-ब्दीमें ज्योतिषी वराहमिहिरने भी लाटका नाम लिया है। अनंताके ९ वीं शदीके लेखमें है। मंदसोरका लेख (सन् ४३७) कहता है कि लाट देशमें रेशमके बुननेवाले थे। लाट निवासी राजाओंको राष्ट्रकूट वंशी कहते हैं। इस वंशका बडा राजा महाराजा अमोघ वर्ष था (सन् ८९१–८७९) उसने इसे राट्ट वंश कहा है। लाट तूर जो सौंदत्ती और बेलगामके राट्टोंका मूल नगर था इसी लाट देशमें होगा। भरुच और मालवाके धारके मध्यमें जो देश हैं जहां मुख्य नगर बाध और टांग है उसको अब भी राठ कहते हैं–

गुजरातमें गिरनार पर्वतकी चट्टानका लेख सबसे पुराना सन् ई० से २४० वर्ष पहलेका है दूसरा लेख वहीं क्षत्रप रुद्रा-दामनका सन् १२९ का है। इनमें मौर्य महाराज चन्द्रगुप्त (सन् ४० से ३०० वर्ष पहले) का वर्णन है।

हेवट साहबने गुजरातका पता सन ई० से ६००० वर्ष पूर्व तक लगाया है। मिश्र देशमें जो कब्र खोदी गई हैं वे सन ई० से १७०० वर्ष पहलेकी हैं उनमें भारतीय तंजेब व नील पाई गई है (J. R. A. S. XX 206) सन् ई० से ४०००

वर्ष पहले तक भारतकी लकड़ी तथा सिंधुमें अर्थात् भारतीय तन्जेवोंमें पश्चिमीय भारत और युफ्रटीज नदीके मुख तकके देशसे व्यापार होता था। द्राविड़ भाषा बोलनेवाले सुमरी लोगोंका संबंध सिनाई और मिश्रसे था, जिनका सम्बन्ध पश्चिम भारतसे ६००० वर्ष सन्के पूर्व तक था (Compare Hibbert lectures J. R. A. S XXI 326) हिन्दू धर्म शास्त्रोंमें गुजरातको म्लेच्छ देश लिखा है और मना किया है कि गुजरातमें न जाना चाहिये। (देखो महाभारत अनुशासन पर्व २१९८–९ व अ० सात ७२ व विष्णुपुराण अ० द्वि० ३७)। भारतके पश्चिममें यवनोंका निवास बताया है (J R A.S IV 468)

प्रबोधचंद्रोदयका ८७ वां श्लोक कहता है कि जो कोई यात्राके सिवाय अंग, बंग, कलिंग, सौराष्ट्र तथा मगधमें जायगा उसको प्रायश्चित लेकर शुद्ध होना होगा।

(स० नोट–ऐसा समझमें आता है कि इन देशोंमे जैन राजा थे व जैन धर्मका बहुत प्रभाव था इसीलिये ब्राह्मणोंने मना किया होगा।)

मौर्य्योंके अधिकारके समयसे गुजरातका इतिहास ब्राह्मण, बौद्ध तथा जैन लेखोंमें मिलता है।

मौर्य्य लोग बडे उदार शासक थे, और इनकी प्रतिष्ठित मैत्रता यूनान व मिश्र देशके राजाओंसे व अन्योंसे थी।

(Mauryas were beneficent rulers and had also honorable alliances with Greek and Egyptian Kings etc.)

इन कारणोंसे मौर्य वंश एक बडा बलवान व चिरस्मरणीय वंश था। शिलालेखोंसे यह बात विश्वास की जाती है कि मौर्य

वंश संस्थापक महाराजा चंद्रगुप्त थे (सं० नोट—"यह राजा जैनधर्मानुयायी थे व श्री भद्रबाहु श्रुतकेवलीके शिष्य मुनि होगए थे" यह बात श्रवण बेलगोला आदिके शिलालेखोंसे प्रमाणित है) ने (सन् ३१९ वर्ष पूर्व) अपना शासन गुजरातपर भी बढ़ाया था। गिरनारकी चट्टानमें जो सन् १५०का रुद्रदामनका लेख है उससे यह प्रगट होता है। (देखो R. A. S. J. 1891 P. 47) कि इस चट्टानके पास जो सुदर्शन झील है उसको मूलमें महाराज चंद्रगुप्तके साले वैश्यजातीय पुष्पगुप्तने बनवाया था। (राजा अशोकने भी एक सेठकी कन्या देवीको विवाहा था। देखो Cunningham Bhilsa Topes 95 और Turnours mahavansa 76) इस लेखकी भाषासे निःसंदेह यह प्रगट होता है कि चंद्रगुप्तका राज्य गिरनारके देशपर था तथा पुष्पगुप्त उसका राज्याधिकारी (Governor) था। यही लेख कहता है कि महाराज अशोकके राज्यमें उसके राज्याधिकारी यवनराज तुशास्पने इस झीलको नालियोंसे भूषित किया था। राजा चंद्रगुप्तसे लेकर अशोक तक मौर्य राज्य बहुत विस्तृत था। अशोकने अपने बड़े राज्यकी हदोंपर स्तंभ गड़वा दिये थे। जैसे उत्तर पश्चिममें कपूर्दिगिरि पर या बाकूके शाबाजगढ़ पर, जो पाली लिपिमें है तथा उत्तरमें कालसी पर, पूर्वमें धौली और जंगदा पर, पश्चिममें गिरनार और सुपारा पर, दक्षिणमें मैसूरमें, ये सब मौर्य लिपिमें हैं—

मौर्योंकी राज्यधानी गुजरातमें गिरिनगर या जूनागढ़ थी। क्षत्रपोंके राज्य (सन् १०० से ३८० तक) तथा गुप्तोंके राज्य (३८० से ४६० तक) में यही राज्यधानी थी। मौर्योंकी

दक्षिणी राज्यधानी सोपारा थी जो वेसीनके पास है। जहाजोंके लिये बंदर है। यह कोंकण व दक्षिण गुजरातका मुख्य व्यापार केन्द्र था।

बौद्ध और जैन लेखोंसे प्रगट है कि अशोकके पीछे उसकी गद्दीपर उसका अंधा पुत्र कुणाल नहीं बैठा था किन्तु उसके दो पोतोंने अर्थात् दशरथ और सम्प्रतिने राज्य किया था। गया जिलेके बराबर और नागार्जुन पहाड़ियोंके लेखोंमें दशरथका नाम है। जैन लेखोंमें सम्प्रतिकी बहुत अधिक प्रशंसा है (देखो हेमचंद्रकृत परिशिष्ट पर्व व मेरुतुंगकृत विचारश्रेणी)। यह कहा जाता है कि करीब २ सब प्राचीन जैन मंदिर राजा सम्प्रतिके बनवाए हुए हैं।

जिनप्रभसूरि जैनाचार्यने पाटलीपुत्र कल्पग्रंथमें पाटलीपुत्रकी कथाएं दी हैं। उनमें एक स्थानपर है—

"कुणालसूनुस्त्रिखंडभरताधिपः परमार्हतो अनार्य्यदेशे-ष्वपि प्रवर्तितश्रमणविहारः सम्प्रति महाराजाऽसोऽभवत्।"

इसका भाव यह है कि कुणालके पुत्र सम्प्रति थे जो तीन खंड भरतके राजा थे, परम अर्हंत भक्त जैन थे। जिन्होंने अनार्य देशोंमें भी मुनियोंका विहार कराया।

अशोकके पीछे दशरथ तो पूर्व भारतमें व सम्प्रति पश्चिम भारतमें राज्य करते थे, जहां जैन जाति अब भी विशेष फैली हुई है। यह संप्रति उज्जैनका भी राजा था। इसके पीछे मौर्य राजाका नाम नहीं सुन पड़ता है। सन् ९०० में मौर्य राजाओंका नाम मालवा और उत्तरी कोंकणमें झलकता है।

संप्रतिने सन् ई० से १९७ वर्ष पूर्व तक राज्य किया।

इसके पीछे १७ वर्षका इतिहास अप्रगट है। यूनान लोगोंने गुजरात पर सन् ई० से १८० वर्ष पूर्वसे १०० वर्ष पूर्व तक राज्य किया। उनके दो प्रसिद्ध राना हुए, मीनन्दर और अपोलोद्रोतस, इनके सिक्के पाए गए हैं।

क्षत्रपोंका राज्य–यहां सन् ई० ७० पूर्वसे सन् ३९८ तक रहा है। इसके वंशको शाहवंश भी कहते थे, जो सिंह वंशका अपभ्रंश है। इनको सेन महाराज भी कहते हैं। शिलालेखोंके अंतमें सिंटका चिन्ह है। काठियावाडके क्षत्रपोंके वंशका वंश चासथना (सन् १३०) से होता है, जिनके बडे राजा नहापन (सन् १२०) और उनके जमाई शक उपभदत्त (रिषभदत्त) के नाम नासिकके शिलालेखोंमें आते हैं कि वे शक, पहलवी और यवनोंके मुखिया थे।

कुशान संवत् (सन् ७८) को पश्चिमी क्षत्रपोंके पहले दो राजा चश्थमा प्रथम और जयदमनने स्वीकार नहीं किया है जिससे प्रगट है कि वे कुशानोंसे पूर्वके हैं।

क्षत्रपोंके दो वंश थे (१) उत्तरीय–जो काबुलसे जमना गंगा तक राज्य करते थे और (२) पश्चिमीय–जो अजमेरसे उत्तर कोंकण तक दक्षिणमें और पूर्वमें मालवासे पश्चिम अरब समुद्र तक राज्य करते थे।

प्राकृत सिक्कोंमें नाम क्षत्रप, क्षत्रव व सतप मिलता है। ये लोग वाल्वनमें बैक्ट्रियासे भारतमें आए थे। यहां भारतीय धर्म और नाम धारण कर लिये।

उत्तरीय क्षत्रपोंका राज्य सन ई० से ७० वर्ष पूर्व राना

मनेससे शुरू होकर कुशान राजा कनिष्क (सन् ७८) तक समाप्त होजाता है। मनेस स्कैथियनके शाका वंशमे था।

मनेस क्षत्रपका पुत्र क्षत्रप सुदासने मथुरामें राज्य किया फिर कनिष्कने।

पश्चिमी क्षत्रपोके राजा।

(१) नहपान–प्रथम गुजरातका क्षत्रपा सिकेपर है।

" राज्ञो क्षत्त्रातस नहपानस। "

उषभदत्त–जमाई नहपानका इसको नहपानकी कन्या दहमित्रा विवाही गई थी।

नासिक और करलेके शिलालेखोसे प्रगट है कि उषभदत्तने नहपानके राज्यमें बहुत लाभकारी काम किये थे। यह बडा भारी अधिकारी था। यह हर वर्ष लाखो ब्राह्मणोंको भोजन देता था। भृगुकच्छ (भरुच) और दशपुर (मदसोर) में धर्मशाला व दानशालाए व गोवर्धन तथा सुपारामें बाग और कुए बनवाये थे। अम्बिका, तापती, कावेरी, दाहानु नदीपर मुफ्तकी नौकाए जारी की थी व नदी तटपर सीढिया व घाट बनाए थे। इन कामोमें ब्राह्मण भक्ति झलकती है, परन्तु उसने नासिकमे बौद्धगुफा बनवाई। गुफाओंमें निवासी साधुओंके लिये ३०० कार्षपान और ८००० नारियलके वृक्ष व एक ग्राम पूनामें कारलेके पास दान किया। ऋषभदत्त ब्राह्मणधर्मी जब कि उसकी स्त्री बौद्धधर्मी मालूम होते है।

(२) क्षत्रप चसथाना द्वि०–(सन् १३० से १४०), इसका पिता जमोतिक था, जैसा उसके सिक्कोसे प्रगट है। (इस चसथानाका पोता रुद्रदामन था जो जूनागढ़ लेखोमें है।

(३) क्षत्रप तृ० जयदमन—सन् १४० से १४३

(४) क्षत्रप च० रुद्रदामन—सन् १४३ से १६८

सिक्केपर है—

"राज्ञो क्षत्रपस जयदामपुत्रसराज्ञो महाक्षत्रपस रुद्रदामन।"

इसका जो लेख सुदर्शन झील पर है उसमे प्रगट होता है कि रुद्रदामनकी राज्यधानी उज्जैनमें थी तथा ये नीचे लिखे स्थानोंके स्वामी थे (१) अवन्तीवती (पूर्व व पश्चिम मालवा), अनूप (गुजरातके पास), आनर्त, सुराष्ट्र, स्वाभ्रा (उत्तर गुजरात), मारू (माडवाड), रच्छा, सिंधु सौवीर (सिंध और मुल्तान), कुकुर, अपरात (उत्तरमे माही दक्षिणमे गोआ) निषाद (देश—पूर्वमे मालवा, पश्चिममें सिंध, आबू उत्तरमे, उत्तर कोकणतक, दक्षिणमें कच्छ और काठियावाड)। रुद्रदामनने दो युद्ध किये थे, एक यौद्धेयोसे, दूसरा दक्षिण पथके शातकरणीसे। दोनोमे विजय पाई। यौद्धेयोके सिक्के तीसरी शताब्दीके युक्त प्रातमे मिले हैं।

यह रुद्रदामन बडा विद्वान् था। व्याकरण, राज्यनीति, गान, व न्यायशास्त्रमें निपुण था। राजाओंके स्वयम्वरोमे कई कन्याओने वरमालाए डाली थी।

उसकी यह प्रतिज्ञा थी कि सिवाय युद्धके कोई मनुष्य किसी मनुष्यको न मारे। उसने सुदर्शन झीलको अपने ही खजानेसे बनवाई व कर नहीं लगाया।

५—क्षत्रप पचम दामाजद या दामाजदस्री सन्—१६८ से १६८ तक। यह रुद्रदामनका पुत्र था।

बीचमें रुद्रदामनके भाई रुद्रसिंहने भी राज्य किया।

६–जीवदामन–सन् १७८

७–रुद्रसिंह द्वि०–जीवदामनका चाचा–सन् १८१–१९६ इसके समयका एक गोंड़ शिलालेख उत्तर काठियावाड़के हालार स्थानमें पाया गया है। (Indian Ant x 157) जिसमें एक कूप खोदनेका वर्णन है।

(८) क्षत्रप रुद्रसेन–रुद्रसिंहका पुत्र सन् २०३से २२० मध्यका वर्णन नहीं।

(९)क्षत्रप–पृथ्वीसेन-रुद्रसेनका पुत्र सन् २२२

(१०) ,, संघदमन २२२–२२६

(११) ,, दामसेन संघदमनका भाई २२६–२३६

(१२) ,, दामाजदश्री पुत्र रुद्रसेन २३६

(१३) ,, वीरदमन दामसेनका पुत्र २३६–२३८

(१४) ,, यशदमन भ्राता वीरदमन २३९

(१५) ,, विजयसेन ,, ,, २३९–२४९

(१६) ,, दामानद श्री तृ० ,, विजयसेन २५०–२५५

(१७) ,, रुद्रसेन द्वि० पुत्र वीरदमन २५६–२७२

(१८) ,, विश्वसिंह पुत्र रुद्रसेन २७२–२७८

(१९) ,, भर्तृदमन भ्राता विश्व० २७८-२९४

(२०) ,, विश्वसेन पुत्र भर्तृ २९४–३००

चस्थमा वंशका अंत ७ वर्ष पीछे

(२१) क्ष० रुद्रसिंह पुत्र जीवदमनका सन ३०८–३११में सिक्का कहता है। स्वामि जीवदान पुत्रसक्षत्रपस रुद्रसिंहस।

(२२) क्ष० यशदमन पुत्र रुद्र० सन ३२०

(२३) „ दामश्री, भ्राता यश ३२०

फिर ३० वर्षका पता नहीं

(२४) „ स्वामी रुद्रसेन, पुत्र रुद्रदमन ३४८–३७६

(२५) रुद्रसेन च०–पुत्र सत्यसेनका ३७८–३८८

(२६) सिंहसेन भतीजा रुद्र

(२७) स्कंध इसके पाससे राज्य गुप्तोंके हाथमें गया।

त्रैकूटक–इस वंशकी राज्यधानी उत्तर पूनामें जुन्नारमें थी। इसका संस्थापक महाक्षत्रपस ईश्वरदत्त था। सन् २४८में इसको दामनदश्रीने हराया, सन् २५०में इन त्रैकूटकोंको जबलपुरसे पश्चिम ४ मील त्रिपुरा और कालंजरमें (जबलपुरसे उत्तर १४० मील) सन् २५६में भगा दिया गया था।

इन लोगोंने अपने सम्वतका नाम चेदी सम्वत रक्खा। त्रैकूटक लोग हैहयन वंशके नामसे सन् ४५५में समृद्धिको प्राप्त हुए और अपनी शाखा अपने प्राचीन नगर त्रिकूटपर स्थापित की। तथा बम्बई बन्दरके बहुतसे भाग दक्षिण तथा दक्षिण गुजरातपर राज्य किया। क्षत्रपोंके पतन और चालुक्योंके महत्त्वके समयको (सन् ४१० से ६००) इन्होंने शायद पूर्ण किया।

गुप्तवंश–क्षत्रपोंके पीछे गुजरात पर गुप्तोंने ४१०से ४७० तक राज्य किया। इन गुप्तवंशोंके राजा नीचे प्रमाण हुए हैं—

	गुप्त संवत	सन् ई०
(१) एक छोटा राजा गुप्त प्रांतमें	१–१२	३१९–३३१
(२) घटोत्कच „	१२–२९	३३१–३४९
(३) चंद्रगुप्त प्रथम बलशाली „	२९–४९	३४९–३६९

(४) समुद्रगुप्त बड़ा „ ५०—७५ ३७०—३९५

(५) चन्द्रगुप्त द्वितीय „ ७६—९६ ३९६—४१५

यह बडा राजा था। इसने मालवाको गुप्त सं० ८० व गुजरातको गुप्त सं० ९० व सन् ई० ४१०में विजय किया था।

(६) कुमारगुप्त—गुजरात व काठियावाडमें राज्य किया था। गुप्त सं० ९१—१३३। ई० स० ४१६—४५३

(७) स्कंधगुप्त—गुजरात व कच्छ में राज्य किया था। गुप्त सं० १३३—१४९। ई० स० ४५४—४७०

इसने बहुत दिनोंसे विस्मृत अश्वमेध यज्ञको किया था। चंद्रगुप्त द्वि०, कुमारगुप्त व स्कंध० ब्राह्मणधर्म धारी थे। चंद्रगुप्त प्रथमने तिरहुतकी लिच्छवीवंशकी कन्याके साथ विवाह किया था। समुद्रगुप्तने अपनी माताका नाम कुमारदेवी सिक्कोंमें लिखा है (देखो स्कंधगुप्त जूनागढ लेख Ind. Ant. XIV)

समुद्रगुप्तकी प्रशंसा अलाहाबादके खंबके लेखमें है (देखो J. R. A. S. XXI) लाइन सातमें है कि इसने अच्युत नागसेनकी सेनाका विध्वंश किया। ला० १९—२०में है कि इसने नीचे लिखे प्रांतोंके राजाओं पर विजय पाई (१)कोशलका मनेन्द्र, (२) महाकांतार (रायपुर और छत्तीसगढ़के मध्य) का व्याघ्रराज, (३) कौराहा (केरल) का मुंडराज, (४) पैष्ठपुर, महेन्द्रगिरी औट्टूरका राजा स्वामीदत्त, (५) ऐरग पल्लकका दमन, (६) काचीका राजा विष्णु, (७) सायाव मुक्तका राजा नीलराज, (८) वेंगीका हस्तिवर्मन, (९) पालकका उग्रसेन (१०) देवराष्ट्रका कुबेर, (११) कौस्थलपुरका धनंजय।

लाइन २१ कहती है कि उसने आर्यावर्त्तके ९ राजाओंको नष्ट किया। वे राजा हैं–रुद्रदेव, मतिल, नागदत्त, चंद्रवर्मन, गणपतिनाग, नागसेन, अच्युत, नंदिन, बल्वर्मन। इनमें गणपतिनाग ग्वालियरका राजा था।

ला० २२–२३ कहती है कि नीचेके राजा इसको कर देते थे। समतत, गंगाखाड़ी, दायक (दक्षिण), कामरूप (आसाम), नैपाल, कात्रिक (कटक), मालवा, अर्जुनायन, यौद्धेय, मादक, आभीर, प्रार्जुन, सनकानिका, काक, खरपरिक। नीचेके राजाओंने अपनी कन्याएं दी थीं–शाक, मुरुण्ड, सैंहलक द्वीपोंके कुशान राजा देव पुत्र, शाहव शाहानुशाहीने।

यह लेख कहता है कि समुद्रगुप्तके राज्यमें मथुरा, अवध, गोरखपुर, अलाहाबाद, बनारस, विहार, तिरहुत, बंगाल, राजपूतानाका पूर्व भाग शामिल था।

इसीका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वि० था। माता दत्तादेवी थी। इसीका दूसरा नाम विक्रमादित्य था। इसने क्षत्रपोंसे गुजरात और काठियावाड़ लिया था। यह उज्जैनका राजा कहलाता था। उसके काठियावाटी सिक्कोंपर यह लेख है–

"परमभागवत महाराजाधिराज श्री चंद्रगुप्त विक्रमादित्य इसीने गुप्त संवत चलाया। यह संवत सन ४७०में जाता रहा, तब प्राचीन मालवाका संवत विक्रम (सन ई० से ५७ वर्ष पूर्व) फिर चलने लगा।

इसका पोता स्कंधगुप्त था, जिसने सौराष्ट्रदेशका अधिपति पर्णदत्तको चुना था। इसका पुत्र चक्रपालित था। पर्णदत्तके सम-

यमें सुदर्शनझील फिर ठीक कीगई थी (सन् ४५७)। यह झील गिरनार पर्वतके पश्चिम भवनाथकी घाटीके पास है।
(B. R. A. S XVIII)

स्कंधगुप्तके राज्यकी तारीखें गिरनार लेख पर १३६–१३७ है। काहोन गोरखपुरके खंभेमें १४१ हैं, इन्दो–खेड़ा ताम्रपत्रमें १४६ है। सिक्कोपर १४४, १४५, १४९ है।

इसके पीछे गुप्तोका प्रभाव घट गया। गुप्तवंशमें बुधगुप्त सन ४८५में हुआ। इसका नाम सागर जिलेके एरानक मंदिरके खंभेमें है। इसका राज्य कालिंदी (जमना) और नर्वदाके मध्यमें था।

तोरामन–सन् ४९७ बुधगुप्तके पीछे ग्वालियरके सिक्कोंमें नाम है। इसका पुत्र मिहिरकुल था (Ind Ant. III)

भानुगुप्त–सन ५११ यह, मालवाके किसी भाग पर राज्य करता था। इसके वंशका राज्य हर्षवर्धन (६०७–६५०) के समय तक चलता रहा। हर्षचरितमें राज्यवर्द्धनका शत्रु मालवा देवगुप्त कहा गया है। पश्चिम भारतमें जब गुप्त गिरे तब गुप्तोकी एक शाखा राजा नारगुप्त बालादित्यके नीचे मगधमें उठी थी।

पुष्पमित्र जैन वंश–स्कंध गुप्तका लेख जो भिटोरीके स्तंभ है उसमें लिखित है कि इसने पुष्पमित्रको विजय किया। यह पुष्पमित्र सन ४५५ मे था। यह वंश सन ७८ से ९३७ तक चलता रहा। राजा कनिष्कके समयमे यह वंश बुलन्दशहरके पास बस गया था और अपनेको जैन धर्मानुयायी कहता था।

(देखो–Bhitari Ins. corp. Ins. Ind. III.)

गुप्त–स्कंधगुप्तके पीछे उसके भाई पुरुगुप्तने, फिर उसके

पुत्र नरसिंहगुप्त, फिर उसके पुत्र कुमारगुप्त द्वि० ने राज्य किया।

यशोधर्मन–सन ५३३–३४ माल्वाका। इसने मिहिरकुलको हरा दिया था तौ भी ग्वालियरका राजा मिहिरकुल रहा था (यूनानी व्यापारी कोसमस इंडीकोप्लु स्तेने सन ५२० में उत्तर भारतमें इसका राज्य मालूम किया था) यशोधर्मनका राज्यस्थान मंदसोर था।

(देखो-Fleet corps Ins Ind III)

इसने ब्रह्मपुत्रसे महेंद्रगिरि तक व हिमालयासे दक्षिणसमुद्र तक विजय किया था। छठी शताब्दीमें उज्जैनमें एक प्रसिद्ध वंश राज्य करता था। यशोधर्मन् स्वयं महान विक्रमादित्य था।

वल्लभी वंश–(सन् ५०९–७६६)–गुजरातमें गुप्तोंके पीछे वल्लभी वंशने राज्य किया। इनका राज्यस्थान वलेह या वल्लभी था जो भावनगरसे पश्चिम २० मील है और शत्रुंजय पर्वतसे उत्तर २५ मील है।

श्वे० श्री जिनप्रभसूरिकृत शत्रुंजयकल्पमें जो तेरहवीं शताब्दीमें लिखा गया था इसका नाम वल्लभी आया है व प्राकृत नाम वलाहक है। (स० नोट–यहीं ९०० वीर सम्वतमें श्वे० आचार्य देवर्द्धिगणिने श्वेताम्बरी लोगोंमें पाए जानेवाले आचारांग आदि अंगोंकी रचना की थी–इसलिए वर्तमान पाए जानेवाले श्वेताम्बरी अंग प्राचीन लिखित मूल अंग नहीं हैं।) चीन यात्री हुईनसांग सन् ६४०में लिखता है कि इस समय यह एक नगर बहुत धनवान व जन संख्यासे पूर्ण था। करोडपति सौ से ऊपर थे (Over hundred merchant owned 100 lacs)। ६००० साधुओंके बहुतसे संघाश्रम थे। राजा यहांका क्षत्री था जो माल्वाके शिलादित्यका

भतीजा तथा कान्यकुब्जके राजा, शिलादित्यके लडकेका जमाई था। नाम उसका ध्रुवपद था। यह बौद्ध धर्मको मानता था। इसने बौद्धोंके लिये अर्हत्प्रचार नामका मठ बनवादिया था। जहा बोधिसत्त्व साधु गुणमति और स्थिरमति रहते थे। इन्होंने शास्त्र बनाए थे।

वल्लभीके ताम्रपत्र पाए गए हैं। यहा मदिर व मकान ईंटों और लकडीके होते थे, परन्तु एक ही मदिरका यहा पता चला है जो गोपीनाथपर है।

(Burges Kathiawar and Kutch 1897)

एक ऐसा लकडी व ईंटोंका मदिर शत्रुंजय पर्वत व एक सोमनाथपर था ऐसा पता लगा है। कहते हैं कि अनहिलवाडाके राजा कुमारपाल सोलकी (सन ११४३–११७४) का मत्री शत्रुञ्जय पर्वतपर श्री आदिनाथजीके जैन मदिरमें पूजनको आया था तब तक चूहेने दीवेकी बत्तीसे मदिरमे अग्नि लगा दी और लकडीका मदिर भस्म होगया। तब मत्रीने पाषाणके मदिर बनानेका इरादा किया। (कुमारपाल चरित्र)

सोमनाथमें भद्रकालीका मदिर पहले लकडीका था फिर उसको भीमदेव (१०२२–१०७२) ने पाषाणका बनाया, ऐसा लेखसे प्रगट है।

वल्लभी वशके जो ताम्रपत्र हैं उनमें वृषभका चिन्ह है तथा भट्टारक शब्द आता है। ये सब सस्कृतमें हैं। वल्लभी सवत सन् ई० ३१९ में शुरू हुआ है। वल्लभी राजाओंके प्रबंधमें इस भाति नाम प्रसिद्ध थे।

(१) आयुक्तिक या विनियुक्तिक–मुख्य अधिकारी।

(२) द्रांगिक–नगरका अधिकारी
(३) महत्तरि–ग्रामपति
(४) चाटभट–पुलिस सिपाही
(५) ध्रुव–ग्रामका हिसाब रखनेवाला वंशज अधिकारी तलाटी या कुलकरणीके समान
(६) अधिकरणिक–मुख्य जज
(७) दंडपासिक–मुख्य पुलिस आफिसर।
(८) चौरोद्धर्णिक–चोर पकड़नेवाला।
(९) राजस्थानीय–विदेशी राजमंत्री।
(१०) अमात्य–मंत्री।
(११) अनुत्पन्नादान समुदग्राहक–पिछला कर वसूल करनेवाला
(१२) शौल्किक–चुंगी आफिसर Custom Officer
(१३) भोगिक या भोगोद्धर्णिक–आमदनी या कर वसूल करनेवाला
(१४) वर्तमपाल–मार्ग निरीक्षक सवार।
(१५) प्रतिसरक–क्षेत्र और ग्रामोंके निरीक्षक।
(१६) विषयपति–प्रांतका आफिसर।
(१७) राष्ट्रपति–जिलेका आफिसर।
(१८) ग्रामकूट–ग्रामका मुखिया।

विषयके नीचे आहार (जिला) फिर पथक (उसका भाग) फिर स्थली (उसका भी भाग) ऐसे भाग थे। राज्यधर्म अधिकतर शैव था। केवल ध्रुवसेन (५२६ ई०) परमभागवत वैष्णव था। इसका भाई और राज्याधिकारी धरपत्त–परमादित्यभक्त तथा गृहसेन बुद्धके उपासक थे। सब वल्लभी राजा परममहेश्वर कहलाते थे।

ये लोग मालवासे आये और अपना संवत मालवाके समान कार्तिकसे गिनते थे। गुप्तलोग चैत्रसे गिनते थे।

वल्लभीराजागण।

(१) सेनापति भट्टारक सन् ५०९–५२०। इसनें मिहरवंशके माद्रिक (४७०–५०९)को हटाया था जिनका राज्य काठियावाडमें था। अब भी मिहर लोग काठियावाडके दक्षिण वर्दा पहाड़ीमें पाए जाते हैं। पोरबंदरके जेठोर सर्दार मिहर राना कहलाते हैं। सन् ४७०में गुप्तों और मिहरोंसे युद्ध हुआ था तब गुप्त हार गए थे। मिहिर और गुप्तोंकि पंजाब विजई मिहिर कुल (५१२–५४०) में कुछ सम्बन्ध था। काठियावाड़के उत्तर पूर्व मिहर लोग १३वीं शदी तक राज्य करते रहे (रासमाला)। सेनापति भट्टारकके चार पुत्र थे। धरसेन, द्रोणसिंह, ध्रुवसेन और धरपत्ता ५२० से २६ तकका पता नहीं।

(२) ध्रुवसेन प्रथम (५२६–५३५) ४ वर्षका पता नहीं।

(३) ग्रहसेन (५३९–५६९) यह बड़ा राजा था। मंत्री स्कन्धभट था।

(४) धरसेन द्वि० (५६९–५८९) ग्रहसेनका पुत्र।

(५) शिलादित्य नं० १ (५९०–६०९) पुत्र धर०। इसको धर्मादित्य भी कहते थे। मंत्री–चंद्रभट्टी थे।

(६) खरग्रह–(६१०–६१५) भाई शिला०

(७) धरसेन तृ० (६२५–६२०) पुत्र० ख०

(८) ध्रुवसेन द्वि० या बालादित्य (६२०–६४०) भ्राता धरसेन

(९) धरसेन च० (६४०–६४९) पुत्र ध्रुव० यह बहुत बलवान

था। ६४९का ताम्रपत्र कहता है कि यह परमभट्टारक महाराजाधि-राज परमेश्वर चक्रवर्ती थे। भट्टीकाव्य वल्लभीमें इसीके राज्यमें लिखा गया था। जैसा वाक्य है "काव्यमिदम् रचितम् मया वल्म्याम् श्री धरसेन नरेन्द्र पालितायाम्"।

(१०) ध्रुवसेन तृ० (६५०—६५६) धरसेन च० के दादाके लड़के देराभटका पुत्र।

(११) खरग्रह (६५६—६६५) भ्राता ध्रुव।

(१२) शिलादित्य तृ० (६६६—६७५) खरग्रहके बड़े भाई शिलादित्य द्वि०का पुत्र)। (नोट—शि० द्वि०का नाम ऊपर नहीं है)

(१३) शिलादित्य च० (६७५—६९१) पुत्र शि० तृ०

(१४) शिलादित्य प० (६९१—७२२) पुत्र शि० च०

(२५) शिलादित्य छ० (७२२—७६०) „ शि० प०

(१६) शिलादित्य सप्तम ध्रुवपद(७६०—६६६)पुत्र शि०छ०।

अरन लेखकोंने बलहारोंको, चालुक्यों (५००—७५३)को व राष्ट्र-कूटों (७५३—९७२)—को जो पूर्व दक्षिणमें मालखेडमे राज्य करते थे—स्वीकार किया है।

प्रोफेसर भडारकर (D ccan history 565) कहते हैं कि पूर्वके कई चालुक्य व राष्ट्रकूट राजा वल्लभ कहलाते थे और वल्हारोंके सम्बन्धमे लिखा है कि वे कर्णाटकमें राज्य करते थे, उनकी कनडी राज्यधानी मानकिर या मानखेडपर थी जो समुद्र तटसे ६४०मील है। जैनियोंके लेख बताते हैं कि मेवाडके गोहिल या सेशोदिया लोग काठियावाडकी वाल या वल्लभीसे आए थे तथा अनहिलवाडामे (सन् ७४६) उन्होंने अपने गुजरात राज्यका मुख्य

स्थान बनाया। तथा इनही गोहिल लोगोंने मेवाड़में वल्लीनगर बसाया जहां ये सन् ९६८ तक राज्य करते रहे, जिनकी उपाधि सेसोदिया सर्दार वल्लभी शिलादित्य रही। सेसोदिया लोग अपना नाम गोहेलाट होनेसे अपनी उत्पत्ति गुफामें उत्पन्न गुहसे बताते हैं। शायद यह गुहसेन (५५९–५६७)से उत्पन्न हो।

अरबलोग कहते हैं कि वल्लभीकी एक शाखा बलेहमें उस समय तक राज्य करती रही जबतक सन् ९९० में मूलराज सोलंकीने उसको जीत न लिया।

याला लोगोंका पुराना राज्यस्थान जूनागढ़से दक्षिण पश्चिम ९ मील वंथली था। सेसोदिया या गोहिला लोग कहते हैं कि थालोका संस्थापक कनकसेन सन् १९०मे उत्तर भारतसे आया और धोलका तथा धाकमें बश गया।

चालुक्यवंश (६३४–७४०)–चालुक्योंने दक्षिणसे आकर गुजरातको विजय किया था। पहले इन्होंने पुरी अर्थात् राजपुरी, या जंजीरा या एलीफैन्टाके कोकण मौर्योको जीता था।

पांचवीं सदीमें प्रसिद्ध बाड राजा सुकेतुवर्मनके राज्यसे प्रमाणित है कि यह मौर्यवश कोंकणमें राज्य कर रहा था। पीछे कीर्तिवर्मनके अधिकारमें चालुक्योंने इनको हराया था। उनकी अंतिम विजय पुलकेशी द्वि० (सन् ६१०–६४०) के अधिकारी चंड दंडने की थी और उनकी राज्यधानी पुरी ले ली थी। (Ind Ant. VIII 243-4) फिर येही चालुक्य उत्तरकी तरफ बढ़ते गए। दक्षिण बीजापुरके रोहोलीके शिलालेखसे प्रगट है कि सन्

ई० ६२४ तक लाड़, मालवा, और गुर्जरके राजा पुलकेशी द्वि०
के आधीन हो गए थे।

दक्षिण गुजरातमें चालुक्य राज्यकी बराबर स्थिति पुलकेशी द्वि० के पुत्र धाराश्रय जयसिंह वर्मनने -जो विक्रमादित्य सत्याश्रय (६७०–६८०) का छोटा भाई था—की थी। नौसारीमें जयसिंह वर्मनके पुत्र शिलादित्यके दानका लेख मिला है जिसमें लिखा है कि जयसिंह वर्मनने अपने भाईसे राज्य पाया।

(१) जयसिंह वर्मन परम भट्टारक (६६६–६९३)–यह स्वतंत्र राजा था। इसके पांच पुत्र नौसारीमें राज्य करते थे। इसके एक पुत्र श्राश्रयने एक दान किया था जिसका लेख सूरतमें मिला है। इससे प्रगट है कि ६९१में जयसिंह अपने पुत्र युवराजके साथ राज्यकर रहा था।

(२) मंगलराज–पुत्र जयसिंहका (६९८–७३१)

(३) पुलकेशी जनाश्रय–मंगलराजका छोटा भाई सूरतमें विनयदित्य मंगलराज (७३१–७३८) व नौसारीमें पुलकेशी जनाश्रय (सन् ७३८) के लेख मिले हैं।

पुलकेशी जनाश्रयके समयमें अरब खलीफा हासमने हमला कर नष्ट दिया था।

इस वंशका नाश राष्ट्रकूटवंशकी गुजरात शाखाने किया जो सन् ७५७–९८में गुजरातमें राज्य कर रही थी। जयसिंहके पुत्र बुद्धवर्मनने खेरामें व तीसरे पुत्र नागवर्द्धनने पश्चिम नासिकमें राज्य किया।

गुर्जरवंश-(५८०-८०८) वल्लभी और चालुक्य वंशका जब महत्व गुजरातमें था तब एक छोटा गुर्जर राज्य भरुचके पास राज्य करता था। संस्कृतके ९ ताम्रपत्र मिले हैं Ind. Ant. V. VII. XIII. XVII). इनकी राज्यधानी नान्दीपुरी या नांदोद थी जो राजपीपला राज्यमें है। भरुचसे पूर्व ३९ मील। इनकी उपाधि " समधिगत पंचमहाशब्द " थी अर्थात् जिन्होंने पांच पद प्राप्त किये थे।

इनका राज्यवंश।

(१) दद्दा प्रथम-(सन् ५८०-६०५)
(२) जयभट्ट प्रथम-(६०५-६२०)
(३) दद्दा द्वि०-(६२०-६५०)
(४) जयभट्ट द्वि०-(६५०-६७५)
(५) दद्दा तृ०-(६७५-७००)
(६) जयभट्ट तृ०-(७०४-७३४)

खेडाके दान पात्रोंमें दद्दा प्रथमके पुत्र जयभट्ट प्रथमको विजयी और धर्मात्मा राजा लिखा है तथा उसकी उपाधिमें वीतराग शब्द है। उसके पुत्र दद्दा द्वि० की उपाधि प्रशांतराग थी इसने दो दान किये थे। (Ind. Ant. XIII). इन दानोंमें है कि जंबूसर और भरुचके कुछ ब्राह्मणोंको अकुरेश्वर (अंकलेश्वर) तालुकामें सिरोशपद्रक (या सिसोद्रा) ग्राम दान किया गया था।

७०४-५के दानपत्र (Ind. Ant VIII) में दद्दाके सम्बन्धमें लिखा है कि उसने वल्लभीके राजाकी रक्षा की थी जिसको प्रसिद्ध हर्षदेवने हरा दिया था। यह वही हर्ष है जो कन्नो-

जमें ६०७—८ में राज्य करता था। पुलकेशी द्वि०ने सन् ६३४ में नर्मदापर हर्षको विजय किया था। दद्दा तृ०को बाहुसहाय कहते थे। जयभट्ट तृ० को महासामंताधिपति कहते थे। इसके समयमें अरब लोगोंने हमला किया था जिसको नौसारीपर युद्ध करके पुलकेशी जनाश्रयने परास्त किया था। ७३४ के पीछे इनका पता नहीं चलता है।

(सं० नोट) इस वंशके राजाओंकी वीतराग आदिकी उपाधिसे अनुमान होता है कि शायद इस वंशके राजा जैनी हों।

राष्ट्रकूटवंश—गुजरातमें ये लोग दक्षिणसे सन् ७४३में आए। ये अपनेको चंद्रवंशी या यदुवंशी कहते हैं। इनका मुख्यस्थान मान्यखेड (मलखेड) है जो शोलापुरसे दक्षिण पूर्व ९० मील है।

इनका सबसे प्राचीन शिलालेख सन् ४९०का मिला है, जिस समय राजा अभिमन्यु राज्य करते हैं उसमें चार राजा दिये हुए हैं।

मानान्केर
|
देवराज
|
भविष्य
|
अभिमन्यु

राष्ट्रकूट वंशका वृक्ष सन् ६३० से इस भांति है—

(१) इन्द्र
(२) कर्क ८१२
(३) गोविन्द–प्रभूतवर्ष ८२७
दंतिवर्मन
(४) ध्रुव, धारावर्ष, निरुपम ८३५
(५) अकाल वर्ष–शुभतुंग ८६७
(६) ध्रुव द्वि० ८७१
(७) अकाल वर्ष–कृष्ण ८८८
(१०) गोविन्द तृ०
(११) अमोघवर्ष, सार्वदुर्लभ, श्री वल्लभ, लक्ष्मीवल्लभ व वल्लभस्कंध
शाका ७७३–७९९
सन् ८१५–८७७
(१२) अकालवर्ष कृष्ण, कन्नर
जगतुंग (राज्य न किया)
(१३) इन्द्र तृ० पृथ्वीवल्लभ, रत्तकंदर्प्प, कीर्तिनारायण नित्यवर्ष, सन् ९१४
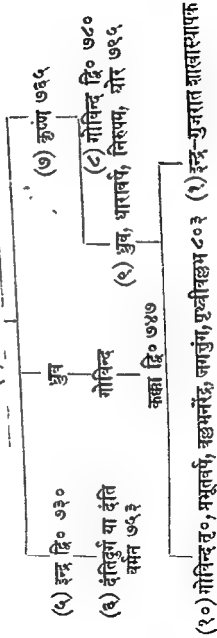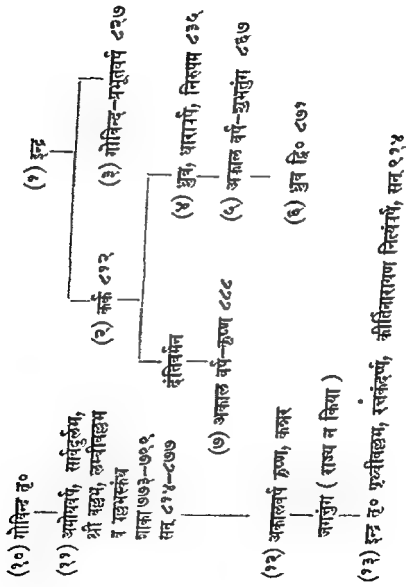
(१३) इन्द्र तृ०
(१४) अमोघवर्ष शा० ८४०
सन् ९१८
(१५) गोविंदराज–साहसांक सुवर्णवर्ष
(१६) वद्दिग
(१७) कृष्ण ९४९–९६६
(१८) कोट्टिग
(१९) निरुपम
(२०) कक्कल या कर्कराज सन् ९७२

नोट—प्रसिद्ध नागवर्मनकी कन्या गोविंदको व्याही थी जिसका पुत्र कक्का द्वि० सन् ७४७में था।

कक्का प्रथमका पोता दन्तिदुर्गा एक बलवान राजा था। उसने माही और नर्मदाके मध्यके गुजरातको विजय किया था व लाट तथा मालवाका भी अधिकारी था।

दक्षिणको लौटते हुए दन्तिदुर्गाके पीछे १०वें राजा गोविंद द्वि० ने गुजरातदेश अपने छोटे भाई इन्द्रको सौंप दिया। जनमे गुजरातकी शाखा प्रारंभ हुई।

इन्द्रको लाटेश्वर भी कहते थे इसने ८०८ से ८१२ तक फिर कर्क प्र० ने ८१२ से ८२१ तक राज्य किया था। इसको सुवर्णवर्ष तथा पातालमल्ल भी कहते थे।

कर्कका सूरतका दानपत्र सन् ८२१का मिला है, जिससे प्रगट है कि कर्कने अंकिक नदी (बलसरके पास वाकी) के तटपर अपने राज्यस्थानसे नौसारीके एक जैन मंदिरको नागसारिकके पास अम्बापातक ग्राम भेट किया। इस दानपत्रका लेखक युद्ध और शांतिका मंत्री नारायण है जो दुर्गाभट्टका पुत्र है। ताप्ती नदीके दक्षिण यह पहला ही भूमिदान है जो गुजरात राष्ट्रकूट राजाने किया था। इससे यह पता चलता है कि राजा अमोघवर्षने कर्कके राज्यमें उत्तर कोंकणका भाग दे दिया था जो अब ताप्तीके दक्षिण गुजरात कहलाता है। शाका ८३२ व सन् ९१०के ताम्र पत्रमें प्रगट है कि वल्लभ अर्थात् अमोघवर्ष या प्रसिद्ध महाराजाने एक सेना भेजकर वधिक (वम्बई और खंभातका तट) को घेर लिया। इस युद्धमें ध्रुव जख्मी होकर मर गया। कन्हेरी गुफाका लेख भी

कहता है कि अमोघवर्ष शाका ७९९ व सन् ८७७में जीवित था।

ध्रुवके पीछे उसके पुत्र अकालवर्षने राज्य किया। जिसका नाम शुभतुंग भी था फिर उसके पुत्र ध्रुवद्वि०ने फिर दंतिवर्मनके पुत्र अकालवर्ष, कृष्णने राज्य किया। इसी समय मान्यखेडमें राष्ट्रकूट अमोघवर्ष राज्य कर रहे थे जिन्होंने ६३ वर्ष राज्य किया। अब गुजरात राष्ट्रकूट वंश समाप्त हुआ, परंतु मान्यखेडके मुख्य वंश राष्ट्रकूटने फिर सन् ९१४मे दक्षिण गुजरातमें आधिपत्य जमाया। जैसा नौसारीके दो ताम्रपत्रोंसे प्रगट है। जिसमें यह कथन है कि कृष्ण अकालवर्षके पोते व जगतुंगके पुत्र राजा नित्यवर्ष इन्द्रने लाड़ देशमें नौसारीके पास कुछ ग्राम दान किये। (B. R. A. S. XVIII 253)

मान्यखेडके अमोघवर्षके पीछे अकालवर्षने ८८८ से ९१४ तक राज्य किया। मालूम होता है कि इस दक्षिणी कृष्णने गुजरातको लेलिया था, क्योंकि इस समयसे दक्षिण गुजरातको जो लाडके नामसे कहलाता था दक्षिण राष्ट्रकूटमें सदाके लिये शामिल कर लिया गया। शाका ८३२ का कपडवंजका एक दानपत्र मिला है (Ep Ind I 52) जिसमे लेख है कि महा सामंत कृष्ण अकालवर्ष प्रचंडके सेनापति चंद्रगुप्तके अधिकारमें प्रांतिजके पास हर्षपुर या हर्सोल पर खेडा जिलेमें ७५० ग्राम थे।

सन् ९७२मे गुजरात पश्चिमी चालुक्य राजा तैलप्पाके अधिकारमें चला गया जिसने वारप्पा या द्वारप्पाको सौंप दिया था। इसका युद्ध सोलंकी मूलराज अनहिलवाडा (९६१–९९७) के साथ हुआ था।

अनहिलवाड़ा राज्य–७२० से १३०० तक। इसका वर्णन नीचे लिखे ग्रन्थोंके आधारपर इस गज़टियरमें लिखा है।

हेमचंद्र कृत द्वाश्रयकाव्य, मेरुतुंग कृत प्रबन्धचिंतामणि और विचारश्रेणी, जिनप्रभसूरिकृत तीर्थकल्प, जिनमंडनोपाध्यायकृत कुमारपाल चरित्र, कृष्णर्षिकृत कुमारपाल चरित्र, कृष्णभट्टकृत रत्नमाला, सोमेश्वरकृत कीर्तिकौमुदी, अरिसिंहकृत सुकृतसंकीर्तन, राजेश्वरकृत चतुर्विंशति प्रबन्ध, वस्तुपाल चरित्र।

चावड़वंश–सन् ७२० से ९६१ तक। अनहिलवाड़ाकी स्थापनाके पहले चावड़ सर्दार पंचासेर ग्राममें राज्य करते थे, जो गुजरात और कच्छके मध्य वधियारमें एक ग्राम है। सन् ६९६में जयशेखर चावड़को कल्याणकटकके चालुक्य राजा भुवड़ने मार डाला। उसकी स्त्री रूपसुंदरी गर्भस्था थी। उसीका पुत्र वनराज था जिसने अनहिल्वाड़ाको स्थापित किया। पंचासेरको अरब लोगोंने ७२०में नष्ट किया। प्रबन्ध चिंतामणिमें लिखा है कि गर्भस्था रूपसुंदरी वनमें रहती थी। वहां उसने एक पुत्रको जन्म दिया तब एक जैन यति (नोट–श्वे० मालूम होते हैं।) शील-गुणसूरिने उसकी माताने पुत्र लेकर एक आर्यिका वीरमतीको पालनेके लिये दिया। साधुने उसका नाम वनराज रक्खा। इसके मामा सूरपालने इसे बड़ा किया। इसने अनहिल्वाड़ा बसाया। सन् ७४६ से ७८० तक राज्य किया। इसकी आयु १०९ वर्षकी थी। इस वनराजने अनहिल्वाड़ामें पंचासर पार्श्वनाथका जैन मंदिर बनवाया जिसमें मूर्ति पंचासरसे लाकर विराजमान की। इसी मूर्तिके सामने वनराजने नमन करते हुए अपनी मूर्ति

स्थापित की जो अब सिद्धपुरमें है। इसका चित्र रासमालामें दिया हुआ है। इस मंदिरका वर्णन सोलंकी और वाघेलके समयमें भी मिलता है। चावड़ राजा हुए।

(१) वनराज ७८० तक २६ वर्षका पता नहीं फिर भाई
(२) योगराज ८०६ से ८४१, फिर इसका पुत्र
(३) क्षेमराज ८४१ से ८८०, फिर इसका पुत्र
(४) चामुंड ८८० से ९०८, फिर इसका पुत्र
(५) घघड़ ९०८ से ९३७
(६) नाम अप्रगट ९३७ से ९६१ तक।

चालुक्य या सोलंकी—(९६४ से १२४२ तक) चावड़ोंके पीछे सोलंकियोंने राज्य किया। ये लोग जैनधर्म पालते थे इसीसे जैन लेखकोंने इनका वर्णन अच्छी तरह लिखा है। सोलंकियोंके सम्बन्धमें सबसे प्रथम लेखक श्री हेमचन्द्र आचार्य (श्वे० सन् १०८९–११७३) है। इन्होंने अपने द्वाश्रय काव्यमें सिद्धराज (११४३) तक वर्णन दिया है। इस काव्यको हेमचन्द्रने सन्•११६० में शुरू किया था, परन्तु इसकी समाप्ति अभय तिलकगणि (श्वे० साधु) ने १२५५में की थी Ind Ant: IV. 710 VI 130). अंतिम अध्यायमें केवल राजा कुमारपालका वर्णन है। अंतिम चावड़ा राजा भूभत हुआ था। उसके पीछे चावडा राजाकी कन्याके पुत्र मूलराजने राज्य किया।

(१) मूलराज (९६१–९९६) भूभतकी बहनका तथा महाराजाधिराज राजी चालुक्यका पुत्र था। बहुत जैन लेखकोंने अनहिलवाडाका इतिहास मूलराजसे प्रारंभ किया है। यह सोलंकी

वशका गौरव था। इसने अपना राज्य काठियावाड और कच्छ पर बढाया था। दक्षिण गुजरात या लाडके राजा बारप्पासे तथा अजमेरके राजा विग्रहराजसे युद्ध किया था। अजमेरके राजाओंको सपादलक्ष कहते थे। अजमेरका नाम मेहर लोगोंसे पडा है जिन्होंने ९वीं व ८ठी शताब्दीके मध्यमें वहा राज्य किया था। हम्मीरकाव्यमें प्रथम अजमेरका राजा चौहान वासुदेव सन् ७८०में था। इससे चौथा राजा अजयपाल (११७४–११७७) व १० वा विग्रह राज था।

मूलराजने अनहिल्वाडामें एक जैनमंदिर बनवाया जिसको मूलवस्तिका कहते हैं। इसने कुछ शिवमंदिर भी बनवाए थे। मूलराजने अपना बहुतसा समय सिद्धपुरके पवित्र मंदिरमें बिताया था जो अनहिल्वाडासे उत्तरपूर्व १९ मील है।

(२) चामुड–मूलराजका पुत्र (सन् ९९७–१०१०) दूसरा राजा हुआ। यह यात्रा करने बनारसकी तरफ गया था। मार्गमें माल्वाके राजा मुजने युद्ध किया (सन् १०११) और इसका छत्र लेलिया तब यह छत्ररहित साधारण त्यागीके रूपमे यात्राको गया। मुजके पीछे माल्वामें राजा भोजने (सन् १०१४) तक राज्य किया।

(३) दुर्लभ–(१०१०–१०२२) चामुडका पुत्र इसको जगत झपक भी कहते थे। इसने दुर्लभ सरोवर बनवाया था।

(४) भीम प्रथम–(सन् १०२२–१०६४) यह दुर्लभका भतीजा था। यह बहुत बलवान था। भीमने सिंघ और चेदी या बुन्देलखण्डके राजापर हमला किया। उसी समय माल्वाके राजा भोजके सेनापति कुलचन्द्रने अनहिल्वाडापर हमला किया और

जय प्राप्त की (देखो भिलसाके पास उदयपुरके मदिरमे एक लेख राजा भोजके पीछे उदयादित्य राजाका), परन्तु भीम राज्य करता रहा। १०२४ में महमूद गजनीने सोमनाथ महादेवके मदिरपर हमला किया। यह मदिर वल्लभी लोगोंने बनवाया था (सन् ४८०) इसमें मूलराजने भी धन दिया था। इस मदिरके लकडीके ५६ खभे थे। महमूदने ५०००० हिन्दू मारे व २० लाख दीनार द्रव्य लूटा। महमूदके जानेके पीछे भीमने फिरसे सोमनाथके मदिरको पाषाणका बनवा दिया। कुछ वर्ष पीछे आबूके सर्दार परमार धन्धुकासे भीमकी अनबन हो गई तब उसने अपने सेनापति विमलको उसे वश करनेको भेजा। धन्धुका वशमें हो गया, इसने आबूकी चित्रकूट पहाडी विमलको दे दी, जहा विमलशाहने प्रसिद्ध जैनमदिर बनवाया जिसको विमलवसही कहते है।

(५) कर्ण–(१०६४–१०९४) यह भीमका पुत्र था इस राजाके तीन मत्री थे। मुंजाल, सांतु और उदय। उदय मारवाडके श्रीमाली बनिये थे। सातुने सांतुवसही नामका जैनमंदिर बनवाया था।

उदयने कर्णद्वारा स्थापित करुणावती (वर्तमान अमदावाद)में उदयवराह नामका जैनमंदिर बनवाकर उसमें ७२ मूर्तियें तीर्थंकरोंकी स्थापित की थीं। उदयके पाच पुत्र थे–आहड, चाहड, वाहड, अमड और सोल्ला। पहले चारने कुमारपाल राजाकी सेवा की। सोल्ला व्यापारी हो गया था।

(६) सिद्धराज जयसिंह–कर्णका पुत्र।(१०९४–११४३) मुजाल और सातु मत्री इसके भी रहे।

वंशका गौरव था। इसने अपना राज्य काठियावाड़ और कच्छ पर बढ़ाया था। दक्षिण गुजरात या लाड़के राजा बारप्पासे तथा अजमेरके राजा विग्रहराजसे युद्ध किया था। अजमेरके राजाओंको सपादलक्ष कहते थे। अजमेरका नाम मेहर लोगोंसे पड़ा है जिन्होंने ५वीं व ६ठी शताब्दीके मध्यमें वहां राज्य किया था। हम्मीरकाव्यमें प्रथम अजमेरका राजा चौहान वासुदेव सन् ७८०में था। इसमें चौथा राजा अजयपाल (११७४–११७७) व १० वां विग्रह राज था।

मूलराजने अनहिल्वाड़ामें एक जैनमंदिर बनवाया जिसको मूलवस्तिका कहते हैं। इसने कुछ शिवमंदिर भी बनवाए थे। मूलराजने अपना बहुतसा समय सिद्धपुरके पवित्र मंदिरमें विताया था जो अनहिलवाड़ासे उत्तरपूर्व १९ मील है।

(२) चामुंड–मूलराजका पुत्र (सन् ९९७–१०१०) दूसरा राजा हुआ। यह यात्रा करने बनारसकी तरफ गया था। मार्गमें मालवाके राजा मुंजने युद्ध किया (सन् १०११) और इसका छत्र लेलिया तब यह छत्ररहित साधारण त्यागीके रूपमें यात्राको गया। मुंजके पीछे मालवामें राजा भोजने (सन् १०१४) तक राज्य किया।

(३) दुर्लभ–(१०१०–१०२२) चामुडका पुत्र इसको जगत झपक भी कहते थे। इसने दुर्लभ सरोवर बनवाया था।

(४) भीम प्रथम–(सन् १०२२–१०६४) यह दुर्लभका भतीजा था। यह बहुत बलवान था। भीमने सिंध और चेदी या बुन्देलखण्डके राजापर हमला किया। उसी समय मालवाके राजा भोजके सेनापति कुलचन्द्रने अनहिलवाड़ापर हमला किया और

जय प्राप्त की (देखो भिलसाके पास उदयपुरके मंदिरमें एक लेख राजा भोजके पीछे उदयादित्य राजाका), परन्तु भीम राज्य करता रहा। १०२४ में महमूद गजनीने सोमनाथ महादेवके मंदिरपर हमला किया। यह मंदिर वल्लभी लोगोंने बनवाया था (सन् ४८०) इसमें मूलराजने भी धन दिया था। इस मंदिरके लकड़ीके ९६ खंभे थे। महमूदने ५०००० हिन्दू मारे व २० लाख दीनार द्रव्य लूटा। महमूदके जानेके पीछे भीमने फिरसे सोमनाथके मंदिरको पाषाणका बनवा दिया। कुछ वर्ष पीछे आबूके सर्दार परमार धन्धुकासे भीमकी अनबन हो गई तब उसने अपने सेनापति विमलको उसे वश करनेको भेजा। धन्धुका वशमें हो गया, इसने आबूकी चित्रकूट पहाडी विमलको दे दी, जहां विमलशाहने प्रसिद्ध जैनमंदिर बनवाया जिसको विमलवसही कहते हैं।

(५) कर्ण-(१०६४-१०९४) यह भीमका पुत्र था इस राजाके तीन मंत्री थे। मुंजाल, सांतु और उदय। उदय मारवाडके श्रीमाली बनिये थे। सांतुने सांतुवसही नामका जैनमंदिर बनवाया था।

उदयने कर्णद्वारा स्थापित करुणावती (वर्तमान अमदाबाद)में उदयवराह नामका जैनमंदिर बनवाकर उसमें ७२ मूर्तियें तीर्थंकरोंकी स्थापित की थीं। उदयके पांच पुत्र थे-आहड, चाहड, वाहड, अनड और सोल्ला। पहले चारने कुमारपाल राजाकी सेवा की। सोल्ला व्यापारी हो गया था।

(६) सिद्धराज जयसिंह-कर्णका पुत्र।(१०९४-११४३) मुंजाल और सांतु मंत्री इसके भी रहे।

इसके एक दूसरे मत्रीने सिद्धपुरमें प्रसिद्ध जैन मंदिर महाराज भुवन बनवाया उसी समय सिद्धराजने रुद्रमालारा मदिर सिद्धपुरमें बनवाया। इसको सधारो जैसिंह कहते थे। यह बडा बलवान, धार्मिक व दानी था, सोमनाथ महादेवका भी भक्त था। यह मत्र शास्त्र जानता था इसलिये इसको सिद्ध चक्रवर्ती कहते थे। इसने वर्द्धमानपुर (वधवान) आकर सौराष्ट्र राजा नोग्रनको विजय किया तथा सोरठदेश लेकर सज्जनको अधिकारी नियत किया (देखो गिरनार लेख सम्वत ११७६)। सज्जनने श्री गिरनारमें नेमिनाथजीका जैन मदिर बनवाया (लेख सन् ११२०)। सिद्धराज जैनधर्मका भी भक्त था। यह ब्राह्मणोंके भयसे भेष बदलकर श्री सेत्रुंजयकी यात्राको भी गया था, वहा श्री आदिनाथजीको भेट १२ ग्राम किये थे।

सिद्धराजने सिंह सवत चलाया था जो सन् १११३से प्रभास और दक्षिण काठियावाडके लेखोंमें है। उस समय मालवाका राजा नववर्मन परमार था (११०४—११३३) और उसका पुत्र युवराज यशोवर्मन (११३३) था। सिद्धराज १२ वर्ष तक मालवाके राजासे लडा। अतिम विजय सन् ११३४में सिद्धराजने पाई तबसे इसरा नाम अवन्तिनाथ प्रसिद्ध हुआ। (Ind. Ant VI 194) दूसरा युद्ध महोबाके चदेलराजा मदनवर्मनसे हुआ, उसमे सिद्धराजने भेट पाकर सन्धि करली। जैनलेखक इसको जैनधर्मी लिखते हैं, परतु इसकी भक्ति महादेवमें भी थी। इसने सिद्धपुरमें रुद्रमहालय बनवाया तथा पाटनमें सहस्रलिंग नामकी झील बनवाई थी। इसी सिद्धराजके समयमें श्वे० जैनाचार्य हेमचंद्र प्रसिद्ध हुए थे।

यह बड़े विद्वान् थे। राजा इनका बहुत सन्मान करता था। इनकी बहुत प्रसिद्धि राजा कुमारपालके समयमें हुई थी।

इस समय धारके राजा भोजकी विद्वन्मान्यता बहुत प्रसिद्ध थी। उसकी सभामें पंडितगण बैठते थे। राजा भोजका एक संस्कृत विद्यालय धारमें था, जिसके खंभे धारकी मसजिदमें हैं। इनमें संस्कृत प्राकृत व्याकरणके ४००० सूत्र खुदे हुए हैं। इसी कारण और राजाओंने भी विद्याकी मान्यता की थी गुजरात, सांभर व अन्य प्रांतोंके राजा भी विद्वानोंकी कदर करते थे। अजमेरमें जो अढ़ाई दिनका झोपड़ा है वह भी संस्कृत विद्यालय था-उसके पाषाणोंपर पूर्ण नाटक अंकित मिला है। सिद्धराजके एक कवि श्रीपालने सहश्रलिंग झीलपर एक प्रशस्ति लिखी है। इसी समय हेमचंद्राचार्यने सिद्धहेम व्याकरण और द्वाश्रय काव्य लिखा।

दिगम्बर श्वेताम्बर वाद सभा-राजा सिद्धराजने एक वाद सभा बुलाई थी। करणाटकके एक दिगम्बर जैनाचार्य कुमुदचंद्र करणावती या अहमदावादमें आए थे। तब श्वेताम्बर जैन आचार्य देवसूरि अरिष्टनेमिके जैन मंदिरमें रहते थे। दोनोंकी वार्तालाप हुई फिर दिगम्बर जैन साधु अनहिलवाड़पाटन नग्नावस्थामें आए। सिद्धराजने उनका बहुत सन्मान किया क्योंकि वे उसकी माताके देशसे पधारे थे। सिद्धराजने हेमचंद्रसे कहा कि आप वाद करें। हेमचंद्रने कहा कि देवसूरिको वादके लिये बुलाना चाहिये। देवसूरि और कुमुदचंद्रका वाद सभामें हुआ। दिगंबरोंकी तरफसे कहा गया था कि स्त्री निर्वाण नहीं पासक्ती तथा वस्त्र सहित जैन निर्वाण नहीं पासक्ता। ये दोनों बातें राजाके श्वे०

जैन मंत्रियोंको मान्य न थीं इस लिये वाद होते होते ब्राह्मणोंकी सभाओंके समान हुल्लड मच गया तब सिद्धराजने शांति कराई। श्वे० लेखक कहते हैं कि देवसूरिने विजय प्राप्त की। देवसूरी हेमचंद्रका गुरु था। सिद्धराजके कोई पुत्र न था। भीमदेव प्रथमका पड़पोता त्रिभुवनपाल सिद्धराजके नीचे दहिलथीमें अधिकारी था। उसकी स्त्री काश्मीरदेवी थी जिससे तीन पुत्र महीपाल, कीर्तिपाल और कुमारपाल और दो कन्याएं प्रेमलदेवी और देवलदेवी हुए। ज्योतिषशास्त्रसे जानकर कि कुमारपाल राजा होगा सिद्धराज उससे असंतुष्ट हो गया। तब कुमारपाल भाग गया। एक मित्रके साथ कुमारपाल खंभात गया वहां हेमचंद्राचार्यसे मिला— हेमने कहा कि तू अवश्य राजा होगा। कुमारपालने आचार्यकी शिक्षाके अनुसार चलना स्वीकार किया। यहांसे कुमारपाल वटपद्रपुर (वडौधा) आया और एक बनियेसे मिला जिसका नाम कतक था, कहते हैं इसने भुने हुए चने खिलाकर कुमारपालका सन्मान किया। यहांसे वह भृगुकच्छ या भरोंच गया फिर उज्जैन आकर अपने कुटुम्बसे मिला, वहांसे वह कोल्हापुर भाग गया। वहांसे कांची या कन्जीवरम् गया। वहांसे पाल्मपाटन गया। वहांके राजा प्रतापसिंहने उसे बड़े भाईके समान रक्खा और उसके सन्मानमें एक मंदिर बनवाया। नाम रक्खा “ शिवानन्द कुमारपालेश्वर ” तथा सिक्केमें कुमारपालका नाम खुदवाया। यहांसे वह चित्रकूट (चित्तौर) आया फिर उज्जैन आया। यहांसे वह अपना कुटुम्ब लेकर सिद्धपुर आकर अनहिलवाड़ा आया व अपने साले कृष्णदेवसे मिला।

उसी समय सिद्धराजका मरण सन् ११४३में हो गया तब मंत्रियोंने कुमारपालको राजा उसकी ५० वर्षकी उम्रमें बना दिया।

(७) कुमारपाल (सन् ११४३–११७४) इसकी पटरानी भूपालदेवी थी। कुमारपालने उदयनको मंत्री, उदयनके पुत्र बाहड़को महामात्य व जिस बनियेंने चने दिये थे उस कतकको बडौधा ग्रामका राज्य दिया। जो मित्र कुमारपालके साथ गया था उस वोसरीको लाट मंडलका राज्य दिया। सांभरके राजा आनाकसे युद्ध हुआ। कुमारपालने विजय पाई। उसने मालवाके राजा वल्लालको भी हरा दिया। कोंकणके राजा मल्लिकार्जुन पर भी इनने विजय पाई। अंबड सेनापतिके इस कार्यमे प्रसन्न हो कुमारपालने उसे राजपितामहका पद दिया। सौराष्ट्रके राजा सुमीरसे भी युद्ध हुआ। उदयन मंत्रीने युद्धकर विजय पाई। उदयन पालीतानामे यात्राको आया। जब वह दर्शन करता था एक चूहेने दीपककी बत्तीसे लकड़ीके मंदिरमें अग्नि लगादी तब उसने इरादा करलिया कि इसको पाषाणका बना देंगे। एक युद्धके युद्धमें जैन मंत्री उदयन घायल हो गया और वह सन ११४९में मरा। तब वह अपने पुत्रोंको कह गया था कि सेत्रुंजयपर आदीश्वर मंदिर, भरुचमें मनुनिका विहार तथा गिरनारकी पश्चिम ओर सीढ़ियां बनवाना। तदनुसार उसके दोनों पुत्र बाहड़ और अम्बड़ने मंदिरादि बनवा दिये। जब सुनुनिका विहारमें श्री मुनिसुव्रतनाथकी प्रतिष्ठा हुई तब राजा कुमारपाल अपनी सभामंडली सहित पधारे थे। हेमचन्द्राचार्य भी मौजूद थे। गिरनारमें सीढ़ियां भी बनी गई थी ऐसा सन ११६६के लेखसे प्रगट है।

इसमें ६३ लाख द्रम्मा खर्च हुए थे, (द्रम्मा= ।-) सेत्रुन्जयपर आदीश्वर मंदिर सन् ११५६में बनवाया गया था। वाहडने सेत्रुंजयके पास वाहड़पुर नामका नगर बसाया और त्रिभुवनपाल नामका जैनमंदिर बनवाया (यह पालीतानाके पूर्व) है।

कुमारपालने पद्मपुरकी पद्मावतीसे विवाहा था व साभर और मालवाके राजाओंको जीता था।

सोमनाथके मंदिरका भी जीर्णोद्धार किया था। खंभात या स्तंभतीर्थमें सागलवसहिकके जैन मंदिरका भी जीर्णोद्धार कराया था जहां हेमचन्द्राचार्यने दीक्षा धारण की थी। इसने पाटनमें करम्बिक विहार, भूपालविहार नामके मंदिर बनवाए तथा हेमचंद्रके जन्मस्थान धंधुकमें झोलिकाविहार बनवाया। इसके सिवाय कहते हैं कि इसने १४४४ मंदिर बनवाए।

इसकी सभामें रामचंद्र और उदयचंद्र दो जैन पंडित रहते थे। रामचन्द्रने प्रबन्धशतक बनाया था। हेमचंद्र चाचिग नामके मोढ़ बनिया व पाहिनी माताका पुत्र सन् १०८९में पैदा हुआ था। सिद्धराजके राज्यमें इसने सिद्ध हेम व्याकरण, देशनाममाला व अनेकार्थ नाममाला रचे। तथा द्वाश्रयकोषका प्रारंभ किया। हेमचन्द्राचार्यकी सम्मतिसे कुमारपालने श्री शांतिनाथकी मूर्ति राजमहलमें स्थापित की थी। यह मांस मद्य नहीं लेता था। इसने अपने राज्यमें शिकार खेलने व पशुबलिकी मनाई कर दी थी। इसने शिकारियोंसे शिकार छुड़ाकर दूसरे कामोंमें लगा दिया था इसकी सेनाके सब पशुओंको छना हुआ पानी दिया जाता था। जो बिना पुत्र मरता था उसकी जायदाद पर भी इसने दावा छोड़

छोड दिया था। कुमारपालके समयमें हेमचन्द्राचार्यने नीचे लिखे ग्रथ लिखे–(१) आध्यात्मोपनिषद या योगशास्त्र १२००० श्लोक–१२ अध्यायमें, (२) त्रिशष्ठि शलाका पुरुषचरित्र परिशिष्ट पर्व ३५०० श्लोक, (३) श्री महावीरके पीछे स्थविर जीवनचरित्र, (४) प्राकृत शब्दानुशासन, (५) द्वाश्रय प्राकृतकाव्य, (६) छन्दोनुशासन ६००० श्लोक, (७) लिंगानुशासन, (८) प्राकृत देशी नाममाला, (९) अलकार चूडामणि। हेमचन्द्राचार्य ८४ वर्षकी आयुमें सन् ११७२मे स्वर्ग प्राप्त हुए। राजा कुमारपालका मरण सन् ११७४मे हुआ। कुमारपालके कोई पुत्र न था। उसके बाद उसके भाई महीपालका पुत्र अजयपालने राज्य लिया।

(८) अजयपाल–(११७४–११७७) यह जैनधर्मसे द्वेष रखता था।

(९) मूलराज द्वि०–(११७७–११७९) यह अजयपालका पुत्र था।

(१०) भीम द्वि०–(११७९–१२४२) भीमके पीछे वाघेलोंका वंश प्रगट हुआ।

वाघेल वंश–(१२१९–१३०४) वाघेलवंश सोलंकी वंशकी एक शाखा थी जो कुमारपालकी माताकी बहनके पुत्र अर्ण राजा या आणकसे प्रगट हुई।

(१) अर्णराज (११७०–१२००) इसने अनहिलवाड़ाके दक्षिण पश्चिम १० मील वाघेला ग्रामका राज्य पाया था।

(२) लवणप्रसाद (१२००–१२३३) इसका पुत्र वीरधवल था, इनके यहा वस्तुपाल और तेजपाल दो प्रसिद्ध जैन मंत्री थे,

जिन्होंने आबूके प्रसिद्ध जैन मंदिर व शेत्रुंजय तथा गिरनारके जैन मंदिर बनवाये।

(३) वीरधवल–(१२३३ १२३८) इसका मंत्री तेजपाल जैन था। तेजपाल बड़ा वीर था इसने गोधराके सरदार धूघलको कैद कर लिया था। वस्तुपाल जैन भी बड़ा वीर था, इसने दिहलीके सुल्तान मुहम्मद गोरी (११९१ १२०९) की सेनाओंको विजय किया। तथा उससे संधि करली।

अपनी माताकी तथा अपनी स्त्री ललितादेवीकी सम्मतिसे वस्तुपालने श्री आबूजीका श्री नेमिनाथका मंदिर सन् १२३१में, श्री सेत्रुंजयमें श्री पार्श्वनाथजीका तथा गिरनारमें श्री नेमिनाथ जीका मंदिर सन् १२३२में बनवाए। वस्तुपाल सेत्रुंजयकी यात्राको जाता था। मार्गमें प्राणान्त हुआ। तब उसके भाई तेजपाल व उसके पुत्र जयतपालने वस्तुपालके देहकी दाह पहाड़पर की और उसकी यादगारमें स्वर्गारोहण प्रासाद बनवाया।

(४) विशालदेव (१२४३–१२६१)–इसके समयमें वघेलोंका अधिकार गुजरातमें होगया था।

(५) अर्जुनदेव (१२६२–१२७४)–यह विशालदेवके भाई प्रतापमल्लका पुत्र था।

(६) सारंगदेव (१२७५–१२९६) यह अर्जुनदेवका पुत्र था। वस्तुपालके आबूजीके मंदिरमें सन् १२९४का एक शिलालेख है जो प्रगट करता है कि उस समय अनहिलवाड़ पाटनका राजा सारंगदेव था तथा कुछ दान जैन मंदिरोंको किया गया।

(७) कर्णदेव (१२९६–१३०४) इसके समयमें गुजरातको

अलाउद्दीन खिलजीके भाई अलफ्तखांने नशरतखांके साथ १२९७ में ले लिया।

अलफ्तखांने बहुतसे जैन मंदिरोंको तोड़कर अनहिलवाड़ामें मसजिदें बनवाईं।

मुसलमानलोग–(१२९७–१७६०) अहमद प्रथमने सन् १४१३ में वर्तमान अहमदाबाद बसाया व १४१९ में त्रिम्बक-दाससे चांपानेर नगर लेकर ध्वंश किया तथा महमदशाहने पावागढ़को सन् १४८४में लिया।

नोट–आबू पर्वतसे ५० मील पश्चिम भिनमाल–जो ऐतिहासिक श्रीमाल है–छठीसे नौमी शताब्दी तक गुजरातकी राज्यधानी रहा। यहां चार जैन मदिर श्री पार्श्वनाथजीके हैं।

यूनान लोगोंको पश्चिम भारतका ज्ञान था- स्ट्रैबो (सन् ६१ ई० पूर्वसे २२ सन् ई०) लिखता है कि सन् १४में पोरसके पाससे तीन भारतीय एलची भेट लेकर आगष्टस बादशाहके पास आए थे–उनहीके साथ भरुचसे एक जैन श्रमणाचार्य आए थे–इन्होंने अथन्सनगरमें समाधिमरण किया था।

अरब लेखकोंने गुजरातके सम्बन्धमें लिखा है–

अलबिरुनी (सन् १०३०) वल्लभवंशके सम्बन्धमें लिखता है कि अनहिलवाड़ाके दक्षिण ९० मील वल्लभीनगर था जैन लेखक लिखते हैं कि वल्लभीका पतन सन् ८३०में हुआ।

सन् ८५०से १२९० तक जितने गुजरातके शासक हुए हैं उन सबमें जिस वंशका प्रभाव अरबोंपर पड़ा वह मान्यखेड़ या बल्हारवंश है (सन् ६३०से ९७२) अरबोंने राष्ट्रकूटोंकी बहुत

प्रशंसा लिखी है। वे गोविन्द तृ० पृथ्वीमल्ल (८०३-८१४) को वल्लभ तथा उसके पीछे अमोघवर्ष वल्लभस्कंध (८१५-८४४) को परमवल्लभ कहते थे। एक व्यापारी सुलेमान (८१९) ने मान्यखेडके राजाको दुनियांके बड़े राजाओंमें चौथा नं० दिया है। अरबलोगोंने लिखा है—

" The Arabs found the Rastra Kutas kind and liberal rulers, there is ample evidence in their territories property was secure; Theft or robbery was unknown, Commerce was encouraged or Foreignes were treated with consideration and respect The Rastrakutas dominion was Vast, well-peopled, commercial and fertile. The people lived mostly on vegetarian diet, rice, peas, beans etc their daily food, suleman represents the people of Gujrat as steady abestenious, and sober abstaining from wine as well as from vinegar,"

"कि राष्ट्रकूट वंशके राजा बडे दयालु तथा उदार थे। इस बातके बहुत प्रमाण हैं। इनके राज्यमें मालको जोखम न थी, चोरी या लूटका पता न था। व्यापारकी बड़ी उत्तेजना दी जाती थी। परदेशी लोगोंके साथ बडे विचार व सन्मानसे व्यवहार किया जाता था। राष्ट्रकूटोंका राज्य बहुत विशाल था। घनी वस्ती थी। व्यापारसे भरपूर था व उपजाऊ था। लोग अधिकतर शाकाहारपर रहते थे। चावल चना मटर आदि उनका नित्यका भोजन था। सुलेमान लिखता है कि गुजरातके लोग पक्के संयमी थे मदिरा तथा ताड़ी काममें नहीं लेते थे।

सन् १३००के अंतमें रशीउद्दीन वर्णन करता है कि गुजरात बहुत ऐश्वर्य्ययुक्त देश है—जिसमें ८०००० ग्राम हैं। लोग बड़े खुश हैं, पृथ्वी उपजाऊ है। तथा सबसे बड़ी बात जो अरब

लोगोंको पसंद आई वह राजा और प्रजाका उनके मुसल्मानी धर्मकी तरफ माध्यस्थ भाव है। सन् ९१६में आबू जईद लिखता है कि हिन्दू लोगोंमें परदेका रिवाज न था। राजाओंकी रानियांभी स्वतन्त्रतासे दरबारमें आतीं व लोगोसे मिलती थीं। ११ वीं शदीके अंतमें अल्इद्रीसी लिखता है कि भारतवासी बडे न्यायशील हैं–अपने कारोव्यवहारमें नीतिका बहुत ध्यान रखते हैं।

इनकी ईमानदारी, सच्चा विश्वास व सत्यताके कारण ही विदेशी उनके देशमें बहुत संख्यामें आते हैं और वाणिज्यकी उन्नति करते हैं।

अक्षरवार सूची ।